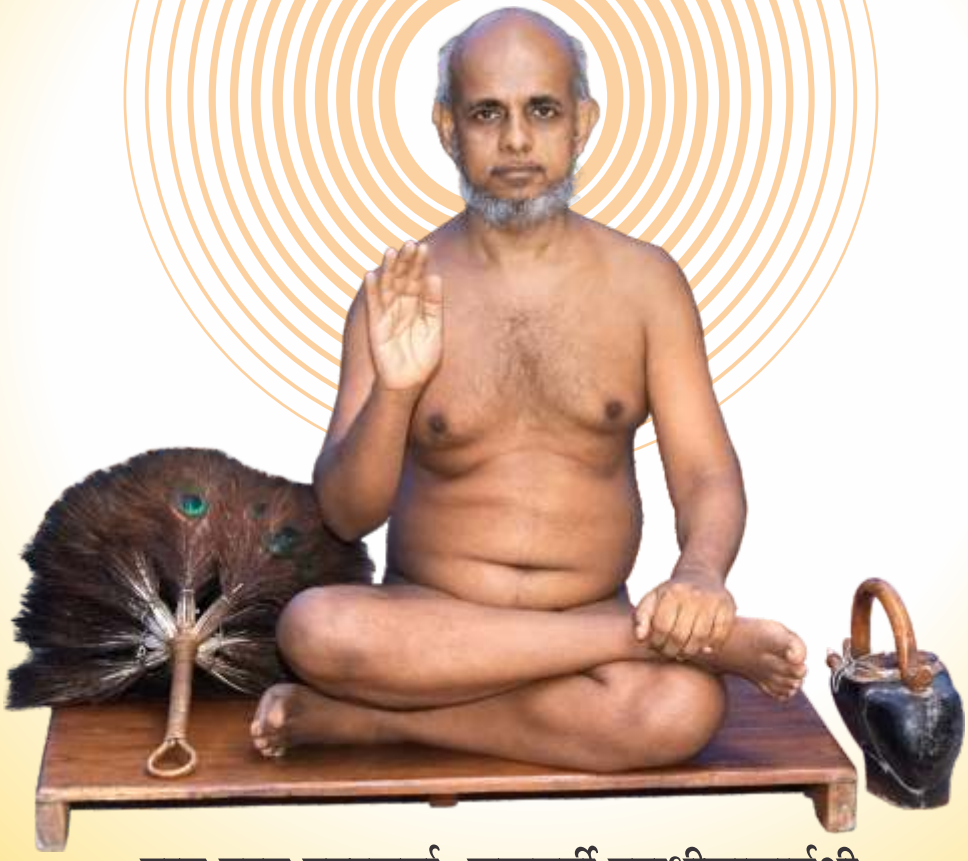

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती पट्टाधीशाचार्यश्री

सुविधिसागर जी महाराज

के

50 वें जन्मदिवस के पावन अवसर पर

सुविधि–परिवार के द्वारा आयोजित

जिनवाणी-महोत्सव

सहस्रग्रन्थसंग्रह

* जन्मदिवस 19–03–1971 * मुनिदीक्षा–11–05–1989 * आचार्यपद– 20–06–2004

पट्टाधीशपद– 24–12–2010 (20–06–2004 को की गई उद्घोषणा के अनुसार)

परम पूज्य आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज के द्वारा की गई उद्घोषणा:–

हमारी समाधि के पश्चात् आपको इस संघ के संचालकपद पर नियुक्त करते हैं।

(अंकलीकर वाणी–जुलाई 2004) (अक्षयज्योति–अक्तूबर 2004)

प्रवचनसार

(द्वितीय खण्ड)

ग्रन्थकर्त्ता
परम पूज्य आचार्यश्री कुन्दकुन्द जी महाराज

सम्पादन
डॉक्टर कमलचन्द सोगाणी

अनुवादिका
श्रीमती शकुन्तला जैन

प्रकाशक :
अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जैन विद्या संस्थान महावीरजी (राजस्थान)

(परम्परानायक)

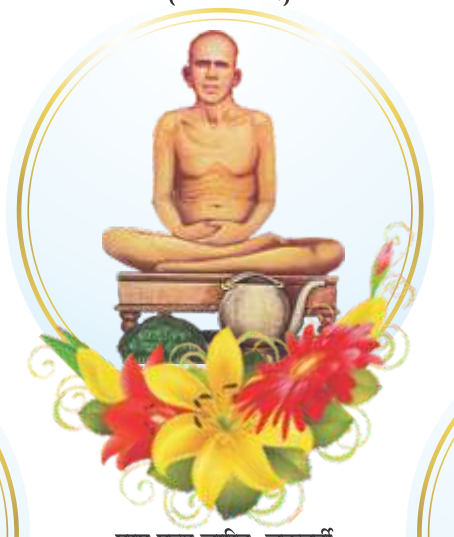

परम पूज्य चारित्र–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री आदिसागर जी महाराज
(अंकलीकर)

(द्वितीय पट्टाधीश)

परम पूज्य तीर्थभक्त–शिरोमणि,
आचार्यश्री महावीरकीर्ति जी महाराज

(तृतीय पट्टाधीश)

परम पूज्य सिद्धान्त–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज

(चतुर्थ पट्टाधीश)

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती, आचार्यश्री सुविधिसागर जी महाराज

दिगम्बर साधु निरन्तर पगविहार करते रहते हैं। ग्रन्थभण्डार को साथ में रख कर विहार करना अशक्यप्रायः होता है। फलतः उनको ग्रन्थों के सन्दर्भ देखने में असुविधा होती है। उनकी सुविधा के लिये इस कोश का निर्माण किया गया है। इस कोश के निर्माण में किसी भी प्रकार का व्यापारिक हेतु नहीं है।

आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न श्रावकबन्धुओं से निवेदन है कि वे ग्रन्थ का विक्रय कर अध्ययन करने की परम्परा को कायम रखें।

मुखपृष्ठ पर हमने ग्रन्थकर्त्ता, अनुवादक, सम्पादक, प्रकाशक आदि के नाम दिये हैं। किसी संस्थान का कर्तृत्व हमने लुप्त नहीं किया है।

इस कोश के लिये आवश्यक ग्रन्थ हमें अनेक स्रोतों से प्राप्त हुये हैं। हम उन सभी का आभार मानते हैं।

सुविधि–परिवार

आचार्य कुन्दकुन्द-रचित

प्रवचनसार

(खण्ड-2)

(मूलपाठ-डॉ. ए. एन. उपाध्ये)

(व्याकरणिक विश्लेषण, अन्वय, व्याकरणात्मक अनुवाद)

संपादन

डॉ. कमलचन्द सोगाणी

अनुवादक

श्रीमती शकुन्तला जैन

प्रकाशक

अपभ्रंश साहित्य अकादमी

जैनविद्या संस्थान

दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी

राजस्थान

आचार्य कुन्दकुन्द-रचित

प्रवचनसार

(खण्ड-2)

(मूलपाठ-डॉ. ए. एन. उपाध्ये)

(व्याकरणिक विश्लेषण, अन्वय, व्याकरणात्मक अनुवाद)

संपादन

डॉ. कमलचन्द सोगाणी

निदेशक

जैनविद्या संस्थान-अपभ्रंश साहित्य अकादमी

अनुवादक

श्रीमती शकुन्तला जैन

सहायक निदेशक

अपभ्रंश साहित्य अकादमी

प्रकाशक

अपभ्रंश साहित्य अकादमी

जैनविद्या संस्थान

दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी

राजस्थान

- प्रकाशक

  अपभ्रंश साहित्य अकादमी

  जैनविद्या संस्थान

  दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी

  श्री महावीरजी - 322 220 (राजस्थान)

  दूरभाष - 07469-224323

- प्राप्ति-स्थान

  1. साहित्य विक्रय केन्द्र, श्री महावीरजी

  2. साहित्य विक्रय केन्द्र

  दिगम्बर जैन नसियाँ भट्टारकजी

  सवाई रामसिंह रोड, जयपुर - 302 004

  दूरभाष - 0141-2385247

- प्रथम संस्करण : अप्रेल, 2014

- सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

- मूल्य -300 रुपये

- ISBN 978-81-926468-2-4

- पृष्ठ संयोजन

  फ्रैण्ड्स कम्प्यूटर्स

  जौहरी बाजार, जयपुर - 302 003

  दूरभाष - 0141-2562288

- मुद्रक

  जयपुर प्रिण्टर्स प्रा. लि.

  एम.आई. रोड, जयपुर - 302 001

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ संख्या
	प्रकाशकीय	V
1.	द्रव्य और पर्याय की अवधारणाः सम्पादक की कलम से	1
2.	संकेत सूची	10
3.	ज्ञेय-अधिकार	14
4.	मूल पाठ	124
5.	परिशिष्ट-1	
	(i) संज्ञा-कोश	138
	(ii) क्रिया-कोश	152
	(iii) कृदन्त-कोश	156
	(iv) विशेषण-कोश	161
	(v) सर्वनाम-कोश	169
	(vi) अव्यय-कोश	171
	परिशिष्ट-2	
	छंद	178
	परिशिष्ट-3	
	सहायक पुस्तकें एवं कोश	181

प्रकाशकीय

आचार्य कुन्दकुन्द-रचित **'प्रवचनसार (खण्ड-2)'** हिन्दी-अनुवाद सहित पाठकों के हाथों में समर्पित करते हुए हमें हर्ष का अनुभव हो रहा है।

आचार्य कुन्दकुन्द का समय प्रथम शताब्दी ई. माना जाता है। वे दक्षिण के कोण्डकुन्द नगर के निवासी थे और उनका नाम कोण्डकुन्द था जो वर्तमान में कुन्दकुन्द के नाम से जाना जाता है। जैन साहित्य के इतिहास में आचार्य श्री का नाम आज भी मंगलमय माना जाता है। इनकी समयसार, प्रवचनसार, पंचास्तिकाय, नियमसार, रयणसार, अष्टपाहुड, दशभक्ति, बारस अणुवेक्खा कृतियाँ प्राप्त होती है।

आचार्य कुन्दकुन्द-रचित उपर्युक्त कृतियों में से 'प्रवचनसार' जैनधर्म-दर्शन को प्रस्तुत करनेवाली शौरसेनी भाषा में रचित एक रचना है। इसमें कुल 275 गाथाएँ हैं। इस ग्रन्थ में तीन अधिकार हैं। 1. ज्ञान-अधिकार 2. ज्ञेय-अधिकार 3. चारित्र-अधिकार। पहले **ज्ञान**-अधिकार में 92 गाथाएँ हैं। इसमें आत्मा और केवलज्ञान, इन्द्रिय और अतीन्द्रिय सुख, शुभ, अशुभ और शुद्ध उपयोग तथा मोहक्षय आदि का प्ररूपण है। दूसरे **ज्ञेय**-अधिकार में 108 गाथाएँ हैं। इसमें द्रव्य और पर्याय की अवधारणा, द्रव्यों का स्वरूप, पुद्गल के कार्य, संसारी जीव और साधना के आयाम, शुद्धोपयोग की साधना आदि का निरूपण है। तीसरे **चारित्र**-अधिकार में 75 गाथाएँ हैं। इसमें आगमज्ञान का महत्व, श्रमण का लक्षण, मोक्षतत्व आदि का निरूपण है।

'प्रवचनसार' का हिन्दी अनुवाद अत्यन्त सहज, सुबोध एवं नवीन शैली में किया गया है जो पाठकों के लिए अत्यन्त उपयोगी होगा। इसमें गाथाओं के

शब्दों का अर्थ व अन्वय दिया गया है। इसके पश्चात संज्ञा-कोश, क्रिया-कोश, कृदन्त-कोश, विशेषण-कोश, सर्वनाम-कोश, अव्यय-कोश दिया गया है। पाठक **'प्रवचनसार'** के माध्यम से शौरसेनी प्राकृत भाषा व जैनधर्म-दर्शन का समुचित ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे, ऐसी आशा है।

प्रस्तुत पुस्तक के तीन अधिकारों में से ज्ञान-अधिकार, खण्ड-1 प्रकाशित किया जा चुका है। अब ज्ञेय-अधिकार, खण्ड-2 प्रकाशित किया जा रहा है। अपभ्रंश भाषा के दार्शनिक साहित्य को आसानी से समझने और प्राकृत-अपभ्रंश की पाण्डुलिपियों के सम्पादन में प्रवचनसार का विषय सहायक होगा। श्रीमती शकुन्तला जैन, एम.फिल. ने बड़े परिश्रम से प्राकृत-अपभ्रंश भाषा सीखने-समझने के इच्छुक अध्ययनार्थियों के लिए **'प्रवचनसार (खण्ड-2)'** का हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत किया है। अतः वे हमारी बधाई की पात्र हैं।

पुस्तक-प्रकाशन के लिए अपभ्रंश साहित्य अकादमी के विद्वानों विशेषतया श्रीमती शकुन्तला जैन के आभारी हैं जिन्होंने **'प्रवचनसार(खण्ड-2)'**का हिन्दी-अनुवाद करके प्राकृत के पठन-पाठन को सुगम बनाने का प्रयास किया है। पृष्ठ संयोजन के लिए फ्रेण्ड्स कम्प्यूटर्स एवं मुद्रण के लिए जयपुर प्रिण्टर्स धन्यवादार्ह है।

न्यायाधिपति नरेन्द्र मोहन कासलीवाल अध्यक्ष

महेन्द्र कुमार पाटनी मंत्री

डॉ. कमलचन्द सोगाणी संयोजक

प्रबन्धकारिणी कमेटी

दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी

जयपुर

जैनविद्या संस्थान समिति

वीर निर्वाण संवत्-2540

13.04.2014

संपादक की कलम से

डॉ. कमलचन्द सोगाणी

द्रव्य और पर्याय की अवधारणा

लोक के पदार्थ द्रव्यस्वरूप होते हैं और द्रव्य अस्तित्वमय है। यदि द्रव्य अस्तित्वमय नहीं है तो द्रव्य अस्तित्वरहित होगा या फिर वह द्रव्य अन्य कुछ होगा। दोनों स्थितियों में वह द्रव्य कैसे होगा? इसलिए द्रव्य स्वयं सत्ता है (सयं सत्ता)। यहाँ यह समझना चाहिये कि सत्ता और द्रव्य में प्रदेश-भिन्नता (पृथकता) नहीं हैं किन्तु प्रदेश-भेद के बिना भी सत्ता और द्रव्य में तादात्म्य का अभाव है उनमें 'अन्यत्व' नामक भेद है अर्थात् उनमें स्वरूप भेद है। जो द्रव्य है वह सत्ता नहीं है और जो सत्ता है वह द्रव्य नहीं है। कहने का अभिप्राय यह हैः सत्ता द्रव्य के आश्रित रहती है और वह एक गुण है किन्तु द्रव्य किसी के आश्रित नहीं रहता है और अनन्त गुण-पर्याय-सहित होता है। इस तरह दोनों एक-दूसरे से अन्य हैं; एकरूप नहीं है।

इस तरह सत्ता द्रव्य का एक लक्षण है। सत् स्वभाववाला द्रव्य उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य-युक्त होता है। उत्पत्ति (उत्पाद) नाश (व्यय) से रहित नहीं है और नाश (व्यय) उत्पत्ति (उत्पाद) से रहित नहीं है। उत्पाद और नाश (व्यय) भी ध्रौव्य पदार्थ के बिना नहीं होता है। चूँकि उत्पाद, स्थिति (ध्रौव्य) और नाश (व्यय) पर्यायों में रहते हैं; पर्यायें द्रव्य में होती हैं, इसलिए आवश्यकरूप से वह सब द्रव्य में ही होता है। इस तरह द्रव्य एक समय में तीन का समूह होता है (तत्तिदयं)। कहने का अभिप्राय यह है कि जब किसी द्रव्य की कोई पर्याय उत्पन्न होती है तब उसी द्रव्य की कोई पर्याय नष्ट होती है; तो भी वह द्रव्य न ही उत्पन्न हुआ, न ही नष्ट हुआ, वह ध्रुव है।

आचार्य कुन्दकुन्द की तात्विक धारणा के अनुरूप द्रव्य परिणमन स्वभाववाला होता है। इसलिए दो प्रकार की उत्पत्ति से युक्त रहता है। (1) सतूरूप उत्पत्ति (2) असतूरूप उत्पत्ति। ये दोनों प्रकार की उत्पत्तियाँ द्रव्य में अविरोधरूप से उपस्थित रहती हैं। उदाहरणार्थ, परिणमन स्वभाव के कारण सोनारूपी द्रव्य जब कंकण को उत्पन्न करता है तो द्रव्यदृष्टि से पूर्व में विद्यमान सोना बना रहता हे और पर्यायदृष्टि से पूर्व में अविद्यमान कंकण उत्पन्न होता है। द्रव्य में जो उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य-सहित परिणाम है वह द्रव्य का ही स्वभाव है।

आचार्य कुन्दकुन्द एक दूसरे प्रकार से भी द्रव्य का लक्षण कहते हैं। अस्तित्व स्वभावमय द्रव्य गुण-पर्याय युक्त होता है। वे कहते हैः द्रव्य अस्तित्व है, गुण अस्तित्व है और पर्याय भी अस्तित्व है। किन्तु द्रव्य-गुण-पर्याय का अस्तित्व से तादात्म्य नहीं है। उनका अस्तित्व से 'अन्यत्व' नामक भेद है। दूसरे शब्दों में जो द्रव्य है वह गुण नहीं है और जो गुण है वह द्रव्य नहीं है। यह तादात्म्य का अभाव है किन्तु यह निश्चय ही अभाव नहीं कहा गया है। इस लोक में बिना द्रव्य के न कोई गुण है और न कोई पर्याय है।

द्रव्य के लक्षणों की विभिन्न अभिव्यक्तियों को एकसाथ कहने पर इस प्रकार कहा गया हैः सत् स्वभाव सहित जो पदार्थ उत्पाद, व्यय और ध्रौव्यता संयुक्त है तथा गुण-पर्याय-युक्त है वह ही द्रव्य कहा गया है। उदाहरणार्थ, सतूरूप सोनेरूपी द्रव्य में ही पीलापन आदि गुण और कुंडलादि पर्याय होती है और जब कंकणादि का उत्पाद किया जाता है तो कुंडलादि पर्याय का व्यय होता है किन्तु सोनारूपी द्रव्य का अस्तित्व यथावत् रहता है। अतः द्रव्य सत् स्वभाव को लिये हुए गुण-पर्याय सहित तथा उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य युक्त एक

साथ अविरोधरूप से कहा जा सकता है।

आचार्य कुन्दकुन्द द्रव्य-पर्याय की धारणा को जीव पर घटित करते हुए कहते हैं कि जब जीव विभिन्न जन्मों में मनुष्यरूप, देवरूप अथवा अन्यरूप होता है तो भी वह द्रव्यदृष्टि से जीव ही रहता है यद्यपि पर्यायदृष्टि से पर्याय से तन्मयता बनाये हुए रहता है और एक पर्याय की स्थिति में जब तक रहता है तब तक दूसरी पर्याय से भिन्न बना रहता है। अतः कहा गया है कि द्रव्यार्थिकनय से एक द्रव्य की विभिन्न पर्यायों में कोई भी द्रव्य भिन्न नहीं होता है और पर्यायार्थिकनय से वही द्रव्य पर्यायों की भिन्नता के कारण भिन्न होता है क्योंकि वह द्रव्य उसी पर्याय से उस अवसर पर एकरूप होने के कारण भिन्न कहा जाता है। इसलिए दार्शनिक शब्दावली में इस प्रकार व्यक्त किया गया है (अतः) द्रव्य किसी प्रकार से (द्रव्यार्थिकनय से) 'अस्ति' ही है और द्रव्य किसी प्रकार से पर्यायार्थिकनय से 'नास्ति' ही है अर्थात् वह द्रव्य पर्याय से एकरूप होने के कारण पर्यायरूप हो गया। (दोनों को एक साथ कहना चाहें तो) (वही द्रव्य) 'अवक्तव्य' ही होता है और (अलग-अलग कहना चाहें तो) द्रव्य अस्ति-नास्ति तथा अन्य (तीन प्रकार से) कहा गया (है) अर्थात अस्ति अवक्तव्य, नास्ति अवक्तव्य और अस्ति-नास्ति अवक्तव्य।

पर्याय की धारणा के प्रसंग में कहा गया है कि उक्त मनुष्यादि पर्याय नित्य नहीं है, क्योंकि इन पर्यायों में उत्पन्न राग-द्वेषात्मक क्रियाएँ सदैव रहती हैं जो संसारी पर्यायरूप फल उत्पन्न करती है। इन पर्यायों में जीव द्रव्य नित्य ही उपस्थित रहता है। वह उत्पन्न और नष्ट नहीं होता है। पर्यायें ही उत्पन्न और नष्ट होती हैं।

अतः आचार्य कुन्दकुन्द कहते हैं कि पर्यायों से मोहित व्यक्ति अध्यात्म-विहीन दृष्टिवाले होते हैं और जो आत्म-द्रव्य में रत होते हैं वे आध्यात्मिक दृष्टिवाले समझे जाने चाहिये।

आचार्य कुन्दकुन्द द्रव्य के परिणमन स्वभाव की एक और अभिव्यक्ति को समझाते हुए कहते हैं कि परिणमन स्वभाव के कारण आत्मचेतना पदार्थ के विचाररूपी ज्ञान में, अनेक प्रकार के कर्म में और सुख-दुःखरूप कर्म के फल में रूपान्तरित होती है। इतना होते हुए भी जो परिणमन ज्ञान-कर्म-कर्मफलरूप में घटित होता है वह आत्मा ही समझा जाना चाहिये और वे ही श्रमण शुद्धात्मा को प्राप्त करते हैं, जो कर्ता, करण (साधन), कर्म और कर्मफल को आत्मा ही समझ लेते हैं।

द्रव्यों का स्वरूप

जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश और काल छह द्रव्य हैं। इन्हीं छह द्रव्यों से लोक निर्मित हैं। केवल आकाश द्रव्य का विस्तार 'अलोक' में भी है। बाकी द्रव्य- जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म और काल- अलोक में नहीं कहे गये हैं। कहा है- ''आकाश द्रव्य लोक और अलोक में रहता है लोक धर्म और अधर्म से व्याप्त है। जीव और पुद्गल लोक में हैं। काल जीव और पुद्गल के परिवर्तन को अवलम्बन करके जाना जाता है।''(44)

सभी द्रव्य प्रदेश-सहित होते हैं। प्रदेश-रहित द्रव्य का अस्तित्व ही नहीं हो सकता है। प्रवचनसार के अनुसार, ''जिस द्रव्य के अनेक प्रदेश नहीं है और एक प्रदेश मात्र भी जानने के लिए नहीं हैं, उस द्रव्य को तुम शून्य जानो (सुण्णं जाण तुमत्थं)।'' प्रदेश की अवधारणा को समझते हुए प्रवचनसार का कहना है कि पुद्गल के एक परमाणु से रोका हुआ जो आकाश द्रव्य है, वह

आकाश 'एक प्रदेश' कहा गया है। इसकी सामर्थ्य इतनी है कि वह आकाश-प्रदेश सब परमाणुओं के लिए अवकाश देने के लिए सक्षम है।

छ द्रव्यों का विभाजन जीव-अजीव रूप से तथा मूर्त-अमूर्त रूप से भी किया गया है। जीव द्रव्य चेतनायुक्त भावात्मकता (चेतनामय-उपयोगमय) है। अन्य पाँच अजीव द्रव्य चेतना-रहित हैं। प्रवचनसार में जीव के लक्षण को विशिष्ट प्रकार से समझाते हुए कहा है कि जीव रूप-रहित, रस-रहित, गंध-रहित, स्पर्श से भी अप्रकट, ध्वनि गुण-रहित, चेतना गुणवाला, तर्क से ग्रहण न होनेवाला तथा अवर्णित आकारवाला है(80)।

पुद्गल द्रव्य मूर्त है और जीव, धर्म, अधर्म, आकाश और काल अमूर्त हैं। जो मूर्त गुण हैं वे इन्द्रियों से ग्रहण करने योग्य होते हैं। इस तरह सूक्ष्म पुद्गल परमाणु से महास्थूल पुद्गल द्रव्य में वर्ण, रस, गंध और स्पर्श गुण विद्यमान हैं। अनेक प्रकार की ध्वनियाँ पुद्गल परमाणु में उपस्थित नहीं होती किन्तु पुद्गल-स्कन्धों की उपज है। अन्य अमूर्त द्रव्यों के गुण है; आकाश का गुण सब द्रव्यों को स्थान देना, धर्म द्रव्य का गुण गमन में सहयोग, अधर्म द्रव्य का गुण स्थिति में सहयोग, काल द्रव्य का गुण परिवर्तन में सहयोग। जीव का गुण, जैसे कहा गया है, चेतनायुक्त भावात्मकता है। यहाँ यह ध्यान देने योग्य है कि काल के द्रव्यरूप में अस्तित्व को प्रवचनसार में विशेष प्रकार से समझाया गया है। 'समय' को आधार बनाकर बताया गया है कि आकाश द्रव्य के एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश तक परमाणु की मंदगति से गमन अवधि समय है, जो एक प्रदेशी है। यह समय पर्याय उत्पन्न होती है और नष्ट होती है। इसका आधारभूत पदार्थ 'काल'/'कालाणु' है।

पुद्गल के कार्य

पुद्गल परमाणु द्रव्यों का समूह है। शरीर, मन और वाणी-ये तीनों योग पुद्गल द्रव्यात्मक है। शरीर के सभी भेद-औदारिक, वैक्रियिक, तेजस, आहारक और कार्मण शरीर पुद्गल-द्रव्य से निर्मित है। पुद्गल के परमाणु स्निग्ध अथवा रूक्ष गुणयुक्त होते हैं। इसके ही स्वपरिणमन से सूक्ष्म तथा स्थूल पृथ्वी शरीर, जल शरीर, वायु शरीर और अग्नि शरीर उत्पन्न होते हैं। परमाणुओं का संयोग नियमयुक्त होता है। निम्नतम अंशवाले परमाणु का किसी दूसरे परमाणु से संयोग नहीं होता है। स्निग्धता में दो अंशवाला परमाणु चारअंशवाली स्निग्धता से बँध को प्राप्त होता है तथा रूक्षता में तीन अंशवाला परमाणु पाँच अंशवाली रूक्षता से बाँधा जाता है। स्निग्ध अथवा रूक्ष परमाणुओं (के अंशों) का (बँधने योग्य) परिणमन यदि निम्नतम अंश रहित हो (किन्तु) (संख्या में) सम अंश (2,4,6....) अथवा (संख्या में) विषम अंश (3,5,7....) हो और (सम-विषम) समान अंशों से दो अंश अधिक हो (तो) (वे) बाँधे जाते हैं। (73) प्रवचनसार का कथन है कि जीव के लिए कर्मरूप होने योग्य पुद्गल राशि से यह लोक भरा हुआ है।

संसारी जीव और साधना का आयाम

संसार अवस्था में जीव द्रव्य चार प्राणों से युक्त होता है। इन्द्रिय प्राण (पाँच), बल प्राण (तीन), आयु प्राण और श्वासोच्छवास प्राण। ये चारों प्राण पुद्गल द्रव्य से निर्मित है। प्रवचनसार का कथन है कि राग-द्वेष-मोह के फलस्वरूप कर्मों से बँधा हुआ जीव प्राणों से संयुक्त होता है, कर्मफल को भोगता है तथा अन्य कर्मों से बाँधा जाता है। कर्मों से मलिन यह जीव बार-बार प्राणों को धारण करता है, जब तक वह पुद्गलात्मक इन्द्रिय सुखों में ममत्व नहीं छोड़ता

है। जब व्यक्ति इन्द्रियों को जीतकर आत्मध्यान में लग जाता है तो वह कर्मों से नहीं बाँधा जाता है। उसके फलस्वरूप वह प्राणों से मुक्त हो जाता है। संसारी जीव के नर, नारकी, तिर्यंच और देव पर्यायें कर्मोत्पन्न होती है।

संसारी जीव की चेतनायुक्त भावात्मकता (उपयोग) दो प्रकार की होती है-शुभ और अशुभ। शुभ भाव से पुण्य का संग्रह होता है और अशुभ भाव पापोत्पादक है। जो जीवों के प्रति करुणा भाव से युक्त है, उसकी भावात्मकता (उपयोग) शुभ है। जो कषायों के वशीभूत जीवों के प्राणों की क्षति करता है, जिसकी भावात्मकता इन्द्रिय विषयों में गाढ़ी है, जो खोटे मनवाला है, जो व्यर्थ चर्चा में संलग्न है, जो सदैव आक्रामक रूखवाला रहता है, जो कुमार्ग पर है, जो कषायोत्तेजक साहित्य में रसयुक्त है उसकी भावात्मकता (उपयोग) अशुभ है। प्रवचनसार के अनुसार पर के प्रति शुभ परिणाम पुण्य है और अशुभ परिणाम पाप है। (89) अतः निस्सन्देह कहा जा सकता है कि समाज में पर की अपेक्षा सर्वोपरि होती है। उसका विकास शुभ परिणामों से ही होता है। ऐसा लगता है आचार्य ने यहाँ समाज को दृष्टि में रखकर पर के प्रति शुभ परिणाम की बात कहकर समाज विकास के सूत्र की ओर ध्यान आकर्षित किया है। संसारी जीव अर्थात् सामाजिक व्यक्ति इन शुभ-अशुभ परिणामों का स्वयं कर्त्ता है। (84) इनका उत्तरदायित्व उस पर है। जो व्यक्ति सामाजिक निर्माण में ही रसयुक्त है, उसे शुभ परिणाम में संलग्न होना और अशुभ परिणाम से विमुख होना अनिवार्य है। अशुभ परिणामों से समाज का पतन होता है और शुभ परिणामों से समाज विकासोन्मुख होता है। शुभ-परिणाम में आचार्य ने करुणा भाव को प्रमुख स्थान दिया है। (65) जीवों के प्राणों की विभिन्न प्रकार से क्षति को अशुभ परिणाम कहा है। (57) अतः समाज में शुभ परिणामों का शिक्षण महत्वपूर्ण है।

शुद्धोपयोग की साधना

प्रारम्भ में यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि शुद्धोपयोग की साधना पूर्णतया व्यक्तिगत होती है। समाज के लिए पर की अपेक्षा है तो शुद्धोपयोग के लिए स्वाश्रितता होती है। धीरे-धीरे जब व्यक्ति को पराश्रितता के कष्टों का अनुभव होता है, तो वह स्व की ओर मुड़ता है। यहीं से शुद्धोपयोग की साधना का प्रारंभ है। प्रवचनसार में 'मैं' के आधार से शुद्धोपयोग की बात कही गई है। व्यक्ति जब सजग होता है तो कहता है: मैं न शरीर (हूँ), न मन (हूँ), और न ही वचन (हूँ), न उनका कारण (हूँ), न कर्ता (हूँ), न करानेवाला (हूँ), न ही करनेवाले का अनुमोदक (हूँ)। (68) शुद्धोपयोग की साधना में पूर्णतया कर्मों से छुटकारा ध्येय होता है। शुभ परिणाम से पुण्य कर्म आता है और अशुभ परिणाम से पाप कर्म। किन्तु यहाँ यह नहीं भूलना चाहिये कि पुण्य कर्म पराश्रित, अड़चनों सहित तथा उससे प्राप्त सुख-सन्तोष विनाशवान होता है। शुद्धोपयोग ऐसे सुख को जीवन में लाना चाहता है जो स्वआश्रित हो, अनुपम हो, अनन्त और शाश्वत हो। इसलिए शुद्धोपयोगी की साधना की दिशा स्वोनमुखी हो जाती है। शुद्धोपयोगी की समझ में यह बात दृढ़ हो जाती है कि रागयुक्त जीव कर्मों को बाँधता है, किन्तु राग-रहित जीव कर्मों से छुटकारा पा जाता है। जो परिणाम परापेक्षी नहीं है वह दुःख के नाश का कारण कहा गया है। शुद्धोपयोग की साधना ध्यान केन्द्रित होती है। ध्यान को जीवन में लाने के लिए 'मैं'का उपयोग करके आचार्य कहते हैं- ''मैं अशुभोपयोग से रहित हूँ, शुभ में (भी) संलग्न नहीं हूँ अन्य विषयों (निंदा-प्रशंसादि) में मध्यस्थ हूँ और ज्ञानात्मक आत्मा का ध्यान करता हूँ।'' आत्मा का ध्यान करनेवाले के भाव इस प्रकार वर्णित हैं: ''न मैं पर का होता हूँ, न पर मेरे हैं, मैं ज्ञानस्वरूप

अकेला हूँ।'' ''मैं आत्मा को शुद्ध, ज्ञानस्वरूप, शाश्वत, स्वाधीन और अतीन्द्रिय महापदार्थ स्वीकार करता हूँ।'' शुद्धोपयोगी विचारता है ''जीव के लिए, देह या संपत्ति, सुख-दुःख, शत्रु-मित्र अविनाशी नहीं है, चेतनायुक्त भावात्मक (उपयोगात्मक) आत्मा ही अविनाशी है। फलस्वरूप गृहस्थ या मुनि इस प्रकार समझकर उत्कृष्ट आत्मा को ध्याता है, तो वह मोहगांठ (आत्मविस्मृति रूपी गाँठ) को नष्ट कर देता है और श्रमण अवस्था में साधक राग-द्वेष-मोह को नष्ट करके अविनाशी सुखों को प्राप्त कर लेता है। आचार्य अन्त में कहते हैंः ''मैं ज्ञायक आत्मा को स्वभाव से जानकर ममत्व को त्यागता हूँ और निर्ममत्व में स्थित होता हूँ।''

प्रवचनसार को भली-भाँति समझने के लिए गाथा के प्रत्येक शब्द जैसे- संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण, कृदन्त आदि के लिए व्याकरणिक विश्लेषण में प्रयुक्त संकेतों का ज्ञान होने से प्रत्येक शब्द का अनुवाद समझा जा सकेगा।

अ – अव्यय (इसका अर्थ = लगाकर लिखा गया है)

अक - अकर्मक क्रिया

अनि - अनियमित

कर्म - कर्मवाच्य

क्रिविअ - क्रिया विशेषण अव्यय (इसका अर्थ = लगाकर लिखा गया है)

नपुं. - नपुंसकलिंग

पु. - पुल्लिंग

भूकृ - भूतकालिक कृदन्त

व - वर्तमानकाल

वकृ - वर्तमान कृदन्त

वि - विशेषण

विधि - विधि

विधिकृ - विधि कृदन्त

स - सर्वनाम

संकृ - संबंधक कृदन्त

सक - सकर्मक क्रिया

सवि - सर्वनाम विशेषण

स्त्री. - स्त्रीलिंग

•()- इस प्रकार के कोष्ठक में मूल शब्द रखा गया है।

•[()+()+().....] इस प्रकार के कोष्ठक के अन्दर + चिह्न शब्दों में संधि का द्योतक है। यहाँ अन्दर के कोष्ठकों में गाथा के शब्द ही रख दिये गये हैं।

•[()-()-().....] इस प्रकार के कोष्ठक के अन्दर '-' चिह्न समास का द्योतक है।

•{[()+()+().....]वि} जहाँ समस्त पद विशेषण का कार्य करता है वहाँ इस प्रकार के कोष्ठक का प्रयोग किया गया है।

•जहाँ कोष्ठक के बाहर केवल संख्या (जैसे 1/1, 2/1 आदि) ही लिखी है वहाँ उस कोष्ठक के अन्दर का शब्द '**संज्ञा**' है।

•जहाँ **कर्मवाच्य, कृदन्त** आदि प्राकृत के नियमानुसार नहीं बने हैं वहाँ कोष्ठक के बाहर '**अनि**' भी लिखा गया है।

क्रिया-रूप निम्न प्रकार लिखा गया है-

1/1 **अक** या **सक** - उत्तम पुरुष/एकवचन
1/2 **अक** या **सक** - उत्तम पुरुष/बहुवचन
2/1 **अक** या **सक** - मध्यम पुरुष/एकवचन
2/2 **अक** या **सक** - मध्यम पुरुष/बहुवचन
3/1 **अक** या **सक** - अन्य पुरुष/एकवचन
3/2 **अक** या **सक** - अन्य पुरुष/बहुवचन

विभक्तियाँ निम्न प्रकार लिखी गई हैं–

1/1 - प्रथमा/एकवचन
1/2 - प्रथमा/बहुवचन
2/1 - द्वितीया/एकवचन
2/2 - द्वितीया/बहुवचन
3/1 - तृतीया/एकवचन
3/2 - तृतीया/बहुवचन
4/1 - चतुर्थी/एकवचन
4/2 - चतुर्थी/बहुवचन
5/1 - पंचमी/एकवचन
5/2 - पंचमी/बहुवचन
6/1 - षष्ठी/एकवचन
6/2 - षष्ठी/बहुवचन
7/1 - सप्तमी/एकवचन
7/2 - सप्तमी/बहुवचन

प्रवचनसार

(पवयणसारो)

प्रवचनसार

(पवयणसारो)

ज्ञेय-अधिकार (खण्ड-2)

1. अत्थो खलु दव्वमओ दव्वाणि गुणप्पगाणि भणिदाणि।
तेहिं पुणो पज्जाया पज्जयमूढा हि परसमया।।

अत्थो	(अत्थ) 1/1	पदार्थ
खलु	अव्यय	निश्चय ही
दव्वमओ	(दव्वमअ) 1/1 वि	द्रव्यस्वरूप
दव्वाणि	(दव्व) 1/2	द्रव्य
गुणप्पगाणि	(गुणप्पग) 1/2 वि	गुणात्मक
भणिदाणि	(भण→भणिद) भूकृ 1/2	कहे गये
तेहिं	(त) 3/2 सवि	उनसे युक्त
पुणो	अव्यय	फिर
पज्जाया	(पज्जाय) 1/2	पर्यायें
पज्जयमूढा	[(पज्जाय→पज्जय)-(मूढ) भूकृ 1/2 अनि]	पर्यायों से मोहित
हि	अव्यय	किन्तु
परसमया	(परसमय) 1/2 वि	इतर दृष्टिवाले

अन्वय- अत्थो खलु दव्वमओ दव्वाणि गुणप्पगाणि भणिदाणि पुणो तेहिं पज्जाया हि पज्जयमूढा परसमया।

अर्थ- (ज्ञेय) पदार्थ निश्चय ही द्रव्यस्वरूप (होता है)। द्रव्य गुणात्मक कहे गये (हैं)। फिर उन (गुणात्मक द्रव्यों) से युक्त पर्यायें (होती है) किन्तु (उन) पर्यायों से मोहित (व्यक्ति) इतर (जिनभिन्न) दृष्टिवाले (कहे गये हैं)।

2. जे पज्जयेसु णिरदा जीवा परसमयिग त्ति णिद्दिट्ठा।
आदसहावम्मि ठिदा ते सगसमया मुणेदव्वा।।

जे	(ज) 1/2 सवि	जो
पज्जयेसु	(पज्जाय) 7/2	पर्यायों में
णिरदा	(णिरद) 1/2 वि	तल्लीन
जीवा	(जीव) 1/2	जीव
परसमयिग त्ति	[(परसमयिगा)+(इति)]	
	[(पर) वि- (समयिग)1/2 वि]	इतर दृष्टिवाले
	इति (अ) = ही	ही
णिद्दिट्ठा	(णिद्दिट्ठ) भूकृ 1/2 अनि	कहे गये
आदसहावम्मि	[(आद)-(सहाव) 7/1]	आत्मस्वभाव में
ठिदा	(ठिद) भूकृ 1/2 अनि	स्थित
ते	(त) 1/2 सवि	वे
सगसमया	(सगसमय) 1/2 वि	स्व दृष्टिवाले
मुणेदव्वा	(मुण) विधिकृ 1/2	समझे जाने चाहिये

अन्वय- जे जीवा पज्जयेसु णिरदा परसमयिग त्ति णिद्दिट्ठा आदसहावम्मि ठिदा ते सगसमया मुणेदव्वा।

अर्थ- जो जीव (व्यक्ति) पर्यायों में तल्लीन (होते हैं) (वे) इतर (जिन भिन्न) दृष्टिवाले ही कहे गये (हैं) (और) (जो) (जीव) आत्मस्वभाव में स्थित (होते हैं) वे स्व (जिन) दृष्टिवाले समझे जाने चाहिये।

3. **अपरिच्चत्तसहावेणुप्पादव्वयधुवत्तसंजुत्तं।**
गुणवं च सपज्जायं जं तं दव्वं ति वुच्चंति।।

अपरिच्चत्तसहावेणु-	[(अपरिच्चत्तसहावेण)+	
प्पादव्वयधुवत्त-	(उप्पादव्वयधुवत्तसंजुत्तं)]	
संजुत्तं	[(अपरिच्चत्त) भूकृ अनि-	न छोड़े हुए /शाश्वत
	(सहाव) 3/1]	अस्तित्व स्वभाव सहित
	[(उप्पाद)-(व्वय)-(धुवत्त)-	उत्पाद, व्यय, ध्रौव्यता
	(संजुत्त) भूकृ 1/1 अनि	से संयुक्त
गुणवं	(गुणव) 1/1 वि	गुणयुक्त
च	अव्यय	और
सपज्जायं	(स-पज्जाय) 1/1 वि	पर्याययुक्त
जं	(ज) 1/1 सवि	जो
तं	(त) 1/1 सवि	वह
दव्वं ति	[(दव्वं)+(इति)]	
	दव्वं (दव्व) 1/1	द्रव्य
	इति (अ) = ही	ही
वुच्चंति	(वुच्च) 3/2 सक	कहते हैं

अन्वय– अपरिच्चत्तसहावेण जं उप्पादव्वयधुवत्तसंजुत्तं गुणवं च सपज्जायं तं दव्वं ति वुच्चंति।

अर्थ– न छोड़े हुए/शाश्वत अस्तित्व स्वभाव सहित जो (पदार्थ) उत्पाद, व्यय, ध्रौव्यता से संयुक्त (है) (तथा) गुणयुक्त और पर्याययुक्त (है) वह ही द्रव्य (है) (ऐसा) (जिन) कहते हैं।

4. सब्भावो हि सहावो गुणेहिं सह पज्जएहिं चित्तेहिं।
दव्वस्स सव्वकालं उप्पादव्वयधुवत्तेहिं।।

सब्भावो	(सब्भाव) 1/1	अस्तित्व
हि	अव्यय	निश्चय ही
सहावो	(सहाव) 1/1	स्वभाव
गुणेहिं	(गुण) 3/2	गुणों
सह	अव्यय	से युक्त
पज्जएहिं[1]	(पज्जाअ) 3/2	पर्यायों
चित्तेहिं[1]	(चित्त) 3/2 वि	अनेक प्रकार के
दव्वस्स	(दव्व) 6/2	द्रव्य का
सव्वकालं[2]	[(सव्व) सवि-(काल) 2/1]	सर्वकाल में
उप्पादव्वयधुवत्तेहिं	[(उप्पाद)-(व्वय)-(धुवत्त) 3/2]	उत्पाद-व्यय-ध्रुवत्व (सहित)

अन्वय– दव्वस्स हि सहावो सब्भावो सव्वकालं उप्पादव्वयधुवत्तेहिं चित्तेहिं गुणेहिं पज्जएहिं सह।

अर्थ– द्रव्य का निश्चय ही स्वभाव अस्तित्व (है)। (जो) सर्वकाल में उत्पाद-व्यय-ध्रुवत्व (सहित) (है) (तथा) अनेक प्रकार के गुणों (और) पर्यायों से युक्त (है)।

---

1. 'सह' के योग में तृतीया होती है।
2. कभी-कभी सप्तमी विभक्ति के स्थान पर द्वितीया विभक्ति का प्रयोग पाया जाता है। (हेम-प्राकृत-व्याकरणः 3-137)

5. इह विविहलक्खणाणं लक्खणमेगं सदिति सव्वगयं।
उवदिसदा खलु धम्मं जिणवरवसहेण पण्णत्तं।।

इह	अव्यय	इस लोक में
विविहलक्खणाणं[1]	[(विविह) वि-(लक्खण) 6/2]	अनेक लक्षणों में से
लक्खणमेगं	[(लक्खणं)+(एगं)]	
	लक्खणं (लक्खण) 1/1	लक्षण
	एगं (एग) 1/1 वि	एक
सदिति	(सदिति) 1/1 अनि	अस्तित्व ही
सव्वगयं	(सव्वगय) 1/1 वि	सब में स्थित
उवदिसदा	(उवदिसदा) 3/1 वि अनि	उपदेशक
खलु	अव्यय	निश्चय ही
धम्मं	(धम्म) 1/1	स्वभाव
जिणवरवसहेण	(जिणवरवसह) 3/1	जिनश्रेष्ठ अरिहंत (तीर्थंकर) द्वारा
पण्णत्तं	(पण्णत्त) भूकृ 1/1 अनि	कहा गया

अन्वय– इह विविहलक्खणाणं एगं लक्खणं सव्वगयं सदिति उवदिसदा जिणवरवसहेण खलु धम्मं पण्णत्तं।

अर्थ– इस लोक में अनेक लक्षणों में से (द्रव्य का) एक लक्षण सब (पदार्थों) में स्थित अस्तित्व ही (है)। उपदेशक जिनश्रेष्ठ अरिहंत (तीर्थंकर) द्वारा निश्चय ही (यह) स्वभाव कहा गया (है)।

1. कभी-कभी सप्तमी विभक्ति के स्थान पर षष्ठी विभक्ति का प्रयोग पाया जाता है। (हेम-प्राकृत-व्याकरणः 3-134)

6. दव्वं सहावसिद्धं सदिति जिणा तच्चदो समक्खादा।
सिद्धं तध आगमदो णेच्छदि जो सो हि परसमओ।।

दव्वं	(दव्व) 1/1	द्रव्य
सहावसिद्धं	[(सहाव)-(सिद्ध) 1/1वि]	स्वभाव से निर्मित
सदिति	(सदिति) 1/1 अनि	अस्तित्व ही
जिणा	(जिण) 1/2	जिनेन्द्रदेवों ने
तच्चदो	(तच्चदो) अव्यय	यथार्थरूप से
	पंचमी अर्थक 'दो' प्रत्यय	
समक्खादा[1]	(समक्खाद) भूकृ 1/2 अनि	कहा
सिद्धं	(सिद्ध) 1/1 वि	सिद्ध
तध	अव्यय	इस तरह
आगमदो	(आगमदो) अव्यय	आगमपूर्वक
	पंचमी अर्थक 'दो' प्रत्यय	
णेच्छदि	[(ण)+(इच्छदि)]	
	ण (अ) = नहीं	नहीं
	इच्छदि (इच्छ) व 3/1 सक	मानता है
जो	(ज) 1/1 सवि	जो
सो	(त) 1/1 सवि	वह
हि	अव्यय	निश्चय ही
परसमओ	(परसमअ) 1/1 वि	इतर दृष्टिवाला

अन्वय– दव्वं सहावसिद्धं सदिति जिणा तच्चदो समक्खादा तध आगमदो सिद्धं जो णेच्छदि सो हि परसमओ।

अर्थ– द्रव्य स्वभाव से निर्मित 'अस्तित्व' ही (है) जिनेन्द्रदेवों (तीर्थंकरों) ने यथार्थरूप से (ऐसा) कहा (है)। इसतरह (वह कथन) आगमपूर्वक (भी) सिद्ध (हो जाता है)। जो (इसे) नहीं मानता है वह निश्चय ही इतर (जिनभिन्न) दृष्टिवाला (है)।

---

1. यहाँ भूतकालिक कृदन्त का कर्तृवाच्य में प्रयोग हुआ है।

7. **सदवट्ठिदं सहावे दव्वं दव्वस्स जो हि परिणामो।**
अत्थेसु सो सहावो ठिदिसंभवणाससंबद्धो।।

सदवट्ठिदं	(सदवट्ठिद) भूकृ 1/1अनि	अस्तित्व में ठहरा हुआ
सहावे	(सहाव) 7/1	स्वभाव में
दव्वं	(दव्व) 1/1	द्रव्य
दव्वस्स	(दव्व) 6/1	द्रव्य का
जो	(ज) 1/1 सवि	जो
हि	अव्यय	ही
परिणामो	(परिणाम) 1/1	परिणमन
अत्थेसु	(अत्थ) 7/2	पदार्थों में
सो	(त) 1/1 सवि	वह
सहावो	(सहाव) 1/1	स्वरूप
ठिदिसंभव-	[(ठिदि)-(संभव)-	स्थिति, उत्पत्ति और
णाससंबद्धो	(णास)-(संबद्ध)	विनाश-सहित
	भूकृ 1/1 अनि]	

अन्वय- सदवट्ठिदं दव्वं सहावे अत्थेसु जो ठिदिसंभवणाससंबद्धो परिणामो सो दव्वस्स हि सहावो।

अर्थ- 'अस्तित्व' में ठहरा हुआ द्रव्य स्वभाव में (ही) (है)। पदार्थों में जो स्थिति, उत्पत्ति और विनाश-सहित परिणमन (है) वह द्रव्य का ही स्वरूप (है)।

8. **ण भवो भंगविहीणो भंगो वा णत्थि संभवविहीणो।**
उप्पादो वि य भंगो ण विणा धोव्वेण अत्थेण।।

ण	अव्यय	नहीं
भवो	(भव) 1/1	उत्पत्ति
भंगविहीणो	[(भंग)-(विहीण) 1/1 वि]	नाश से रहित
भंगो	(भंग) 1/1	नाश
वा	अव्यय	और
णत्थि	अव्यय	नहीं है
संभवविहीणो	[(संभव)-(विहीण) 1/1 वि]	उत्पत्ति से रहित
उप्पादो	(उप्पाद) 1/1	उत्पाद
वि	अव्यय	भी
य	अव्यय	और
भंगो	(भंग) 1/1	नाश
ण	अव्यय	नहीं
विणा	अव्यय	बिना
धोव्वेण[1]	(धोव्व) 3/1 वि	ध्रौव्य
अत्थेण[1]	(अत्थ) 3/1	पदार्थ

अन्वय– भवो भंगविहीणो ण वा भंगो संभवविहीणो णत्थि उप्पादो य भंगो वि धोव्वेण अत्थेण विणा ण।

अर्थ– उत्पत्ति (उत्पाद) नाश (व्यय) से रहित नहीं (होती है) और नाश (व्यय) उत्पत्ति (उत्पाद) से रहित नहीं (होता) है। उत्पाद और नाश (व्यय) भी ध्रौव्य पदार्थ के बिना नहीं (होता है)।

---

1. 'बिना' के योग में द्वितीया, तृतीया तथा पंचमी होती है।

9. उप्पादट्ठिदिभंगा विज्जंते पज्जएसु पज्जाया।
दव्वं हि संति णियदं तम्हा दव्वं हवदि सव्वं।।

उप्पादट्ठिदिभंगा	[(उप्पाद)-(ट्ठिदि)-(भंग) 1/2]	उत्पाद, स्थिति और नाश
विज्जंते	(विज्ज) व 3/2 अक	होते हैं
पज्जएसु	(पज्जाय→पज्जय) 7/2	पर्यायों में
पज्जाया	(पज्जाय) 1/2	पर्यायें
दव्वं[1]	(दव्व) 2/1	द्रव्य में
हि	अव्यय	चूँकि
संति	(संति) व 3/2 अक अनि	होती हैं
णियदं	अव्यय	आवश्यकरूप से
तम्हा	अव्यय	इसलिए
दव्वं[1]	(दव्व) 2/1	द्रव्य में
हवदि	(हव) व 3/1 अक	होता है
सव्वं[1]	(सव्व) 2/1 सवि	सब में

अन्वय- उप्पादट्ठिदिभंगा हि पज्जएसु विज्जंते पज्जाया दव्वे संति तम्हा णियदं सव्वं दव्वं हवदि ।

अर्थ- चूँकि उत्पाद, स्थिति (ध्रौव्य) और नाश (व्यय) पर्यायों में होते हैं, पर्यायें द्रव्य में होती हैं, इसलिए आवश्यकरूप से (वह) सब द्रव्य में (ही) होता है।

---

1. कभी-कभी सप्तमी विभक्ति के स्थान पर द्वितीया विभक्ति का प्रयोग पाया जाता है। (हेम-प्राकृत-व्याकरणः 3-137)

10. समवेदं खलु दव्वं संभवठिदिणाससण्णिदट्ठेहिं।
एक्कम्मि चेव समये तम्हा दव्वं खु तत्तिदयं।।

समवेदं	(समवेद) 1/1 वि	अभेद्यरूप से संयुक्त
खलु	अव्यय	निस्सन्देह
दव्वं	(दव्व) 1/1	द्रव्य
संभवठिदिणास-	[(संभवठिदिणाससण्णिद	
सण्णिदट्ठेहिं	+(अट्ठेहिं)]	
संभवठिदिणास-	[(संभव)-(ठिदि)-(णास)-	उत्पत्ति, स्थिति और
सण्णिदट्ठेहिं	(सण्णिद) वि-(अट्ठ) 3/2]	विनाश नामक आशयों के साथ
एक्कम्मि	(एक्क) 7/1 वि	एक
चेव	अव्यय	ही
समये	(समय) 7/1	समय में
तम्हा	अव्यय	इसलिए
दव्वं	(दव्व) 1/1	द्रव्य
खु	अव्यय	निश्चय ही
तत्तिदयं	(तत्तिदयं) 1/1 अनि	वह तीन का समूह

अन्वय- दव्वं खलु एक्कम्मि चेव समये संभवठिदिणाससण्णिदट्ठेहिं समवेदं तम्हा दव्वं खु तत्तिदयं ।

अर्थ- द्रव्य निस्सन्देह एक ही समय में उत्पत्ति (उत्पाद), स्थिति (ध्रौव्य) और विनाश (व्यय) नामक आशयों के साथ अभेद्यरूप से संयुक्त है, इसलिए वह द्रव्य (एक समय में) निश्चय ही तीन का समूह (है)।

11. पाडुब्भवदि य अण्णो पज्जाओ पज्जओ वयदि अण्णो।
दव्वस्स तं पि दव्वं णेव पणट्ठं ण उप्पण्णं।।

पाडुब्भवदि	(पाडुब्भव) व 3/1 अक	उत्पन्न होती है
य	अव्यय	और
अण्णो	(अण्ण) 1/1 सवि	कोई
पज्जाओ	(पज्जाअ) 1/1	पर्याय
पज्जओ	(पज्जाअ→पज्जअ)[1] 1/1	पर्याय
वयदि	(वय) व 3/1 अक	नष्ट होती है
अण्णो	(अण्ण) 1/1 सवि	कोई
दव्वस्स	(दव्व) 6/1	द्रव्य की
तं पि	अव्यय	तो भी
दव्वं	(दव्व) 1/1	द्रव्य
णेव	अव्यय	न ही
पणट्ठं	(पणट्ठ) भूक 1/1 अनि	नष्ट हुआ
ण	अव्यय	न
उप्पण्णं	(उप्पण्ण) भूक 1/1 अनि	उत्पन्न हुआ

अन्वय– **दव्वस्स अण्णो पज्जाओ पाडुब्भवदि य अण्णो पज्जओ वयदि तं पि दव्वं ण उप्पण्णं णेव पणट्ठं।**

अर्थ– (जब किसी) द्रव्य की कोई पर्याय उत्पन्न होती है और (उसी द्रव्य की) कोई पर्याय नष्ट होती है, तो भी (वह) द्रव्य न उत्पन्न हुआ न ही नष्ट हुआ (वह ध्रौव्य है)।

---

1. यहाँ छन्द की मात्रा की पूर्ति हेतु 'पज्जाअ' का 'पज्जअ' किया गया है।

12. परिणमदि सयं दव्वं गुणदो य गुणंतरं सदविसिट्ठं।
तम्हा गुणपज्जाया भणिया पुण दव्वमेव त्ति।।

परिणमदि	(परिणम) व 3/1 सक	प्राप्त करता है
सयं	अव्यय	स्वयं
दव्वं	(दव्व) 1/1	द्रव्य
गुणदो	(गुणदो) अव्यय पंचमी अर्थक 'दो' प्रत्यय	गुण से
य	अव्यय	और
गुणंतरं	(गुणंतर) 2/1	अन्य गुण को
सदविसिट्ठं	(सदविसिट्ठ) भूकृ 1/1अनि	अस्तित्व लक्षणयुक्त
तम्हा	अव्यय	इसलिये
गुणपज्जाया	[(गुण)-(पज्जाय) 1/2]	गुण की पर्यायें
भणिया	(भण→भणिय→भणिया) भूकृ 1/2	कही गई
पुण	अव्यय	तो भी
दव्वमेव त्ति	[(दव्वं)+(एव)+(इति)]	
	दव्वं (दव्व) 1/1	द्रव्य
	एव (अ) = ही	ही
	इति (अ) = इस प्रकार	इस प्रकार

अन्वय– सदविसिट्ठं दव्वं सयं गुणदो य गुणंतरं परिणमदि तम्हा गुणपज्जाया भणिया पुण दव्वमेव त्ति।

अर्थ– अस्तित्व लक्षणयुक्त द्रव्य स्वयं (ही) (एक) गुण से अन्य गुण को प्राप्त करता है, इसलिये गुण की पर्यायें कही गई (हैं) तो भी (प्राप्त करनेवाली) (वह) (वस्तु) द्रव्य ही (है)। इस प्रकार (वर्णित है)।

---

1. 'अन्य' अर्थ में 'अंतर' समस्त पद का उत्तर पद रहता है और यह नपुंसकलिंग होता है।

13. ण हवदि जदि सद्दव्वं असद्धुवं हवदि तं कहं दव्वं।
हवदि पुणो अण्णं वा तम्हा दव्वं सयं सत्ता।।

ण	अव्यय	नहीं
हवदि	(हव) व 3/1 अक	होता है
जदि	अव्यय	यदि
सद्दव्वं	(सद्दव्वं) 1/1 अनि	अस्तित्वयुक्त द्रव्य
असद्धुवं	(असद्धुव) 1/1 वि	ध्रुव (द्रव्य) अस्तित्व रहित
हवदि	(हव) व 3/1 अक	होता है
तं	(त) 1/1 सवि	वह
कहं	अव्यय	कैसे
दव्वं	(दव्व) 1/1	द्रव्य
हवदि[1]	(हव) व 3/1 अक	होता है
पुणो	अव्यय	फिर
अण्णं	(अण्ण) 1/1 सवि	अन्य
वा	अव्यय	अथवा
तम्हा	अव्यय	इसलिये
दव्वं	(दव्व) 1/1	द्रव्य
सयं	अव्यय	स्वयं
सत्ता	(सत्ता) 1/1	सत्ता

अन्वय- जदि सद्दव्वं ण हवदि असद्धुवं हवदि वा पुणो तं अण्णं दव्वं कहं हवदि तम्हा दव्वं सयं सत्ता।

अर्थ- यदि द्रव्य अस्तित्वयुक्त नहीं होता है (तो) ध्रुव (द्रव्य) अस्तित्व रहित होता है (होगा) अथवा फिर वह (द्रव्य) अन्य (कुछ) (होता है) (होगा) (दोनों स्थितियों में वह) द्रव्य कैसे होगा? इसलिये द्रव्य स्वयं सत्ता (अस्तित्व) (है)।

1. प्रश्नवाचक शब्दों के साथ वर्तमानकाल का प्रयोग प्रायः भविष्यत्काल के अर्थ में होता है।

14. पविभत्तपदेसत्तं पुधत्तमिदि सासणं हि वीरस्स।
अण्णत्तमतब्भावो ण तब्भवं होदि कधमेगं।।

पविभत्तपदेसत्तं	[(पविभत्त) वि-(पदेसत्त) 1/1]	भिन्न प्रदेशता
पुधत्तमिदि	[(पुधत्तं)+(इदि)]	
	पुधत्तं (पुधत्त) 1/1	पृथकता
	इदि (अ) = ऐसा	ऐसा
सासणं	(सासण) 1/1	उपदेश
हि	अव्यय	निश्चय ही
वीरस्स	(वीर) 6/1	भगवान महावीर का
अण्णत्तमतब्भावो	[(अण्णत्तं)+(अतब्भावो)]	
	अण्णत्तं (अण्णत्त) 1/1	अन्यत्व
	अतब्भावो (अतब्भाव) 1/1	तादात्म्य का अभाव
ण	अव्यय	नहीं
तब्भवं	(तब्भव) 2/1	तादात्म्य को
होदि	(हो) व 3/1 सक	प्राप्त करता है
कधमेगं	[(कधं)+(एगं)]	
	कधं (अ) = कैसे	कैसे
	एगं (एग) 1/1 वि	एकरूप/समरूप

अन्वय– वीरस्स हि इदि सासणं पविभत्तपदेसत्तं पुधत्तं अतब्भावो अण्णत्तं तब्भवं ण होदि कधमेगं।

अर्थ– भगवान महावीर का निश्चय ही ऐसा उपदेश (है): (द्रव्यों में) भिन्न प्रदेशता पृथकता (कही गई है)। (प्रदेश भेद के बिना भी द्रव्य और गुण में) तादात्म्य का अभाव अन्यत्व (है)। (जब) (द्रव्य और गुण) तादात्म्य को प्राप्त नहीं करता है (तो) (द्रव्य और गुण) एकरूप/समरूप कैसे (होंगे)?

15. सद्दव्वं सच्च गुणो सच्चेव य पज्जओ त्ति वित्थारो।
जो खलु तस्स अभावो सो तदभावो अतब्भावो।।

सद्दव्वं	(सद्दव्वं) 1/1 अनि	विद्यमान द्रव्य
सच्च	(सच्च) 1/1 वि अनि	और विद्यमान
गुणो	(गुण) 1/1	गुण
सच्चेव	[(सच्च)+(एव)]	
	सच्च (सच्च) 1/1 वि अनि	और विद्यमान
	एव (अ) = भी	भी
य	अव्यय	और
पज्जओ त्ति	[(पज्जओ)+(इति)]	
	पज्जओ (पज्जाअ→पज्जअ) 1/1	पर्याय
	इति (अ) = इस प्रकार	इस प्रकार
वित्थारो	(वित्थार) 1/1	विस्तार
जो	(ज) 1/1 सवि	जो
खलु	अव्यय	निश्चय ही
तस्स	(त) 6/1 सवि	उसका
अभावो	(अभाव) 1/1	न होना
सो	(त) 1/1 सवि	वह
तदभावो	(तदभाव) 1/1	तादात्म्य
अतब्भावो	(अतब्भाव) 1/1	तादात्म्य का अभाव

अन्वय– सद्दव्वं गुणो सच्च य पज्जओ त्ति एव सच्च वित्थारो जो तस्स तदभावो अभावो सो खलु अतब्भावो।

अर्थ– द्रव्य 'विद्यमान' (है) और गुण 'विद्यमान' (है) और पर्याय भी 'विद्यमान' (है)। इस प्रकार (विद्यमान/सत्ता का) विस्तार (है)। जो उस (द्रव्य-गुण-पर्याय) का और (सत्ता का) तादात्म्य न होना (है) (वह) निश्चय ही तादात्म्य का अभाव (है) अर्थात् अन्यत्व है।

16. जं दव्वं तं ण गुणो जो वि गुणो सो ण तच्चमत्थादो।
एसो हि अतब्भावो णेव अभावो त्ति णिद्दिट्ठो।।

जं	(ज) 1/1 सवि	जो
दव्वं	(दव्व) 1/1	द्रव्य
तं	(त) 1/1 सवि	वह
ण	अव्यय	नहीं
गुणो	(गुण) 1/1	गुण
जो	(ज) 1/1 सवि	जो
वि	अव्यय	और
गुणो	(गुण) 1/1	गुण
सो	(त) 1/1 सवि	वह
ण	अव्यय	नहीं
तच्चमत्थादो	[(तच्चं)+(अत्थादो)]	
	तच्चं (तच्च) 1/1	द्रव्य (मूल प्रकृति)
	अत्थादो (अत्थ)• 5/1	वस्तुतः
एसो	(एत) 1/1 सवि	यह
हि	अव्यय	ही
अतब्भावो	(अतब्भाव) 1/1	तादात्म्य का अभाव
णेव	अव्यय	नहीं
अभावो त्ति	[(अभावो)+(इति)]	
	अभावो (अभाव) 1/1	अभाव
	इति (अ) = निश्चय ही	निश्चय ही
णिद्दिट्ठो	(णिद्दिट्ठ) भूकृ 1/1 अनि	कहा गया

अन्वय– अत्थादो जं दव्वं तं गुणो ण वि जो गुणो सो तच्चं ण एसो हि अतब्भावो अभावो त्ति णेव णिद्दिट्ठो।

अर्थ– वस्तुतः जो द्रव्य (है) वह गुण नहीं (है), और जो गुण (है) वह द्रव्य नहीं (है)। यह ही तादात्मय का अभाव (है) (किन्तु) (यह) निश्चय ही अभाव नहीं कहा गया (है)।

• 'अत्थ' का पंचमी में प्रयोग अव्यय के रूप में होता है।

17. जो खलु दव्वसहावो परिणामो सो गुणो सदविसिट्ठो।
सदवट्ठिदं सहावे दव्व त्ति जिणोवदेसोयं।।

जो	(ज) 1/1 सवि	जो
खलु	अव्यय	निश्चय ही
दव्वसहावो	[(दव्व)-(सहाव) 1/1]	द्रव्य का स्वभाव
परिणामो	(परिणाम) 1/1	परिणमन
सो	(त) 1/1 सवि	वह
गुणो	(गुण) 1/1	गुण
सदविसिट्ठो	(सदविसिट्ठ) भूकृ 1/1 अनि	अस्तित्व लक्षणयुक्त
सदवट्ठिदं	(सदवट्ठिद) भूकृ 1/1 अनि	सत्ता (अस्तित्व) में अवस्थित
सहावे	(सहाव) 7/1	स्वभाव में
दव्व त्ति	[(दव्व)+(इति)]	
(दव्वं ति)	दव्वं (दव्व) 1/1	द्रव्य
	इति (अ) = ही	ही
जिणोवदेसोयं	[(जिण)+(उवदेसो)+(अयं)]	
	[(जिण)-(उवदेस) 1/1]	जिन का उपदेश
	अयं (इम) 1/1 सवि	यह

अन्वय– दव्वसहावो जो परिणामो सो खलु सदविसिट्ठो गुणो सदवट्ठिदं दव्वं त्ति सहावे अयं जिण उवदेसो।

अर्थ– द्रव्य का स्वभाव जो परिणमन (है) वह निश्चय ही अस्तित्व लक्षणयुक्त गुण है (तथा) सत्ता (अस्तित्व) में अवस्थित द्रव्य ही स्वभाव में (अवस्थित) (है)। यह जिन का उपदेश (है)।

• यहाँ पाठ होना चाहिए 'दव्वं ति'।

18. णत्थि गुणो त्ति व कोई पज्जाओ त्तीह वा विणा दव्वं।
दव्वत्तं पुण भावो तम्हा दव्वं सयं सत्ता।।

णत्थि	अव्यय	नहीं है
गुणो त्ति	[(गुणो)+(इति)]	
	गुणो (गुण) 1/1	गुण
	इति (अ) = निश्चय ही	निश्चय ही
व	अव्यय	तथा
कोई[1]→कोइ	अव्यय	कोई
पज्जाओ त्तीह	[(पज्जाओ)+(इति)+(इह)]	
	(पज्जाअ) 1/1	पर्याय
	इति (अ) = निश्चय ही	निश्चय ही
	इह (अ) = इस लोक में	इस लोक में
वा	अव्यय	पादपूरक
विणा	अव्यय	बिना
दव्वं[2]	(दव्व) 2/1	द्रव्य
दव्वत्तं	(दव्वत्त) 1/1	द्रव्यता
पुण	अव्यय	चूँकि
भावो	(भाव) 1/1	वास्तविक सत्य/परमार्थ
तम्हा	अव्यय	इसलिए
दव्वं	(दव्व) 1/1	द्रव्य
सयं	अव्यय	स्वयं
सत्ता	(सत्ता) 1/1	सत्ता

अन्वय– इह विणा दव्वं कोई गुणो त्ति व पज्जाओ त्ति णत्थि पुण दव्वत्तं भावो तम्हा दव्वं सयं सत्ता वा।

अर्थ– इस लोक में बिना द्रव्य के निश्चय ही कोई गुण तथा निश्चय ही (कोई) पर्याय नहीं है। चूँकि द्रव्यता वास्तविक सत्य/परमार्थ (है) इसलिए द्रव्य स्वयं सत्ता (अस्तित्व)(है)।

---

1. यहाँ छन्द की मात्रा की पूर्ति हेतु इ→ई किया गया है।
2. 'बिना' के साथ द्वितीया, तृतीया तथा पंचमी विभक्ति का प्रयोग होता है।

19. एवंविहं सहावे दव्वं दव्वत्थपज्जयत्थेहिं।
सदसब्भावणिबद्धं पादुब्भावं सदा लभदि।।

एवंविहं	(एवंविह) 1/1 वि	ऐसा
सहावे[1]	(सहाव) 7/1	स्वभाव के कारण
दव्वं	(दव्व) 1/1	द्रव्य
दव्वत्थपज्जयत्थेहिं	[(दव्वत्थ)-(पज्जयत्थ) 3/2 वि]	द्रव्यदृष्टि और पर्यायदृष्टि के साथ
सदसब्भावणिबद्धं	[(सदसब्भाव) वि अनि - (णिबद्ध) भूकृ 2/1 अनि]	सत्युक्त तथा असत्युक्त
पादुब्भावं	(पादुब्भाव) 2/1	उत्पत्ति को
सदा	अव्यय	सदैव
लभदि	(लभ) व 3/1 सक	करता है

अन्वय– एवंविहं दव्वं सहावे सदसब्भावणिबद्धं पादुब्भावं सदा लभदि दव्वत्थपज्जयत्थेहिं।

अर्थ– ऐसा द्रव्य (परिणमन) स्वभाव के कारण सत्युक्त तथा असत्-युक्त उत्पत्ति को सदैव करता है। (यह दोनों प्रकार की उत्पत्ति) द्रव्यदृष्टि और पर्यायदृष्टि के साथ (अविरोधरूप में) (रहती है)। (उदाहरणार्थ परिणमन स्वभाव के कारण सोना रूपी द्रव्य जब कंकण को उत्पन्न करता है तो द्रव्यदृष्टि से पूर्व में विद्यमान सोना बना रहता है और पर्यायदृष्टि से पूर्व में अविद्यमान कंकण उत्पन्न होता है)।

---

1. कभी-कभी तृतीया विभक्ति के स्थान पर सप्तमी विभक्ति का प्रयोग पाया जाता है। (हेम-प्राकृत-व्याकरणः 3-135)

नोटः सम्पादक द्वारा अनूदित

20. जीवो भवं भविस्सदि णरोऽमरो वा परो भवीय पुणो।
किं दव्वत्तं पजहदि ण चयदि अण्णो कहं हवदि।।

जीवो	(जीव) 1/1	जीव
भवं	(भवं) वकृ 1/1 अनि	(परिणमित) होता हुआ
भविस्सदि	(भव) भवि 3/1 अक	होगा
णरोऽमरो	[(णरो)+(अमरो)]	
	णरो (णर) 1/1	मनुष्य
	अमरो (अमर) 1/1	देव
वा	अव्यय	अथवा
परो	(पर) 1/1 वि	अन्य
भवीय	(भव→भविय→भवीय) संकृ	होकर
पुणो	अव्यय	किन्तु
किं	अव्यय	क्या
दव्वत्तं	(दव्वत्त) 2/1	द्रव्यता को
पजहदि	(पजह) व 3/1 सक	छोड़ देता है
ण	अव्यय	नहीं
चयदि	(चय) व 3/1 सक	छोड़ता है
अण्णो	(अण्ण) 1/1 सवि	अन्य
कहं[1]	अव्यय	कैसे
हवदि	(हव) व 3/1 अक	होता है (होगा)

अन्वय– भवं जीवो णरोऽमरो वा परो भविस्सदि पुणो भवीय किं दव्वत्तं पजहदि ण चयदि अण्णो कहं हवदि।

अर्थ– (परिणमित) होता हुआ जीव मनुष्य, देव अथवा अन्य (नारकी, तिर्यंच) होगा, किन्तु (मनुष्य, देव आदि) होकर क्या (वह) द्रव्यता को छोड़ देता है? (यदि) नहीं छोड़ता है (तो) (वह) अन्य कैसे होगा? अर्थात् वह द्रव्यदृष्टि से जीव रहेगा।

---

1. प्रश्नवाचक शब्दों के साथ वर्तमानकाल का प्रयोग प्रायः भविष्यत्काल के अर्थ में होता है।

21. मणुवो ण हवदि देवो देवो वा माणुसो व सिद्धो वा।
एवं अहोज्जमाणो अणण्णभावं कधं लहदि।।

मणुवो	(मणुव) 1/1	मनुष्य
ण	अव्यय	नहीं
हवदि	(हव) व 3/1 अक	होता है
देवो	(देव) 1/1	देव
देवो	(देव) 1/1	देव
वा	अव्यय	तथा
माणुसो	(माणुस) 1/1	मनुष्य
व	अव्यय	पादपूर्ति
सिद्धो	(सिद्ध) 1/1	सिद्ध
वा	अव्यय	या
एवं	अव्यय	इस प्रकार
अहोज्जमाणो	(अहोज्ज) वकृ 1/1	न होता हुआ
अणण्णभावं	[(अणण्ण) वि-(भाव) 2/1]	अभिन्न भाव को
कधं[1]	अव्यय	कैसे
लहदि	(लह) व 3/1 सक	प्राप्त करता है (करेगा)

अन्वय- मणुवो देवो ण हवदि वा देवो माणुसो वा सिद्धो एवं अहोज्जमाणो अणण्णभावं कधं लहदि व।

अर्थ- (पर्यायदृष्टि से) मनुष्य देव नहीं होता है तथा देव मनुष्य या सिद्ध (नहीं) (होता है)। इस प्रकार न होता हुआ (एक पर्याय से दूसरी पर्याय में) अभिन्न भाव को कैसे प्राप्त करेगा?

---

1. प्रश्नवाचक शब्दों के साथ वर्तमानकाल का प्रयोग प्रायः भविष्यत्काल के अर्थ में होता है।

22. दव्वट्ठिएण सव्वं दव्वं तं पज्जयट्ठिएण पुणो।
हवदि य अण्णमणण्णं तक्काले तम्मयत्तादो।।

दव्वट्ठिएण	(दव्वट्ठिअ) 3/1 वि	द्रव्यार्थिक (नय) से
सव्वं	(सव्व) 1/1 सवि	सब (कोई भी)
दव्वं	(दव्व) 1/1	द्रव्य
तं	(त) 1/1 सवि	वह
पज्जयट्ठिएण	(पज्जयट्ठिअ) 3/1 वि	पर्यायार्थिक (नय) से
पुणो	अव्यय	क्योंकि
हवदि	(हव) व 3/1 अक	होता है
य	अव्यय	और
अण्णमणण्णं	[(अण्णं)+(अण)+(अण्णं)]	
	अण्णं (अण्ण) 1/1 सवि	भिन्न
	अण (अ) = नहीं	नहीं
	अण्णं (अण्ण) 1/1 सवि	भिन्न
तक्काले	(तक्काल) 7/1	उस अवसर पर
तम्मयत्तादो	(तम्मयत्त) 5/1	एकरूपता के कारण

अन्वय– दव्वट्ठिएण सव्वं दव्वं अण्णं अण हवदि य पज्जयट्ठिएण तं अण्णं पुणो तक्काले तम्मयत्तादो।

अर्थ– द्रव्यार्थिक (नय) से (एक द्रव्य की विभिन्न पर्यायों में) कोई भी द्रव्य भिन्न नहीं होता है और पर्यायार्थिक (नय) से वह (द्रव्य) (पर्यायों की भिन्नता के कारण) भिन्न (होता है) क्योंकि (वह द्रव्य उसी पर्याय से) उस अवसर पर एकरूपता के कारण (भिन्न कहा जाता है)।

---

1. 'कारण' व्यक्त करनेवाले शब्दों में पंचमी का प्रयोग होता है।
(प्राकृत-व्याकरण, पृष्ठ 42)

23. अत्थि त्ति य णत्थि त्ति य हवदि अवत्तव्वमिदि पुणो दव्वं।
पज्जायेण दु केण वि तदुभयमादिट्ठमण्णं वा।।

अत्थि त्ति	[(अत्थि)+(इति)]	
	अत्थि (अ) = अस्ति	अस्ति
	इति (अ) = ही	ही
य	अव्यय	और
णत्थि त्ति	[(णत्थि)+(इति)]	
	णत्थि (अ) = नास्ति	नास्ति
	इति (अ) = ही	ही
य	अव्यय	और
हवदि	(हव) व 3/1 अक	होता है
अवत्तव्वमिदि	[(अवत्तव्वं)+(इदि)]	
	अवत्तव्वं (अवत्तव्व) 1/1 वि	अवक्तव्य
	इदि (अ) = ही	ही
पुणो	अव्यय	और
दव्वं	(दव्व) 1/1	द्रव्य
पज्जायेण	(पज्जाय) 3/1	प्रकार से
दु	अव्यय	ही
केण	(क) 3/1 सवि	किसी
वि	अव्यय	भी
तदुभयमादिट्ठमण्णं	[(तदुभयं)+(आदिट्ठं)+(अण्णं)]	
	तदुभयं (तदुभय)1/1 सवि अनि	वह दोनों
	आदिट्ठं (आदिट्ठ)भूकृ 1/1 अनि	कहा गया
	अण्णं (अण्ण) 1/1 सवि	अन्य
वा	अव्यय	तथा

अन्वय- दव्वं केण पज्जायेण अत्थि त्ति य णत्थि त्ति अवत्तव्वमिदि हवदि पुणो तदुभयं दु वा अण्णं वि आदिट्ठं।

अर्थ- (अतः) द्रव्य किसी प्रकार से (द्रव्यार्थिकनय से) 'अस्ति' ही (है) और (द्रव्य) (किसी प्रकार से) (पर्यायार्थिकनय से) 'नास्ति' ही (है) अर्थात् वह द्रव्य पर्याय से एकरूप होने के कारण पर्यायरूप हो गया। (दोनों को एक साथ कहना चाहें तो) (वह द्रव्य) 'अवक्तव्य' ही होता है और (अलग-अलग कहना चाहें तो) वह (द्रव्य) दोनों (अस्ति-नास्ति) ही (है) तथा अन्य (तीन प्रकार से) भी कहा गया (है) अर्थात अस्ति अवक्तव्य, नास्ति अवक्तव्य और अस्ति-नास्ति अवक्तव्य।

नोटः सम्पादक द्वारा अनूदित

24. एसो त्ति णत्थि कोई ण णत्थि किरिया सहावणिव्वत्ता।
किरिया हि णत्थि अफला धम्मो जदि णिप्फलो परमो।।

एसो त्ति	[(एसो)+(इति)]	
	एसो (एत) 1/1 सवि	यह
	इति (अ) = क्योंकि	क्योंकि
णत्थि	अव्यय	नहीं है
कोई[1] → कोइ	अव्यय	कोई
ण णत्थि	अव्यय	सदा
किरिया	(किरिया) 1/1	क्रिया
सहावणिव्वत्ता	[(सहाव)-(णिव्वत्त)	स्वरूप से उत्पन्न
	भूकृ 1/1 अनि]	
किरिया	(किरिया) 1/1	क्रिया
हि	अव्यय	निश्चय ही
णत्थि	अव्यय	नहीं है
अफला	(अफल) 1/1 वि	फलरहित
धम्मो	(धम्म) 1/1	धर्म
जदि	अव्यय	यदि
णिप्फलो	(णिप्फल) 1/1 वि	फलरहित
परमो	(परम) 1/1 वि	परम

अन्वय– एसो त्ति कोई णत्थि सहावणिव्वत्ता किरिया ण णत्थि जदि परमो धम्मो णिप्फलो किरिया हि अफला णत्थि।

अर्थ– (कहना कि) 'यह' (नित्य है) (किन्तु) कोई (मनुष्यादि पर्याय) (नित्य) नहीं है क्योंकि (इन पर्यायों के) स्वरूप से उत्पन्न (राग-द्वेषात्मक) क्रिया सदा (ही) (है)। (अब) यदि परमधर्म (वीतराग भाव से उत्पन्न क्रिया) (संसारी) फलरहित (है) (तो) (राग-द्वेषात्मक) क्रिया निश्चय ही (संसारी) फलरहित नहीं (हो सकती) है।

नोटः सम्पादक द्वारा अनूदित

25. **कम्मं णामसमक्खं सभावमध अप्पणो सहावेण।**
अभिभूय णरं तिरियं णेरइयं वा सुरं कुणदि।।

कम्मं	(कम्मं) 1/1	कर्म
णामसमक्खं	(णामसमक्ख) 1/1 वि	नामसंज्ञावाला/नामक
सभावमध	[(सभावं)+(अध)]	
	सभावं (सभाव) 2/1	स्वभाव को
	अध (अ) = अब	अब
अप्पणो	(अप्प) 6/1	आत्मा के
सहावेण	(सहाव) 3/1	स्वभाव से
अभिभूय	(अभिभूय) संकृ अनि	आच्छादित करके
णरं	(णर) 2/1	मनुष्य
तिरियं	(तिरिय) 2/1	तिर्यंच
णेरइयं	(णेरइय) 2/1	नारकी
वा	अव्यय	अथवा
सुरं	(सुर) 2/1	देव
कुणदि	(कुण) व 3/1 सक	बनाता है

अन्वय– अध णामसमक्खं कम्मं सहावेण अप्पणो सभावं अभिभूय णरं तिरियं णेरइयं वा सुरं कुणदि।

अर्थ– अब नामसंज्ञावाला/नामक कर्म (अपने) स्वभाव से आत्मा के (शुद्ध) स्वभाव को आच्छादित करके मनुष्य, तिर्यंच, नारकी अथवा देव (पर्याय) बनाता है।

26. णरणारयतिरियसुरा जीवा खलु णामकम्मणिव्वत्ता।
ण हि ते लद्धसहावा परिणममाणा सकम्माणि।।

णरणारयतिरियसुरा	[(णर)-(णारय)-(तिरिय)-(सुर) 1/2]	मनुष्य, नारकी, तिर्यंच, देव
जीवा	(जीव) 1/2	जीव
खलु	अव्यय	निश्चय ही
णामकम्मणिव्वत्ता	[(णामकम्म)-(णिव्वत्त) भूकृ 1/2 अनि]	नामकर्म से रचे गये
ण	अव्यय	नहीं
हि	अव्यय	चूँकि
ते	(त) 1/2 सवि	वे
लद्धसहावा	[(लद्ध) भूकृ अनि-(सहाव) 1/2]	प्राप्त किया गया स्वभाव
परिणममाणा	(परिणम) वकृ 1/2	परिणमन करते हुए
सकम्माणि	(स-कम्म) 1/2 वि	कर्मों-सहित

अन्वय– णरणारयतिरियसुरा हि णामकम्मणिव्वत्ता सकम्माणि परिणममाणा ते जीवा खलु लद्धसहावा ण।

अर्थ– चूँकि मनुष्य, नारकी, तिर्यंच और देव (निश्चय ही) नामकर्म से रचे गये (हैं), (इसलिए) कर्मों-सहित परिणमन करते हुए वे जीव (ऐसे हैं) (जिनके द्वारा) (शुद्ध) स्वभाव निश्चय ही प्राप्त नहीं किया गया (है)।

27. जायदि णेव ण णस्सदि खणभंगसमुब्भवे जणे कोई।
जो हि भवो सो विलओ संभवविलय त्ति ते णाणा।।

जायदि	(जा) व 3/1 अक 'य' विकरण	उत्पन्न होता है
णेव	अव्यय	न ही
ण	अव्यय	न
णस्सदि	(णस्स) व 3/1 अक	नष्ट होता है
खणभंगसमुब्भवे	[(खण)-(भंग)- (समुब्भव) 7/1 वि]	क्षण में विनाश और उत्पन्न होनेवाले
जणे	(जण) 7/1	लोक में
कोई[1]→कोइ	अव्यय	कोई
जो	(ज) 1/1 सवि	जो
हि	अव्यय	निश्चय ही
भवो	(भव) 1/1	उत्पत्ति
सो	(त) 1/1 सवि	वह
विलओ	(विलअ) 1/1	विनाश
संभवविलय त्ति	[(संभवविलया)+(इति)] [(संभव)-(विलय) 1/2] इति (अ) = इस प्रकार	उत्पत्ति और नाश इस प्रकार
ते	(त) 1/1 सवि	वे
णाणा	अव्यय	अनेक

अन्वय– खणभंगसमुब्भवे जणे कोई णेव जायदि ण णस्सदि जो भवो सो हि विलओ ते संभवविलय त्ति णाणा।

अर्थ– क्षण में विनाश और उत्पन्न होनेवाले (इस) लोक में कोई (भी) (द्रव्य) न ही उत्पन्न होता है (और) न नष्ट होता है अर्थात् इन दोनों अवस्थाओं में द्रव्य नित्य ही है। (इस लोक में) जो (पर्याय)उत्पत्ति (रूप) (है) वह निश्चय ही विनाश (रूप) (है)। इस प्रकार वे उत्पत्ति (उत्पाद) और नाश (व्यय) अनेक (हैं) अर्थात् पर्यायार्थिक दृष्टि की अपेक्षा उत्पाद और व्यय अनेक हैं।

---

1. यहाँ छन्द की मात्रा की पूर्ति हेतु इ→ई किया गया है।

28. तम्हा दु णत्थि कोई सहावसमवट्ठिदो त्ति संसारे।
संसारो पुण किरिया संसरमाणस्स दव्वस्स।।

तम्हा दु	अव्यय	इस कारण ही
णत्थि	अव्यय	नहीं है
कोई[1] →कोइ	अव्यय	कोई
सहावसमवट्ठिदो त्ति	[(सहावसमवट्ठिदो)+(इति)]	
	[(सहाव)-(समवट्ठिद)	स्वभाव में अवस्थित
	भूकृ 1/1 अनि]	
	इति (अ) = पादपूरक	पादपूरक
संसारे	(संसार) 7/1	संसार में
संसारो	(संसार) 1/1	संसार
पुण	अव्यय	और
किरिया	(किरिया) 1/1	क्रिया
संसरमाणस्स	(संसर) वकृ 6/1	परिभ्रमण करते हुए
दव्वस्स	(दव्व) 6/1	द्रव्य की

अन्वय– तम्हा दु संसारे कोई सहावसमवट्ठिदो त्ति णत्थि पुण संसरमाणस्स दव्वस्स किरिया संसारो।

अर्थ– इस कारण ही संसार में कोई (भी) (जीव) स्वभाव में अवस्थित नहीं है और परिभ्रमण करते हुए (चारों गतियों में भ्रमण करते हुए) (जीव) द्रव्य की क्रिया (ही) संसार (है)।

---

1. यहाँ छन्द की मात्रा की पूर्ति हेतु इ→ई किया गया है।

29. आदा कम्ममलिमसो परिणामं लहदि कम्मसंजुत्तं।
तत्तो सिलिसदि कम्मं तम्हा कम्मं तु परिणामो।।

आदा	(आद) 1/1	आत्मा
कम्ममलिमसो	[(कम्म)-(मलीमस→मलिमस)[1] 1/1 वि]	कर्मों से मलिन
परिणामं	(परिणाम) 2/1	परिणाम को
लहदि	(लह) व 3/1 सक	प्राप्त करता है
कम्मसंजुत्तं	[(कम्म)-(संजुत्त) भूक 2/1 अनि]	कर्मों से युक्त
तत्तो	(त) 5/1 सवि	उससे
सिलिसदि	(सिलीस→सिलिस)[1] व 3/1 अक	बंधता/चिपकता है
कम्मं	(कम्म) 1/1	कर्म
तम्हा	अव्यय	इसलिए
कम्मं	(कम्म) 1/1	कर्म
तु	अव्यय	ही
परिणामो	(परिणाम) 1/1	परिणाम

अन्वय- आदा कम्ममलिमसो कम्मसंजुत्तं परिणामं लहदि तत्तो कम्मं सिलिसदि तम्हा परिणामो तु कम्मं।

अर्थ- (चूँकि) आत्मा (पुद्गल) कर्मों से मलिन है। (इसलिए) कर्मों से युक्त (रागादिक) (अशुद्ध) परिणाम को प्राप्त करता है (तब) उस (अशुद्ध परिणाम) से (पुद्गल) कर्म (आत्मा से) बंधता/चिपकता है इसलिए (अशुद्ध) परिणाम ही (भाव) कर्म (है)।

---

1. छन्द की मात्रा की पूर्ति हेतु 'ई' का 'इ' हुआ है।

30. परिणामो सयमादा सा पुण किरिय त्ति होदि जीवमया।
किरिया कम्म त्ति मदा तम्हा कम्मस्स ण दु कत्ता।।

परिणामो	(परिणाम) 1/1	परिणाम
सयमादा	[(सयं)+(आदा)]	
	सयं (अ) = स्वयं	स्वयं
	आदा (आद) 1/1	आत्मा
सा	(ता) 1/1 सवि	वह
पुण	अव्यय	चूँकि
किरिय• त्ति	[(किरिया)+(इति)]	
	किरिया (किरिया) 1/1	क्रिया
	इति (अ) = इसलिए	इसलिए
होदि	(हो) व 3/1 अक	होती है
जीवमया	(जीवमय (स्त्री.)→ जीवमया) 1/1 वि	आत्मा से युक्त
किरिया	(किरिया) 1/1	क्रिया
* कम्म त्ति	[(कम्मो)+(इति)]	
(मूल शब्द)	कम्मो (कम्म) 1/1	कर्म
	इति (अ) = अतः	अतः
मदा	(मद) भूकृ. 1/1 अनि	मानी गई
तम्हा	अव्यय	इस कारण
कम्मस्स	(कम्म) 6/1	कर्म का
ण	अव्यय	नहीं
दु	अव्यय	निश्चय ही
कत्ता	(कत्तु) 1/1 वि	कर्ता

अन्वय- परिणामो सयमादा पुण सा किरिय त्ति जीवमया होदि किरिया कम्म त्ति मदा तम्हा कम्मस्स कत्ता दु ण।

अर्थ- (यह) (अशुद्ध) परिणाम स्वयं आत्मा (कहा गया है)। चूँकि वह (अशुद्ध) (परिणाम से उत्पन्न) क्रिया (आत्मा से की जाती है) इसलिए आत्मा से युक्त होती है। अतः (अशुद्ध) (परिणाम से उत्पन्न) क्रिया (भी) (भाव) कर्म मानी गई है (जिसका कर्ता आत्मा ही है)। इस कारण (द्रव्य/पुद्गल) कर्म का कर्ता निश्चय ही (आत्मा) नहीं (हो सकता है)।

---

* प्राकृत में किसी भी कारक के लिए मूल संज्ञा शब्द काम में लाया जा सकता है। (पिशलः प्राकृत भाषाओं का व्याकरण, पृष्ठ 517)

• संयुक्त अक्षर के कारण यहाँ किरिया→किरिय हुआ है।

नोटः सम्पादक द्वारा अनूदित

31. परिणमदि चेदणाए आदा पुण चेदणा तिधाभिमदा।
सा पुण णाणे कम्मे फलम्मि वा कम्मणो भणिदा।।

परिणमदि	(परिणम) व 3/1 अक	परिणमन करता है
चेदणाए	(चेदणा) 7/1	चेतना के रूप में
आदा	(आद) 1/1	आत्मा
पुण	अव्यय	और
चेदणा	(चेदणा) 1/1	चेतना
तिधाभिमदा	[(तिधा)+(अभिमदा)]	
	[(तिधा) अ-(अभिमदा)	तीन प्रकार की मानी
	भूकृ 1/1 अनि]	गई
सा	(ता) 1/1 सवि	वह
पुण	अव्यय	फिर
णाणे	(णाण) 7/1	ज्ञान में
कम्मे	(कम्म) 7/1	कर्म में
फलम्मि	(फल) 7/1	फल में
वा	अव्यय	और
कम्मणो	(कम्मणो) 6/1 अनि	कर्म के
भणिदा	(भण→भणिद→भणिदा)	कही गई
	भूकृ 1/1	

अन्वय– आदा चेदणाए परिणमदि पुण सा चेदणा तिधाभिमदा पुण णाणे कम्मे वा कम्मणो फलम्मि भणिदा।

अर्थ– आत्मा चेतना के रूप में परिणमन करता है और वह चेतना तीन प्रकार की मानी गई (है)। (वह) फिर ज्ञान में (हो) (तो) (ज्ञान चेतना), कर्म में (हो) (तो) (कर्म चेतना) और कर्म के फल में (हो) (तो) (कर्मफल चेतना) कही गई (है)।

32. णाणं अट्ठवियप्पो कम्मं जीवेण जं समारद्धं।
तमणेगविधं भणिदं फलं ति सोक्खं व दुक्खं वा।।

णाणं	(णाण) 1/1	ज्ञान
अट्ठवियप्पो	[(अट्ठ)-(वियप्प) 1/1]	पदार्थ का विचार
कम्मं	(कम्म) 1/1	कार्य
जीवेण	(जीव) 3/1	जीव के द्वारा
जं	(ज) 1/1 सवि	जो
समारद्धं	(समारद्ध) भूकृ 1/1 अनि	प्रारम्भ किया गया
तमणेगविधं	[(तं)+(अणेगविधं)]	
	तं (त) 1/1 सवि	वह
	अणेगविधं (अणेगविधं) द्वितीयार्थक अव्यय	अनेक प्रकार से
भणिदं	(भण→भणिद) भूकृ 1/1	कहा गया
फलं ति	[(फलं)+(इति)]	
	फलं (फल) 1/1	फल
	इति (अ) = इस प्रकार	इस प्रकार
सोक्खं	(सोक्ख) 1/1	सुख
व	अव्यय	और
दुक्खं	(दुक्ख) 1/1	दुःख
वा	अव्यय	अथवा

अन्वय– अट्ठवियप्पो णाणं जीवेण जं कम्मं समारद्धं तं अणेगविधं भणिदं व फलं ति सोक्खं वा दुक्खं।

अर्थ– पदार्थ का विचार ज्ञान (है)। जीव के द्वारा जो कार्य प्रारम्भ किया गया (है) वह अनेक प्रकार से कहा गया (है) और (उस) (कार्य का) फल सुख अथवा दुःख (है)। इस प्रकार (वर्णित) (है)।

33. **अप्पा परिणामप्पा परिणामो णाणकम्मफलभावी।**
तम्हा णाणं कम्मं फलं च आदा मुणेदव्वो।।

अप्पा	(अप्प) 1/1	आत्मा
परिणामप्पा	(परिणामप्प) 1/1 वि	परिणाम स्वभाववाला
परिणामो	(परिणाम) 1/1	परिणाम
णाणकम्मफलभावी	[(णाण)-(कम्म)-(फल)-भावि) 1/1 वि]	ज्ञान-कर्म-कर्मफलरूप में घटित
तम्हा	अव्यय	इसलिए
णाणं	(णाण) 1/1	ज्ञान
कम्मं	(कम्म) 1/1	कर्म
फलं	(फल) 1/1	फल
च	अव्यय	और
आदा	(आद) 1/1	आत्मा
मुणेदव्वो	(मुण) विधिकृ 1/1 सक	समझा जाना चाहिये

अन्वय- अप्पा परिणामप्पा परिणामो णाणकम्मफलभावी तम्हा णाणं कम्मं फलं च आदा मुणेदव्वो।

अर्थ- आत्मा परिणाम स्वभाववाला है। परिणाम ज्ञान-कर्म-कर्मफलरूप में घटित (है)। इसलिए ज्ञान-कर्म और कर्मफल आत्मा समझा जाना चाहिये।

34. कत्ता करणं कम्मं फलं च अप्प त्ति णिच्छिदो समणो।
परिणमदि णेव अण्णं जदि अप्पाणं लहदि सुद्धं।।

कत्ता	(कत्तु) 1/1 वि	करनेवाला
करणं	(करण) 1/1	साधन
कम्मं	(कम्म) 1/1	कर्म
फलं	(फल) 1/1	फल
च	अव्यय	और
अप्प त्ति	[(अप्पा)+(इति)]	
	अप्पा (अप्प) 1/1	आत्मा
	इति (अ) = इस प्रकार	इस प्रकार
णिच्छिदो	(णिच्छ→णिच्छिद) भूकृ 1/1	निश्चय किया हुआ
समणो	(समण) 1/1	श्रमण
परिणमदि	(परिणम) व 3/1 सक	अपनाता है
णेव	अव्यय	नहीं
अण्णं	(अण्ण) 2/1 सवि	अन्य को
जदि	अव्यय	यदि
अप्पाणं	(अप्पाण) 2/1	आत्मा को
लहदि	(लह) व 3/1 सक	प्राप्त कर लेता है
सुद्धं	(सुद्ध) 2/1 वि	शुद्ध

अन्वय– कत्ता करणं कम्मं च फलं अप्प त्ति णिच्छिदो समणो जदि अण्णं णेव परिणमदि सुद्धं अप्पाणं लहदि।

अर्थ– (जो) करनेवाला (है), (जो) (करने का) साधन (है), (जो) कर्म (किया जाय) और (जो कर्म करने का) फल (है) (वह) आत्मा (है)। इस प्रकार निश्चय किया हुआ श्रमण यदि (इससे) अन्य (दृष्टि) को नहीं अपनाता (है) (तो) (वह) शुद्धात्मा को प्राप्त कर लेता (है)।

35. दव्वं जीवमजीवं जीवो पुण चेदणोवजोगमओ।
पोग्गलदव्वप्पमुहं अचेदणं हवदि अज्जीवं।।

दव्वं	(दव्व) 1/1	द्रव्य
जीवमजीवं	[(जीवं)+(अजीवं)]	
	जीवं (जीव) 1/1	जीव
	अजीवं (अजीव) 1/1 वि	जीव से वियुक्त
जीवो	(जीव) 1/1	जीव
पुण	अव्यय	फिर
चेदणोवजोगमओ	[(चेदणा)+(उवजोगमओ)]	
	[(चेदणा)-(उवजोगमअ)	चेतनामय और
	1/1 वि]	उपयोगमय
पोग्गलदव्वप्पमुहं	[(पोग्गल)-(दव्वप्पमुह)-	पुद्गल द्रव्य-सहित
	1/1 वि]	
अचेदणं	(अचेदण) 1/1 वि	चेतना-रहित
हवदि	(हव) व 3/1 अक	होता है
अज्जीवं	(अज्जीव) 1/1 वि	अजीव

अन्वय– दव्वं जीवमजीवं पुण जीवो चेदणोवजोगमओ पोग्गलदव्वप्पमुहं अज्जीवं अचेदणं हवदि।

अर्थ– द्रव्य जीव और जीव से वियुक्त (अजीव) (दो प्रकार का है)। फिर (इन दोनों में से) जीव (द्रव्य) चेतनामय और उपयोगमय (भावरूप) (है) (तथा) पुद्गल द्रव्य-सहित अजीव (द्रव्य-समूह) चेतना-रहित होता है।

36. पोग्गलजीवणिबद्धो धम्माधम्मत्थिकायकालड्ढो।
वट्टदि आगासे जो लोगो सो सव्वकाले दु।।

पोग्गलजीवणिबद्धो	[(पोग्गल)-(जीव)-(णिबद्ध) भूकृ 1/1 अनि]	पुद्गल और जीव से युक्त
धम्माधम्मत्थिकाय-कालड्ढो	[(धम्म)+(अधम्म)+(अत्थिकाय)+(कालड्ढो)]	
	[(धम्म)-(अधम्म)-(अत्थिकाय)-(कालड्ढ) 1/1 वि]	धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय और काल-सहित
वट्टदि	(वट्ट) व 3/1 अक	होता है
आगासे	(आगास) 7/1	आकाश में
जो	(ज) 1/1 सवि	जो
लोगो	(लोग) 1/1	लोक
सो	(त) 1/1 सवि	वह
सव्वकाले	[(सव्व) सवि-(काल) 7/1]	सर्वकाल में
दु	अव्यय	ही

अन्वय- जो आगासे धम्माधम्मत्थिकायकालड्ढो पोग्गलजीव-णिबद्धो वट्टदि सो दु सव्वकाले लोगो।

अर्थ- जो (क्षेत्र) आकाश (द्रव्य) में धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय और काल-सहित पुद्गल और जीव से युक्त है वह ही सर्वकाल (अतीत, अनागत और वर्तमान) में 'लोक' (कहा जाता है)।

37. उप्पादट्ठिदिभंगा पोग्गलजीवप्पगस्स लोगस्स।
परिणामादो जायंते संघादादो व भेदादो।।

उप्पादट्ठिदिभंगा	[(उप्पाद)-(ट्ठिदि)-(भंग) 1/2]	उत्पाद, स्थिति और नाश
पोग्गलजीवप्पगस्स[1]	[(पोग्गल)-(जीवप्पग) 6/1 वि]	पुद्गल और जीव से संबंधित
लोगस्स[1]	(लोग) 6/1	लोक में
परिणामादो	(परिणाम) 5/1	परिणमन से
जायंते	(जा) व 3/2 अक 'य' विकरण	उत्पन्न होते हैं
संघादादो	(संघाद) 5/1	संयोजन से
व	अव्यय	और
भेदादो	(भेद) 5/1	वियोजन से

अन्वय– पोग्गलजीवप्पगस्स लोगस्स परिणामादो संघादादो व भेदादो उप्पादट्ठिदिभंगा जायंते।

अर्थ– पुद्गल और जीव से संबंधित लोक में परिणमन से, संयोजन से और वियोजन से उत्पाद, स्थिति (ध्रौव्य) और नाश (व्यय) उत्पन्न होते हैं अर्थात् पुद्गल और जीव में उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य दो प्रकार से होते हैं-(1) परिणमन से (2) संयोजन और वियोजन से। उदाहरणार्थ- (1) बाल्यावस्था, युवावस्था और वृद्धावस्था में पुद्गल-जीव में परिणमन से उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य होता है। (2) लोक में विभिन्न प्रकार के जीवों के संयोजन और वियोजन से तथा पुद्गल परमाणुओं के आपस में संयोजन और वियोजन से उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य होता है।

---

1. कभी-कभी सप्तमी विभक्ति के स्थान पर षष्ठी विभक्ति का प्रयोग पाया जाता है। (हेम-प्राकृत-व्याकरणः 3-134)

नोटः सम्पादक द्वारा अनूदित

38. लिंगेहिं जेहिं दव्वं जीवमजीवं च हवदि विण्णादं।
तेऽतब्भावविसिट्ठा मुत्तामुत्ता गुणा णेया।।

लिंगेहिं	(लिंग) 3/2	लक्षणों से
जेहिं	(ज) 3/2 सवि	जिन
दव्वं	(दव्व) 1/1	द्रव्य
जीवमजीवं	[(जीवं)+(अजीवं)]	
	जीवं (जीव) 1/1	जीव
	अजीवं (अजीव) 1/1 वि	जीव से वियुक्त/रहित
च	अव्यय	और
हवदि	(हव) व 3/1 अक	होता है
विण्णादं	(विण्णाद) भूकृ 1/1 अनि	ज्ञात
तेऽतब्भावविसिट्ठा	[(ते)+(अतब्भावविसिट्ठा)]	
	[(ते)-(अतब्भाव)-	वे भिन्न
	(विसिट्ठ) भूकृ 1/2 अनि]	लक्षणों से युक्त
मुत्तामुत्ता	[(मुत्त)+(अमुत्ता)]	
	[(मुत्त)-(अमुत्त) 1/2 वि]	मूर्त और अमूर्त
गुणा	(गुण) 1/2	गुण
णेया	(णेय) विधिकृ 1/2 अनि	समझे जाने चाहिये

अन्वय- जेहिं लिंगेहिं जीवं च अजीवं दव्वं विण्णादं हवदि तेऽतब्भावविसिट्ठा मुत्तामुत्ता गुणा णेया।

अर्थ- जिन लक्षणों से जीव और जीव से वियुक्त/रहित द्रव्य ज्ञात होते हैं, वे भिन्न लक्षणों से युक्त मूर्त और अमूर्त गुण समझे जाने चाहिये।

39. मुत्ता इंदियगेज्झा पोग्गलदव्वप्पगा अणेगविधा।
दव्वाणममुत्ताणं गुणा अमुत्ता मुणेदव्वा।।

मुत्ता	(मुत्त) 1/2 वि	मूर्त
इंदियगेज्झा	[(इंदिय)-(गेज्झ)	इंद्रियों से ग्रहण करने
	विधिकृ 1/2 अनि]	योग्य
पोग्गलदव्वप्पगा	[(पोग्गल)-(दव्वप्पग)-	पुद्गल द्रव्यों से
	1/2 वि]	संबंधित
अणेगविधा	[(अणेग) वि-(विध) 1/2]	अनेक प्रकार के
दव्वाणममुत्ताणं	[(दव्वाणं)+(अमुत्ताणं)]	
	दव्वाणं (दव्व) 6/2	द्रव्यों के
	अमुत्ताणं (अमुत्त) 6/2 वि	अमूर्त
गुणा	(गुण) 1/2	गुण
अमुत्ता	(अमुत्त) 1/2 वि	अमूर्त
मुणेदव्वा	(मुण) विधिकृ 1/2	समझे जाने चाहिये

अन्वय- अमुत्ताणं दव्वाणं गुणा अमुत्ता मुणेदव्वा अणेगविधा पोग्गलदव्वप्पगा मुत्ता इंदियगेज्झा।

अर्थ- अमूर्त द्रव्यों के गुण अमूर्त समझे जाने चाहिये। (वे) अनेक प्रकार के (हैं)। पुद्गल द्रव्यों से संबंधित (जो) मूर्त (गुण) (होते हैं) (वे) इन्द्रियों से ग्रहण करने योग्य (हैं)।

40. वण्णरसगंधफासा विज्जंते पोग्गलस्स सुहुमादो।
पुढवीपरियंतस्स य सद्दो सो पोग्गलो चित्तो।।

वण्णरसगंधफासा	[(वण्ण)-(रस)-(गंध)-(फास) 1/2]	वर्ण, रस, गंध और स्पर्श
विज्जंते	(विज्ज) व 3/2 अक	विद्यमान होते हैं
पोग्गलस्स[1]	(पोग्गल) 6/1	पुद्गल में
सुहुमादो	(सुहुम) 5/1 वि	सूक्ष्म से
पुढवीपरियंतस्स	[(पुढवि)-(परियंत) 6/1]	महास्थूल तक के
य	अव्यय	और
सद्दो	(सद्द) 1/1	शब्द
सो	(त) 1/1 सवि	वह
पोग्गलो	(पोग्गल) 1/1	पुद्गल
चित्तो	(चित्त) 1/1 वि	अनेक प्रकार का

अन्वय- सुहुमादो पुढवीपरियंतस्स पोग्गलस्स वण्णरसगंधफासा विज्जंते य चित्तो सद्दो सो पोग्गलो।

अर्थ- सूक्ष्म (पुद्गल परमाणु) से महास्थूल तक के पुद्गल (द्रव्य) में वर्ण, रस, गंध और स्पर्श (गुण) विद्यमान होते हैं, और (जो) अनेक प्रकार का (ध्वनि उत्पादक) शब्द (है) अर्थात् अनेक प्रकार की ध्वनि (है) वह पुद्गल (पर्याय) (है) (न कि पुद्गल का गुण)।

---

1. कभी-कभी सप्तमी विभक्ति के स्थान पर षष्ठी विभक्ति का प्रयोग पाया जाता है। (हेम-प्राकृत-व्याकरणः 3-134)

41. आगासस्सवगाहो धम्मद्दव्वस्स गमणहेदुत्तं।
धम्मेदरदव्वस्स दु गुणो पुणो ठाणकारणदा।।

आगासस्सवगाहो	[(आगासस्स)+(अवगाहो)]	
	आगासस्स (आगास) 6/1	आकाश का
	अवगाहो (अवगाह) 1/1	अवगाहन (जगह देने का कारण)
धम्मद्दव्वस्स	[(धम्म)-(द्दव्व) 6/1]	धर्म द्रव्य का
गमणहेदुत्तं	[(गमण)-(हेदुत्त) 1/1]	गमन में कारणता
धम्मेदरदव्वस्स	[(धम्म)+(इदरदव्वस्स)]	
	[(धम्म)-(इदर) वि-(दव्व) 6/1]	धर्म से भिन्न द्रव्य का
दु	अव्यय	और
गुणो	(गुण) 1/1	गुण
पुणो	अव्यय	और
ठाणकारणदा	[(ठाण)-(कारणदा) 1/1]	स्थिति में कारणता

अन्वय- आगासस्सवगाहो दु धम्मद्दव्वस्स गमणहेदुत्तं पुणो धम्मेदरदव्वस्स गुणो ठाणकारणदा।

अर्थ- आकाश (द्रव्य) का (गुण) अवगाहन अर्थात् सब द्रव्यों को जगह देने का कारण (है) और धर्म द्रव्य का (गुण) गमनमें कारणता और धर्म से भिन्न अर्थात् अधर्म द्रव्य का गुण स्थिति (ठहरने) में कारणता (है)।

42. कालस्स वट्टणा से गुणोवओगो त्ति अप्पणो भणिदो।
णेया संखेवादो गुणा हि मुत्तिप्पहीणाणं।।

कालस्स	(काल) 6/1	काल का
वट्टणा	(वट्टणा) 1/1	परिणमन में कारण
से	अव्यय	वाक्यालंकार
गुणोवओगो त्ति	[(गुण)+(उवओगो)+(इति)]	
	[(गुण)-(उवओग) 1/1]	गुण, उपयोग
	इति (अ) = निश्चय ही	निश्चय ही
अप्पणो	(अप्प) 6/1	आत्मा का
भणिदो	(भण→भणिद) भूकृ 1/1	कहा गया
णेया	(णेय) विधिकृ 1/2 अनि	समझे जाने चाहिये
संखेवादो	(संखेव) 5/1	संक्षेप से
गुणा	(गुण) 1/2	गुण
हि	अव्यय	ही
मुत्तिप्पहीणाणं	[(मुत्ति)-(प्पहीण) 6/2 वि]	मूर्ति-रहित

अन्वय- कालस्स वट्टणा से अप्पणो गुणोवओगो त्ति भणिदो संखेवादो हि गुणा मुत्तिप्पहीणाणं णेया।

अर्थ- (तथा) काल (द्रव्य) का (गुण) परिणमन में कारण है। आत्मा का गुण निश्चय ही उपयोग (चेतनायुक्त भावात्मकता) कहा गया (है)। संक्षेप से (ये) ही गुण मूर्तिरहित (अमूर्त) (द्रव्यों) के समझे जाने चाहिये।

43. जीवा पोग्गलकाया धम्माधम्मा पुणो य आगासं।
सपदेसेहिं असंखा णत्थि पदेस त्ति कालस्स।।

जीवा	(जीव) 1/2	जीव
पोग्गलकाया	[(पोग्गल)-(काय) 1/2]	पुद्गल-राशि
धम्माधम्मा	[(धम्म)+(अधम्मा)]	
	[(धम्म)-(अधम्म) 1/2]	धर्म तथा अधर्म
पुणो	अव्यय	और
य	अव्यय	और
आगासं	(आगास) 1/1	आकाश
सपदेसेहिं	(स-पदेस) 3/2 वि	प्रदेश-सहित
असंखा	(असंख) 1/2 वि	असंख्य
णत्थि	अव्यय	नहीं है
पदेस त्ति	[(पदेसो)+(इति)]	
	पदेसो (पदेस) 1/1	प्रदेश
	इति (अ) =	पादपूरक
कालस्स	(काल) 6/1	काल के

अन्वय- जीवा पोग्गलकाया धम्माधम्मा पुणो आगासं सपदेसेहिं य असंखा कालस्स पदेस त्ति णत्थि।

अर्थ- जीव, पुद्गल-राशि, धर्म, अधर्म और आकाश- (ये) प्रदेश-सहित (होते हैं)। (वे) असंख्य (होते हैं) और काल के (अनेक) प्रदेश नहीं है अर्थात् एक प्रदेश है।

44. लोगालोगेसु णभो धम्माधम्मेहि आददो लोगो।
सेसे पडुच्च कालो जीवा पुण पोग्गला सेसा।।

लोगालोगेसु	[(लोग)+(अलोगेसु)]	
	[(लोग)-(अलोग) 7/2]	लोक और अलोक में
णभो	(णभ) 1/1	आकाश
धम्माधम्मेहि	[(धम्म)+(अधम्मेहि)]	
	[(धम्म)-(अधम्म) 3/2]	धर्म और अधर्म से
आददो	(आदद) भूकृ 1/1 अनि	व्याप्त
लोगो	(लोग) 1/1	लोक
सेसे	(सेस) 2/2 वि	शेषों को
पडुच्च	अव्यय	अवलम्बन करके
कालो	(काल) 1/1	काल
जीवा	(जीव) 1/2	जीव
पुण	अव्यय	और
पोग्गला	(पोग्गल) 1/2	पुद्गल
सेसा	(सेस) 1/2 वि	शेष

अन्वय– णभो लोगालोगेसु लोगो धम्माधम्मेहि आददो सेसा जीवा पुण पोग्गला कालो सेसे पडुच्च।

अर्थ– आकाश (द्रव्य) लोक और अलोक में (रहता है)। लोक धर्म और अधर्म से व्याप्त (है)। शेष (द्रव्य) जीव और पुद्गल (भी) (लोक में) (है)। काल शेषों (जीव और पुद्गल के परिवर्तन) को अवलम्बन करके (जाना जाता है)।

45. जध ते णभप्पदेसा तधप्पदेसा हवंति सेसाणं।
अपदेसो परमाणू तेण पदेसुब्भवो भणिदो।।

जध	अव्यय	जैसे
ते	(त) 1/2 सवि	वे
णभप्पदेसा	[(णभ)-(प्पदेस) 1/2]	आकाश के प्रदेश
तध	अव्यय	वैसे ही
प्पदेसा	(प्पदेस) 1/2	प्रदेश
हवंति	(हव) व 3/2 अक	होते हैं
सेसाणं	(सेस) 6/2 वि	शेषों के
अपदेसो	(अपदेस) 1/1 वि	प्रदेशरहित
परमाणू	(परमाणु) 1/1	परमाणु
तेण	(त) 3/1 सवि	उससे
पदेसुब्भवो	[(पदेस)+(उब्भव)]	
	[(पदेस)-(उब्भव) 1/1]	प्रदेशों का उद्भव
भणिदो	(भण→भणिद) भूक 1/1	कहा गया

अन्वय- जध ते णभप्पदेसा तध सेसाणं प्पदेसा हवंति परमाणू अपदेसो तेण पदेसुब्भवो भणिदो।

अर्थ- जैसे वे (कहे गये) आकाश के प्रदेश (हैं) वैसे ही शेषों (धर्म, अधर्म और जीव) के प्रदेश होते हैं। परमाणु (बहु) प्रदेशरहित अर्थात् एक प्रदेशी (होता है)। उससे (पुद्गल के) प्रदेशों का उद्भव कहा गया (है)।

46. समओ दु अप्पदेसो पदेसमेत्तस्स दव्वजादस्स।
वदिवददो सो वट्टदि पदेसमागासदव्वस्स।।

समओ	(समअ) 1/1	समय
दु	अव्यय	तो
अप्पदेसो	(अप्पदेसो) 1/1 वि	प्रदेशरहित
पदेसमेत्तस्स	(पदेसमेत्त) 6/1 वि	प्रदेशमात्र(परमाणु) की
दव्वजादस्स	[(दव्व)-(जाद) भूक 6/1]	पुद्गल द्रव्य से उत्पन्न
वदिवददो	(वदिवदद) 1/1 वि	मंदगति से गमन करनेवाला
सो	(त) 1/1 सवि	वह
वट्टदि	(वट्ट) व 3/1 अक	है
पदेसमागासदव्वस्स	[(पदेसं)+(आगासदव्वस्स)]	
	पदेसं[1](पदेस) 2/1	प्रदेश में
	[(आगास)-(दव्व) 6/1]	आकाश द्रव्य के

अन्वय- आगासदव्वस्स पदेसं दव्वजादस्स पदेसमेत्तस्स वदिवददो दु सो समओ अप्पदेसो वट्टदि।

अर्थ- आकाशद्रव्य के (एक) प्रदेश में (एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश तक) पुद्गल द्रव्य से उत्पन्न प्रदेशमात्र (परमाणु) की (अवस्था) (जब) मंदगति से गमन करनेवाली (होती है) तो वह (गमन-अवधि) समय है (जो) प्रदेशरहित अर्थात् एक प्रदेशी होता है।

---

1. कभी-कभी सप्तमी विभक्ति के स्थान पर द्वितीया विभक्ति का प्रयोग पाया जाता है। (हेम-प्राकृत-व्याकरणः 3-137)

47. वदिवददो तं देसं तस्सम समओ तदो परो पुव्वो।
जो अत्थो सो कालो समओ उप्पण्णपद्धंसी।।

वदिवददो	(वदिवदद) 1/1 वि	मंदगति से चलनेवाला
तं	अव्यय	इसलिए
देसं[1]	(देस) 2/1	प्रदेश में
तस्सम(मूल शब्द)	(तस्सम) 1/1 वि अनि	उसके समान
समओ	(समअ) 1/1	समय
तदो	अव्यय	उससे
परो	(पर) 1/1 वि	आगे
पुव्वो	(पुव्व) 1/1 वि	पहले
जो	(ज) 1/1 सवि	जो
अत्थो	(अत्थ) 1/1	पदार्थ
सो	(त) 1/1 सवि	वह
कालो	(काल) 1/1	काल
समओ	(समअ) 1/1	समय-पर्याय
उप्पण्णपद्धंसी	[(उप्पण्ण) भूकृ अनि-(पद्धंसी) 1/1 वि]	उत्पन्न और नाशवान

अन्वय– तं देसं वदिवददो समओ तस्सम तदो पुव्वो परो जो अत्थो सो कालो समओ उप्पण्णपद्धंसी।

अर्थ– इसलिए (आकाश के) प्रदेश में मंदगति से चलनेवाला (परमाणु) (जो गमन अवधि लेता है) (वह) समय (है) (जो) उस (परमाणु) के समान (एक प्रदेशी) (है) उससे पहले (और) आगे जो (आधारभूत) पदार्थ है, वह काल (द्रव्य) (है)। (उसकी) समय-पर्याय उत्पन्न (होती है) और नाशवान (होती है)।

---

1. कभी-कभी सप्तमी विभक्ति के स्थान पर द्वितीया विभक्ति का प्रयोग पाया जाता है। (हेम-प्राकृत-व्याकरणः 3-137)

48. आगासमणुणिविट्ठं आगासपदेससण्णया भणिदं।
सव्वेसिं च अणूणं सक्कादि तं देदुमवगासं।।

आगासमणुणिविट्ठं	[(आगासं)+(अणुणिविट्ठं)]	
	आगासं (आकाश) 1/1	आकाश
	[(अणु)-(णिविट्ठ)	परमाणु से नियंत्रित/
	भूकृ 1/1 अनि]	रोका हुआ
आगासपदेससण्णया	[(आगास)-(पदेस)-	आकाश-प्रदेश
	(सण्णया) 3/1अनि]	नाम से
भणिदं	(भण→भणिद) भूकृ 1/1	कहा गया
सव्वेसिं	(सव्व) 4/2 सवि	सब
च	अव्यय	और
अणूणं	(अणु) 4/2	परमाणुओं के लिए
सक्कादि[1]	(सक्क) व 3/1 अक	समर्थ होता है
तं	(त) 1/1 सवि	वह
देदुमवगासं	[(देदुं)+(अवगासं)]	
	देदुं (दे) हेकृ	देने के लिए
	अवगासं (अवगास) 2/1	अवकाश

अन्वय- अणुणिविट्ठं आगासं आगासपदेससण्णया भणिदं च तं सव्वेसिं अणूणं अवगासं देदुं सक्कादि।

अर्थ- परमाणु से नियंत्रित/रोका हुआ (जो) आकाश (द्रव्य) (है), (वह) आकाश (एक) प्रदेश नाम से कहा गया (है) और वह (आकाश-प्रदेश) सब परमाणुओं के लिए अवकाश देने के लिए समर्थ होता है।

---

1. वर्तमानकाल के प्रत्ययों के होने पर कभी-कभी अन्त्यस्थ 'अ' के स्थान पर 'आ' हो जाता है। (हेम-प्राकृत-व्याकरणः 3-158 वृत्ति)।

49. एक्को व दुगे बहुगा संखातीदा तदो अणंता य।
दव्वाणं च पदेसा संति हि समय त्ति कालस्स।।

एक्को	(एक्क) 1/1 वि	एक
व	अव्यय	अथवा
दुगे	(दुग) 1/2 वि	दो
बहुगा	(बहुग) 1/2 वि	बहुत
संखातीदा	[(संखा)+(अतीदा)]	
	[(संखा)-(अतीद)	संख्या से परे
	भूकृ 1/2 अनि]	(असंख्यात)
तदो	अव्यय	उसके बाद
अणंता	(अणंत) 1/2 वि	अनंत
य	अव्यय	और
दव्वाणं	(दव्व) 6/2	द्रव्यों के
च	अव्यय	तथा
पदेसा	(पदेस) 1/2	प्रदेश
संति	(संति) व 3/2 अक अनि	होते हैं
हि	अव्यय	निश्चय ही
समय त्ति	[(समयो)+(इति)]	
	समयो (समय) 1/1	समय-पर्याय
	इति (अ) = ही	ही
कालस्स	(काल) 6/1	काल की

अन्वय– दव्वाणं एक्को दुगे व बहुगा य संखातीदा च तदो हि अणंता पदेसा संति कालस्स समय त्ति।

अर्थ– द्रव्यों के एक, दो अथवा बहुत (संख्यात) और संख्या से परे (असंख्यात) तथा उसके बाद निश्चय ही अनंत प्रदेश होते हैं। काल (द्रव्य) की (अभिव्यक्ति) समय-पर्याय (एक प्रदेशी) ही (कही गई है)।

50. उप्पादो पद्धंसो विज्जदि जदि जस्स एकसमयम्हि।
समयस्स सो वि समओ सभावसमवट्ठिदो हवदि।।

उप्पादो	(उप्पाद) 1/1	उत्पाद
पद्धंसो	(पद्धंस) 1/1	नाश
विज्जदि	(विज्ज) व 3/1 अक	रहता है
जदि	अव्यय	यदि
जस्स	(ज) 6/1 सवि	जिसका
एकसमयम्हि	[(एक)-(समय) 7/1]	एकसमय में
समयस्स	(समय) 6/1	समय का
सो	(त) 1/1 सवि	वह
वि	अव्यय	ही
समओ	(समअ) 1/1	समय
सभावसमवट्ठिदो	[(सभाव)-(समवट्ठिद) भूकृ 1/1 अनि]	अस्तित्ववान पदार्थ पर अवस्थित
हवदि	(हव) व 3/1 अक	होता है

अन्वय- जस्स समयस्स एकसमयम्हि जदि उप्पादो पद्धंसो विज्जदि सो समओ सभावसमवट्ठिदो वि हवदि।

अर्थ-जिस समय का एकसमय में यदि उत्पाद (और) नाश रहता है (तो) वह समय अस्तित्ववान पदार्थ पर ही अवस्थित (टिका हुआ) होता है।

51. एगम्हि संति समये संभवठिदिणाससण्णिदा अट्ठा।
समयस्स सव्वकालं एस हि कालाणुसब्भावो।।

एगम्हि	(एग) 7/1 वि	एक
संति	(संति) व 3/2 अक अनि	होते हैं
समये	(समय) 7/1	समय में
संभवठिदिणास-	[(संभव)-(ठिदि)-(णास)-	उत्पत्ति, स्थिति, नाश
सण्णिदा	(सण्णिद) 1/2 वि]	नामक
अट्ठा	(अट्ठ) 1/2	आशय
समयस्स	(समय) 6/1	काल के
सव्वकालं[1]	[(सव्व) सवि-(काल) 2/1]	सबकाल में
एस	(एत) 1/1 सवि	यह
हि	अव्यय	ही
कालाणुसब्भावो	[(कालाणु)-(सब्भाव) 1/1]	कालाणु का अस्तित्व

अन्वय– एगम्हि समये समयस्स संभवठिदिणाससण्णिदा अट्ठा संति एस हि कालाणुसब्भावो सव्वकालं।

अर्थ– एक समय में काल (द्रव्य) के उत्पत्ति (उत्पाद), स्थिति (ध्रौव्य), नाश (व्यय) नामक आशय (सदा) होते हैं। यह (उत्पाद, व्यय, ध्रौव्य) ही (बताता है कि) कालाणु• का अस्तित्व सबकाल में (रहता है)।

---

1. कभी-कभी सप्तमी विभक्ति के स्थान पर द्वितीया विभक्ति का प्रयोग पाया जाता है। (हेम-प्राकृत-व्याकरणः 3-137)

• 'काल' एक प्रदेशी माना गया है, इसलिये इसे 'कालाणु' कहा गया है।

52. जस्स ण संति पदेसा पदेसमेत्तं तु तच्चदो णादुं।
सुण्णं जाण तमत्थं अत्थंतरभूदमत्थीदो।।

जस्स	(ज) 6/1 सवि	जिस (द्रव्य) के
ण	अव्यय	नहीं
संति	(संति) व 3/2 अक अनि	होते हैं
पदेसा	(पदेस) 1/2	अनेक प्रदेश
पदेसमेत्तं	(पदेसमेत्त) 1/1 वि	प्रदेशमात्र
तु	अव्यय	और
तच्चदो	(तच्चदो) अव्यय	यथार्थरूप से
	पंचमी अर्थक 'दो' प्रत्यय	
णादुं	(णा) हेकृ	जानने के लिए
सुण्णं	(सुण्ण) 2/1 वि	शून्य
जाण	(जाण) विधि 2/1 सक	जानो
तमत्थं	[(तं)+(अत्थं)]	
	तं (त) 2/1 सवि	उस
	अत्थं (अत्थ) 2/1	द्रव्य को
अत्थंतरभूदमत्थीदो	[(अत्थंतरभूदं)+(अत्थीदो)]	
	[(अत्थंतर)-(भूद) भूकृ 1/1]	विपरीत अर्थ लिये हुए
	अत्थीदो (अत्थि) 5/1	अस्तित्व से

अन्वय- जस्स पदेसा ण संति तु पदेसमेत्तं तच्चदो णादुं तमत्थं सुण्णं जाण अत्थीदो अत्थंतरभूदं।

अर्थ- जिस (द्रव्य) के अनेक प्रदेश नहीं हैं, और (एक) प्रदेशमात्र भी यथार्थरूप से जानने के लिए (नहीं है) (तो) उस द्रव्य को (तुम) शून्य (अस्तित्व रहित) जानो (क्योंकि) (वह) अस्तित्व (उत्पाद, व्यय, ध्रौव्य) से विपरीत अर्थ लिये हुए (कोई वस्तु है) अर्थात् ऐसी कोई वस्तु नहीं हो सकती है।

53. सपदेसेहिं समग्गो लोगो अट्ठेहिं णिट्ठिदो णिच्चो।
जो तं जाणदि जीवो पाणचदुक्केण संबद्धो।।

सपदेसेहिं	(स-पदेस) 3/2 वि	अपने प्रदेशों-सहित
समग्गो	(समग्ग) 1/1 वि	समस्त
लोगो	(लोग) 1/1	लोक
अट्ठेहिं	(अट्ठ) 3/2	पदार्थों से
णिट्ठिदो	(णिट्ठिद) भूकृ 1/1 अनि	पूर्ण किया हुआ
णिच्चो	(णिच्च) 1/1 वि	शाश्वत
जो	(ज) 1/1 सवि	जो
तं	(त) 2/1 सवि	उसको
जाणदि	(जाण) व 3/1 सक	जानता है
जीवो	(जीव) 1/1	जीव
पाणचदुक्केण	[(पाण)-(चदुक्क) 3/1 वि]	चार प्राणों से
संबद्धो	(संबद्ध) भूकृ 1/1 अनि	युक्त

अन्वय- सपदेसेहिं अट्ठेहिं णिट्ठिदो समग्गो लोगो णिच्चो तं जो जाणदि जीवो पाणचदुक्केण संबद्धो।

अर्थ- अपने प्रदेशों-सहित पदार्थों (द्रव्यों) से पूर्ण किया हुआ समस्त लोक शाश्वत (है)। उस (लोक) को जो जानता (है) (वह) जीवद्रव्य (है)। (संसार अवस्था में) (वह) (जीवद्रव्य) चार प्राणों से युक्त (होता है)।

54. इंदियपाणो य तधा बलपाणो तह य आउपाणो य।
आणप्पाणप्पाणो जीवाणं होंति पाणा ते।।

इंदियपाणो	[(इंदिय)-(पाण) 1/1]	इन्द्रियप्राण
य	अव्यय	और
तधा	अव्यय	इसी प्रकार
बलपाणो	[(बल)-(पाण) 1/1]	बलप्राण
तह	अव्यय	इसी प्रकार
च	अव्यय	और
आउपाणो	[(आउ)-(पाण) 1/1]	आयुप्राण
य	अव्यय	और
आणप्पाणप्पाणो	[(आणप्पाण)-(प्पाण) 1/1]	श्वासोच्छवास प्राण
जीवाणं	(जीव) 6/2	जीवों के
होंति	(हो) व 3/2 अक	होते हैं
पाणा	(पाण) 1/2	प्राण
ते	(त) 1/2 सवि	वे

अन्वय– इंदियपाणो य तधा बलपाणो य तह आउपाणो य आणप्पाणप्पाणो ते पाणा जीवाणं होंति।

अर्थ– इन्द्रियप्राण और इसी प्रकार बलप्राण और इसी प्रकार आयुप्राण और श्वासोच्छवास प्राण- वे (सब) प्राण जीवों के होते हैं।

55. पाणेहिं चदुहिं जीवदि जीवस्सदि जो हि जीविदो पुव्वं।
सो जीवो ते पाणा पोग्गलदव्वेहिं णिव्वत्ता।।

पाणेहिं	(पाण) 3/2	प्राणों से
चदुहिं	(चदु) 3/2 वि	चार
जीवदि	(जीव) व 3/1 सक	जीता है
जीवस्सदि	(जीव) भवि 3/1 सक	जीयेगा
जो	(ज) 1/1 सवि	जो
हि	अव्यय	निश्चय ही
जीविदो	(जीव→जीविद) भूकृ 1/1	जीया
पुव्वं	अव्यय	विगत काल में
सो	(त) 1/1 सवि	वह
जीवो	(जीव) 1/1	जीव
ते	(त) 1/2 सवि	वे
पाणा	(पाण) 1/2	प्राण
पोग्गलदव्वेहिं	[(पोग्गल)-(दव्व) 3/2]	पुद्गल द्रव्यों से
णिव्वत्ता	(णिव्वत्त) भूकृ 1/2 अनि	निष्पन्न

अन्वय- जो हि चदुहिं पाणेहिं जीवदि जीवस्सदि पुव्वं जीविदो सो जीवो ते पाणा पोग्गलदव्वेहिं णिव्वत्ता।

अर्थ- जो निश्चय ही चार प्राणों से जीता है, जीवेगा, विगतकाल में जीया (है) वह जीव (द्रव्य है)(और) वे (चारों) प्राण पुद्गल द्रव्यों से निष्पन्न (है)।

56. जीवो पाणणिबद्धो बद्धो मोहादिएहिं कम्मेहिं।
उवभुंजदि कम्मफलं बज्झदि अण्णेहिं कम्मेहिं।।

जीवो	(जीव) 1/1	जीव
पाणणिबद्धो	[(पाण)-(णिबद्ध)	प्राणों से युक्त
	भूकृ 1/1 अनि]	
बद्धो	(बद्ध) भूकृ 1/1 अनि	बंधा हुआ
मोहादिएहिं	[(मोह)+(आदिएहिं)]	
	[(मोह)-(आदिअ) 3/2]	मोहनीय और अन्य
	'अ' स्वार्थिक	
कम्मेहिं	(कम्म) 3/2	कर्मों से
उवभुंजदि	(उवभुंज) व 3/1 सक	भोगता है
कम्मफलं	[(कम्म)-(फल) 2/1]	कर्मफल को
बज्झदि	(बज्झदि) व कर्म 3/1 अनि	बाँधा जाता है
अण्णेहिं	(अण्ण) 3/2 सवि	अन्यों से
कम्मेहिं	(कम्म) 3/2	कर्मों से

अन्वय– मोहादिएहिं कम्मेहिं बद्धो जीवो पाणणिबद्धो कम्मफलं उवभुंजदि अण्णेहिं कम्मेहिं बज्झदि।

अर्थ– मोहनीय और अन्य कर्मों से बंधा हुआ जीव प्राणों से युक्त (होता है), (और) कर्मफल को भोगता है। (तथा) अन्य कर्मों से बाँधा जाता है।

57. पाणाबाधं जीवो मोहपदेसेहिं कुणदि जीवाणं।
जदि सो हवदि हि बंधो णाणावरणादिकम्मेहिं।।

पाणाबाधं	[(पाण)+(आबाधं)]	
	[(पाण)-(आबाध) 2/1]	प्राणों की क्षति
जीवो	(जीव) 1/1	जीव
मोहपदेसेहिं	[(मोह)-(पदेस)[1] 3/2]	मोह एवं द्वेष के कारण
कुणदि	(कुण) व 3/1 सक	करता है
जीवाणं	(जीव) 6/2	जीवों के
जदि	अव्यय	यदि
सो	(त) 1/1 सवि	वह
हवदि	(हव) व 3/1 अक	घटित होता है
हि	अव्यय	निश्चय ही
बंधो	(बंध) 1/1	बंध
णाणावरणादिकम्मेहिं	[(णाणावरण)+(आदि)+ (कम्मेहिं)]	
	[(णाणावरण)-(आदि)-(कम्म) 3/2]	ज्ञानावरण तथा अन्य कर्मों से

अन्वय– जदि सो जीवो मोहपदेसेहिं जीवाणं पाणाबाधं कुणदि हि णाणावरणादिकम्मेहिं बंधो हवदि।

अर्थ– यदि वह जीव मोह (आसक्ति) एवं द्वेष के कारण जीवों के प्राणों की क्षति करता है (तो) निश्चय ही (इस जीव के) ज्ञानावरण तथा अन्य कर्मों से बंध घटित होता है।

---

1. कारण व्यक्त करनेवाले शब्दों में तृतीया विभक्ति होती है।
(प्राकृत-व्याकरण, पृष्ठ 36)

58. आदा कम्ममलिमसो धरेदि पाणे पुणो पुणो अण्णे।
ण चयदि जाव ममत्तं देहपधाणेसु विसयेसु।।

आदा	(आद) 1/1	आत्मा
कम्ममलिमसो	[(कम्म)-(मलीमस→मलिमस) 1/1 वि]	कर्मों से मलिन
धरेदि	(धर) व 3/1 सक	धारण करता है
पाणे	(पाण) 2/2	प्राणों को
पुणो पुणो	अव्यय	बार-बार
अण्णे	(अन्य) 2/2 सवि	दूसरे
ण	अव्यय	नहीं
चयदि	(चय) व 3/1 सक	छोड़ता है
जाव	अव्यय	जबतक
ममत्तं	(ममत्त) 2/1	ममत्व
देहपधाणेसु	[(देह)-(पधाण) 7/2 वि]	देह में मुख्यरूप से अन्तर्हित
विसयेसु	(विसय) 7/2	इन्द्रिय विषयों में

अन्वय- कम्ममलिमसो आदा पुणो पुणो अण्णे पाणे धरेदि जाव देहपधाणेसु विसयेसु ममत्तं ण चयदि।

अर्थ- कर्मों से मलिन आत्मा बार-बार दूसरे प्राणों को धारण करता है जबतक (वह) देह में मुख्यरूप से अन्तर्हित (देह पर मुख्यरूप से आधारित) इन्द्रिय विषयों में ममत्व नहीं छोड़ता है।

59. जो इंदियादिविजई भवीय उवओगमप्पगं झादि।
कम्मेहिं सो ण रंजदि किह तं पाणा अणुचरंति।।

जो	(ज) 1/1 सवि	जो
इंदियादिविजई	[(इंदिय)+(आदिविजई)]	
	[(इंदिय)-(आदि)-	इन्द्रिय तथा इसी प्रकार
	(विजइ) 1/1 वि]	और का भी जीतनेवाला
भवीय[1]	(भव+इय) संकृ	होकर
उवओगमप्पगं	[(उवओगं)+(अप्पगं)]	
	उवओगं (उवओग) 2/1 वि	ज्ञानस्वरूप
	अप्पगं (अप्पग) 2/1	आत्मा
झादि	(झा) व 3/1 सक	ध्यान करता है
कम्मेहिं	(कम्म) 3/2	कर्मों से
सो	(त) 1/1 सवि	वह
ण	अव्यय	नहीं
रंजदि	(रंजदि) व कर्म 3/1 अनि	रंगा जाता है
किह	अव्यय	कैसे
तं	(त) 2/1 सवि	उसका
पाणा	(पाण) 1/2	प्राण
अणुचरंति[2]	(अणुचर) व 3/2 सक	पीछा करते हैं

अन्वय– जो इंदियादिविजई भवीय उवओगमप्पगं झादि सो कम्मेहिं ण रंजदि तं पाणा किह अणुचरंति।

अर्थ– जो इन्द्रिय तथा इसी प्रकार और का भी जीतनेवाला होकर (शुद्ध) ज्ञानस्वरूप आत्मा का ध्यान करता है (तो) वह कर्मों से नहीं रंगा जाता (बाँधा जाता) है उस (आत्मा) का प्राण कैसे पीछा करेंगे? अर्थात् वह आत्मा दूसरा जन्म धारण नहीं करेगी।

---

1. यहाँ छन्द की मात्रा की पूर्ति हेतु 'भविय' के स्थान पर 'भवीय' किया गया है।
2. प्रश्नवाचक शब्दों के साथ वर्तमानकाल का प्रयोग प्रायः भविष्यत्काल के अर्थ में होता है।

60. अत्थित्तणिच्छिदस्स हि अत्थस्सत्थंतरम्मि संभूदो।
अत्थो पज्जाओ सो संठाणादिप्पभेदेहिं।।

अत्थित्तणिच्छिदस्स	[(अत्थित्त)-(णिच्छिद) 6/1 वि]	निश्चित अस्तित्ववाले के
हि	अव्यय	ही
तं	(त) 1/1 सवि	वह
अत्थस्सत्थंतरम्मि	[(अत्थस्स)+(अत्थंतरम्मि)]	
	अत्थस्स (अत्थ) 6/1	जीव की
	अत्थंतरम्मि (अत्थंतर) 7/1	परिवर्तनरूप में
संभूदो	(संभूद) भूकृ 1/1 अनि	उत्पन्न हुई
अत्थो	(अत्थ) 1/1	जीव
पज्जाओ	(पज्जाअ) 1/1	पर्याय
सो	(त) 1/1 सवि	वह
संठाणादिप्पभेदेहिं	[(संठाण)+(आदिप्पभेदेहिं)]	
	[(संठाण)-(आदि)-(प्पभेद) 3/2]	शरीर आकार तथा अन्य भेदों से युक्त

अन्वय- अत्थित्तणिच्छिदस्स अत्थस्स हि अत्थंतरम्मि संभूदो अत्थो सो संठाणादिप्पभेदेहिं पज्जाओ।

अर्थ- निश्चित अस्तित्ववाले जीव की (कर्म पुद्गल के संसर्ग से) परिवर्तनरूप में उत्पन्न हुई (जो) जीव (पर्याय) (है) वह ही शरीर आकार तथा अन्य भेदों से युक्त (जीव की) (नर, नारकी आदि) पर्याय (है)।

61. णरणारयतिरियसुरा संठाणादीहिं अण्णहा जादा।
पज्जाया जीवाणं उदयादीहिं णामकम्मस्स।।

णरणारयतिरियसुरा	[(णर)-(णारय)-(तिरिय)-(सुर) 1/2]	मनुष्य, नारकी, तिर्यंच और देव
संठाणादीहिं	[(संठाण)+(आदीहिं)] [(संठाण)-(आदि) 3/2]	शरीर आकार आदि सहित
अण्णहा	अव्यय	विभाव रूप में
जादा	(जा) भूक 1/2	उत्पन्न हुई
पज्जाया	(पज्जाय) 1/2	पर्यायें
जीवाणं	(जीव) 6/2	जीवों के
उदयादीहिं	[(उदय)+(आदीहिं)] (उदयादि) 3/2	उदयादि से
णामकम्मस्स	(णामकम्म) 6/1	नामकर्म के

अन्वय- जीवाणं णामकम्मस्स उदयादीहिं णरणारयतिरियसुरा पज्जाया संठाणादीहिं अण्णहा जादा।

अर्थ- (संसारी) जीवों के नामकर्म के उदयादि से मनुष्य, नारकी, तिर्यंच और देव पर्यायें (होती हैं), (वे) (नामकर्म के उदय आदि के कारण) शरीर आकार आदि सहित (स्वभावपर्याय से भिन्न) विभावरूप में उत्पन्न हुई (पर्यायें हैं)।

62. तं सब्भावणिबद्धं दव्वसहावं तिहा समक्खादं।
जाणदि जो सवियप्पं ण मुहदि सो अण्णदवियम्हि।।

तं	अव्यय	इसलिए
सब्भावणिबद्धं	[(सब्भाव)-(णिबद्ध) भूकृ 1/1 अनि]	स्वभाव से निष्पन्न
दव्वसहावं	[(दव्व)-(सहाव) 2/1]	द्रव्य के स्वभाव को
तिहा	अव्यय	तीन प्रकार से
समक्खादं	(समक्खाद) भूकृ 1/1 अनि	कहा हुआ
जाणदि	(जाण) व 3/1 सक	जानता है
जो	(ज) 1/1 सवि	जो
सवियप्पं	(स-वियप्प) 2/1 वि	भेद-सहित
ण	अव्यय	नहीं
मुहदि	(मुह) व 3/1 अक	मूर्च्छित होता है
सो	(त) 1/1 सवि	वह
अण्णदवियम्हि	[(अण्ण) सवि-(दविय) 7/1]	अन्य द्रव्य में

अन्वय– तं जो तिहा समक्खादं सब्भावणिबद्धं दव्वसहावं सवियप्पं जाणदि सो अण्णदवियम्हि ण मुहदि।

अर्थ– इसलिए जो तीन प्रकार (उत्पाद,व्यय और ध्रौव्य) से कहे हुए स्वभाव से निष्पन्न (जीव) द्रव्य के स्वभाव को भेद (स्वभाव-विभाव) सहित जानता है, वह (आत्मज्ञानी) अन्य द्रव्य (विभाव द्रव्य) में मूर्च्छित नहीं होता है।

63. अप्पा उवओगप्पा उवओगो णाणदंसणं भणिदो।
सो वि सुहो असुहो वा उवओगो अप्पणो हवदि।।

अप्पा	(अप्प) 1/1	आत्मा
उवओगप्पा	(उवओगप्प) 1/1 वि	उपयोगस्वरूपवाला/ चैतन्यस्वरूपवाला
उवओगो	(उवओग) 1/1	उपयोग (चेतनायुक्त भावात्मकता)
णाणदंसणं	[(णाण)-(दंसण) 1/1]	ज्ञान-दर्शन
भणिदो	(भण→भणिद) भूक 1/1	कहा गया
सो	(त) 1/1 सवि	वह
वि	अव्यय	भी
सुहो	(सुह) 1/1 वि	शुभ
असुहो	(असुह) 1/1 वि	अशुभ
वा	अव्यय	अथवा
उवओगो	(उवओग) 1/1	उपयोग
अप्पणो	(अप्प) 6/1	आत्मा का
हवदि	(हव) व 3/1 अक	होता है

अन्वय- अप्पा उवओगप्पा हवदि उवओगो णाणदंसणं अप्पणो सो उवओगो सुहो वा असुहो वि भणिदो।

अर्थ- आत्मा उपयोगस्वरूपवाला/चैतन्यस्वरूपवाला होता है। उपयोग ज्ञान-दर्शन (है)। (तथा) आत्मा का वह उपयोग (चेतनायुक्त भावात्मकता) शुभ अथवा अशुभ भी कहा गया (है)।

64. उवओगो जदि हि सुहो पुण्णं जीवस्स संचयं जादि।
असुहो वा तध पावं तेसिमभावे ण चयमत्थि।।

उवओगो	(उवओग) 1/1	उपयोग
जइ	अव्यय	यदि
हि	अव्यय	निश्चय ही
सुहो	(सुह) 1/1 वि	शुभ
पुण्णं	(पुण्ण) 2/1 वि	पुण्य
जीवस्स	(जीव) 6/1	जीव के
संचयं	(संचय) 2/1	राशि को
जादि	(जा) व 3/1 सक	प्राप्त/उत्पन्न करता है
असुहो	(असुह) 1/1 वि	अशुभ
वा	अव्यय	अथवा
तध	अव्यय	पादपूरक
पावं	(पाव) 2/1 वि	पाप को
तेसिमभावे	[(तेसिं)+(अभावे)]	
	तेसिं (त) 6/2 सवि	उनके
	अभावे (अभाव) 7/1	अभाव में
ण	अव्यय	नहीं
चयमत्थि	[(चयं)+(अत्थि)]	
	चयं (चय) 1/1	संग्रह
	अत्थि (अस) व 3/1 अक	होता है

अन्वय– जीवस्स जदि सुहो उवओगो हि पुण्णं संचयं जादि वा असुहो पावं तध तेसिमभावे चयं ण अत्थि।

अर्थ– जीव के यदि शुभ उपयोग (होता है) (तो) (वह) निश्चय ही पुण्य राशि को प्राप्त/उत्पन्न करता है अथवा (यदि) अशुभ (उपयोग) (होता है) (तो) पाप (समूह) को (प्राप्त/उत्पन्न करता है)। उन (शुभ व अशुभ) के अभाव में (पुण्य-पाप) (कर्म का) संग्रह नहीं होता है।

65. जो जाणादि जिणिंदे पेच्छदि सिद्धे तहेव अणगारे।
जीवेसु साणुकंपो उवओगो सो सुहो तस्स।।

जो	(ज) 1/1 सवि	जो
जाणादि[1]	(जाण) व 3/1 सक	जानता है
जिणिंदे	(जिणिंद) 2/2	अरहंतों को
पेच्छदि	(पेच्छ) व 3/1 सक	देखता है
सिद्धे	(सिद्ध) 2/2	सिद्धों को
तहेव	अव्यय	उसी प्रकार
अणगारे	(अणगार) 2/2	मुनियों को
जीवेसु	(जीव) 7/2	जीवों में
साणुकंपो	(साणुकंप) 1/1 वि	करुणा-युक्त
उवओगो	(उवओग) 1/1	उपयोग
सो	(त) 1/1 सवि	वह
सुहो	(सुह) 1/1 वि	शुभ
तस्स	(त) 6/1 सवि	उसका

अन्वय– जो जिणिंदे जाणादि सिद्धे पेच्छदि तहेव अणगारे जीवेसु साणुकंपो तस्स सो उवओगो सुहो।

अर्थ– जो अरहंतों (के स्वरूप) को (ज्ञाताभाव से) जानता है, सिद्धों को (दृष्टाभाव से) देखता है उसी प्रकार मुनियों (आचार्य, उपाध्याय और साधुओं) को (भी) (जानता-देखता है), (जो) जीवों में करुणा-युक्त (है), उसका वह उपयोग (चेतनायुक्त भावात्मकता) शुभ (है) अर्थात् वह जीव शुभोपयोगी (है)।

---

1. वर्तमानकाल के प्रत्ययों के होने पर कभी-कभी अन्त्यस्थ 'अ' के स्थान पर 'आ' हो जाता है। (हेम-प्राकृत-व्याकरणः 3-158 वृत्ति)।

66. विसयकसाओगाढो दुस्सुदिदुच्चित्तदुट्ठगोट्ठिजुदो।
उग्गो उम्मग्गपरो उवओगो जस्स सो असुहो।।

विसयकसाओगाढो	[(विसयकसाअ)[1]+(ओगाढो)]	
	[(विसयकसाअ)-(ओगाढ) 1/1 वि]	इन्द्रियविषय तथा कषायों में गाढ़ा
दुस्सुदिदुच्चित्त-दुट्ठगोट्ठिजुदो	[(दुस्सुदि)-(दुच्चित्त)-(दुट्ठ) वि (गोट्ठी→गोट्ठि)-(जुद) भूकृ 1/1 अनि]	कषायोत्तेजक साहित्य में रसयुक्त, खोटे मनवाला , व्यर्थ चर्चा में संलग्न
उग्गो	(उग्ग) 1/1 वि	आक्रामक रुखवाला
उम्मग्गपरो	[(उम्मग्ग)-(पर) 1/1 वि]	कुमार्ग में लगा हुआ
उवओगो	(उवओग) 1/1	उपयोग
जस्स	(ज) 6/1 सवि	जिसका
सो	(त) 1/1 सवि	वह
असुहो	(असुह) 1/1 वि	अशुभ

अन्वय– जस्स उवओगो विसयकसाओगाढो दुस्सुदिदुच्चित्तदुट्ठगोट्ठि-जुदो उग्गो उम्मग्गपरो सो असुहो।

अर्थ– जिसका उपयोग (चेतनायुक्त भावात्मकता) इन्द्रियविषय तथा (क्रोधादि) कषायों में गाढ़ा (है), (जो) कषायोत्तेजक साहित्य में रसयुक्त (है), (जो) खोटे मनवाला (है), (जो) व्यर्थ चर्चा में संलग्न (है), (जो) (सदैव) आक्रामक रुखवाला (है), (जो) कुमार्ग में लगा हुआ (है) (उसका) वह (उपयोग) अशुभ (है)।

---

1. प्राकृत-व्याकरण, पृष्ठ 3 (4 ख)

67. असुहोवओगरहिदो सुहोवजुत्तो ण अण्णदवियम्हि।
होज्जं मज्झत्थोऽहं णाणप्पगमप्पगं झाए।।

असुहोवओगरहिदो[1]	[(असुह)+(उवओगरहिदो)]	
	[(असुह) वि-(उवओग)-(रहिदो) भूकृ 1/1 अनि]	अशुभोपयोग से रहित/के बिना
सुहोवजुत्तो	[(सुह)+(उवजुत्त)]	
	[(सुह) वि-(उवजुत्त) भूकृ 1/1 अनि]	शुभ में संलग्न
ण	अव्यय	नहीं
अण्णदवियम्हि	[(अण्ण) सवि-(दविय) 7/1]	अन्य विषय में
होज्जं	(होज्ज) व 1/1 अक	हूँ
मज्झत्थोऽहं	[(मज्झत्थो)+(अहं)]	
	मज्झत्थो (मज्झत्थ) 1/1 वि	मध्यस्थ
	अहं (अम्ह) 1/1 स	मैं
णाणप्पगमप्पगं	[(णाणप्पगं)+(अप्पगं)]	
	णाणप्पगं (णाणप्पग) 2/1 वि	ज्ञानात्मक
	अप्पगं (अप्पग) 2/1	आत्मा
झाए	(झाए) व 1/1 सक अनि	ध्यान करता हूँ

अन्वय– **अहं असुहोवओगरहिदो सुहोवजुत्तो ण अण्णदवियम्हि मज्झत्थो होज्जं णाणप्पगमप्पगं झाए।**

अर्थ– मैं अशुभोपयोग से रहित (हूँ)/के बिना (हूँ), शुभ में संलग्न नहीं (हूँ), अन्य विषय (निंदा-प्रशंसादि) में मध्यस्थ हूँ (और) ज्ञानात्मक आत्मा का ध्यान करता हूँ।

---

1. समास के अन्त में करण के साथ रहित का अर्थ होता है-'के बिना'

68. णाहं देहो ण मणो ण चेव वाणी ण कारणं तेसिं।
कत्ता ण ण कारयिदा अणुमंता णेव कत्तीणं।।

णाहं	[(ण)+(अहं)]	
	ण (अ) = न	न
	अहं (अम्ह) 1/1 स	मैं
देहो	(देह) 1/1	शरीर
ण	अव्यय	न
मणो	(मण) 1/1	मन
ण	अव्यय	न
चेव	[(च)+(एव)]	
	च (अ) = और	और
	एव (अ) = ही	ही
वाणी	(वाणी) 1/1	वचन
ण	अव्यय	न
कारणं	(कारण) 1/1	कारण
तेसिं	(त) 6/2 सवि	उनका
कत्ता	(कत्तु) 1/1 वि	करनेवाला
ण	अव्यय	न
ण	अव्यय	न
कारयिदा	(कारयिदु) 1/1 वि	करानेवाला
अणुमंता	(अणुमंतु) 1/1 वि	अनुमोदक
णेव	अव्यय	न ही
कत्तीणं	(कत्ति) 6/2 वि	करनेवालों का

अन्वय– णाहं देहो ण मणो च ण एव वाणी ण कारणं तेसिं ण कत्ता ण कारयिदा णेव कत्तीणं अणुमंता।

अर्थ– मैं न शरीर (हूँ), न मन (हूँ), और न ही वचन (हूँ), न उनका कारण (हूँ), न करनेवाला (हूँ), न करानेवाला (हूँ), न ही करनेवालों का अनुमोदक (हूँ)।

69. देहो य मणो वाणी पोग्गलदव्वप्पग त्ति णिद्दिट्ठा।
पोग्गलदव्वं हि पुणो पिंडो परमाणुदव्वाणं।।

देहो	(देह) 1/1	शरीर
य	अव्यय	और
मणो	(मण) 1/1	मन
वाणी	(वाणी) 1/1	वचन
पोग्गलदव्वप्पग त्ति	[(पोग्गलदव्वप्पगा)+(इति)]	
	[(पोग्गल)-(दव्वप्पग)-1/2 वि]	पुद्गल द्रव्यात्मक
	इति (अ) = पादपूरक	पादपूरक
णिद्दिट्ठा	(णिद्दिट्ठ) भूकृ 1/2 अनि	वर्णित
पोग्गलदव्वं	[(पोग्गल)-(दव्व) 1/1]	पुद्गल द्रव्य
हि	अव्यय	निश्चय ही
पुणो	अव्यय	और
पिंडो	(पिंड) 1/1	समूह
परमाणुदव्वाणं	[(परमाणु)-(दव्व) 6/2]	परमाणु द्रव्यों का

अन्वय- देहो मणो य वाणी पोग्गलदव्वप्पग त्ति णिद्दिट्ठा पुणो पोग्गलदव्वं हि परमाणुदव्वाणं पिंडो।

अर्थ- शरीर, मन और वाणी (ये) (तीनों योग) पुद्गल द्रव्यात्मक वर्णित (है) और पुद्गल द्रव्य निश्चय ही परमाणु द्रव्यों का समूह (है)।

70. णाहं पोग्गलमइओ ण ते मया पोग्गला कया पिंडं।
तम्हा हि ण देहोऽहं कत्ता वा तस्स देहस्स।।

णाहं	[(ण)+(अहं)]	
	ण (अ) = न	न
	अहं (अम्ह) 1/1 स	मैं
पोग्गलमइओ	[(पोग्गल)-(मइअ) 1/1 वि]	पुद्गलमय
ण	अव्यय	नहीं
ते	(त) 1/2 सवि	वे
मया	(अम्ह) 3/1 स अनि	मेरे द्वारा
पोग्गला	(पोग्गल) 1/2	पुद्गल
कया	(कय) भूकृ 1/2 अनि	किये गये
पिंडं[1]	(पिंड) 2/1	समूह में
तम्हा	अव्यय	इसलिए
हि	अव्यय	निश्चय ही
ण	अव्यय	नहीं
देहोऽहं	[(देहो)+(अहं)]	
	देहो (देह) 1/1	शरीर
	अहं (अम्ह) 1/1 स	मैं
कत्ता	(कत्तु) 1/1 वि	कर्ता
वा	अव्यय	अथवा
तस्स	(त) 6/1 सवि	उस
देहस्स	(देह) 6/1	शरीर का

अन्वय– अहं पोग्गलमइओ ण मया ते पोग्गला पिंडं ण कया तम्हा हि देहोऽहं ण वा तस्स देहस्स कत्ता।

अर्थ– मैं पुद्गलमय नहीं (हूँ)। मेरे द्वारा वे पुद्गल समूह में नहीं किये गये (हैं)। इसलिए निश्चय ही मैं शरीर नहीं (हूँ) अथवा उस शरीर का कर्ता (भी) (नहीं हूँ)।

---

1. कभी-कभी सप्तमी विभक्ति के स्थान पर द्वितीया विभक्ति का प्रयोग पाया जाता है। (हेम-प्राकृत-व्याकरणः 3-137)

71. अपदेसो परमाणू पदेसमेत्तो य सयमसद्दो जो।
णिद्धो वा लुक्खो वा दुपदेसादित्तमणुहवदि।।

अपदेसो	(अपदेस) 1/1 वि	प्रदेश-रहित
परमाणू	(परमाणु) 1/1	परमाणु
पदेसमेत्तो	(पदेसमेत्त) 1/1 वि	एक प्रदेशमात्र
य	अव्यय	और
सयमसद्दो	[(सयं)+(असद्दो)]	
	सयं (अ) = स्वयं	स्वयं
	असद्दो (असद्द) 1/1 वि	शब्द-रहित
जो	(ज) 1/1 सवि	जो
णिद्धो	(णिद्ध) 1/1 वि	स्निग्ध
वा	अव्यय	अथवा
लुक्खो	(लुक्ख) 1/1 वि	रूक्ष
वा	अव्यय	पुनरावृत्ति भाषा की पद्धति
दुपदेसादित्तमणुहवदि	[(दुपदेस)+(आदित्तं)+(अणुहवदि)]	
	[(दुपदेस)-(आदित्त) 2/1वि]	दो प्रदेश वगैरहपन को
	अणुहवदि (अणुहव) व 3/1 सक	प्राप्त करता है

अन्वय- परमाणू अपदेसो य जो पदेसमेत्तो सयमसद्दो णिद्धो वा लुक्खो वा दुपदेसादित्तमणुहवदि।

अर्थ- परमाणु (दो आदि) प्रदेश-रहित (है) और जो एक प्रदेशमात्र (है) (वह) स्वयं शब्द रहित है। (और) (उसमें) स्निग्ध अथवा रूक्ष (गुण) (होता है) (तथा) (परिणमन करता हुआ) (वह) (स्निग्ध अथवा रूक्ष गुण के कारण) दो प्रदेश वगैरहपन को प्राप्त करता है।

72. एगुत्तरमेगादी अणुस्स णिद्धत्तणं च लुक्खत्तं।
परिणामादो भणिदं जाव अणंतत्तमणुभवदि।।

एगुत्तरमेगादी	[(एग)+(उत्तरं)+ (एग)+(आदी)]	
	[(एग) वि-(उत्तरं) अव्यय	एक (अंश) में ऊपर
	(एग) वि-(आदि)1/1]	एक (अंश) से आरम्भ
अणुस्स	(अणु) 6/1	परमाणु का
णिद्धत्तणं	(णिद्धत्तण) 1/1	स्निग्धता
च	अव्यय	और
लुक्खत्तं	(लुक्खत्त) 1/1	रूक्षता
परिणामादो	(परिणाम) 5/1	परिणमन स्वभाव के कारण
भणिदं	(भण→भणिद) भूक 1/1	कही गई
जाव	अव्यय	जब तक
अणंतत्तमणुभवदि	[(अणंतत्तं)+(अणुभवदि)]	
	अणंतत्तं (अणंतत्त) 2/1	अनंतता को
	अणुभवदि (अणुभव) व 3/1 सक	प्राप्त करती है

अन्वय– अणुस्स परिणामादो णिद्धत्तणं च लुक्खत्तं एगुत्तरमेगादी भणिदं जाव अणंतत्तं अणुभवदि।

अर्थ– परमाणु के परिणमन स्वभाव के कारण (जो) स्निग्धता और रूक्षता एक (अंश) से आरंभ (होती है) (वह) (तब तक) एक (अंश) में ऊपर कही गई (है) जब तक (वह) अनंतता को प्राप्त करती है। (जैसे बकरी, गाय, भैंस, ऊँटनी अथवा घी वगैरह में स्निग्धता के उत्तरोत्तर भेद है और धूलि, राख, रेत आदि (वस्तुओं के क्रम में) वस्तुओं में रूक्षता के उत्तरोत्तर भेद है। इस प्रकार स्निग्ध- रूक्ष गुण के अनंत भेद हैं।

---

1. 'कारण' व्यक्त करनेवाले शब्दों में पंचमी का प्रयोग होता है।
(प्राकृत-व्याकरण, पृष्ठ 42)

73. णिद्धा वा लुक्खा वा अणुपरिणामा समा व विसमा वा।
समदो दुराधिगा जदि बज्झन्ति हि आदिपरिहीणा।।

णिद्धा	(णिद्ध) 1/2 वि	स्निग्ध
वा	अव्यय	अथवा
लुक्खा	(लुक्ख) 1/2 वि	रूक्ष
वा	अव्यय	पुनरावृत्ति भाषा की पद्धति
अणुपरिणामा	[(अणु)-(परिणाम) 1/2]	परमाणुओं का परिणमन
समा	(सम) 1/2 वि	सम
व	अव्यय	अथवा
विसमा	(विसम) 1/2 वि	विषम
वा	अव्यय	पुनरावृत्ति भाषा की पद्धति
समदो	(समदो) अव्यय पंचमी अर्थक 'दो' प्रत्यय	समान रूप से
दुराधिगा	(दुराधिग) 1/2 वि अनि	दो अधिक
जदि	अव्यय	यदि
बज्झन्ति	(बज्झन्ति) व कर्म 3/2 अनि	बाँधे जाते हैं
हि	अव्यय	ही
आदिपरिहीणा	[(आदि)-(परिहीण) 1/2 वि]	प्रथम (निम्नतम) अंश-रहित

अन्वय– णिद्धा वा लुक्खा वा अणुपरिणामा जदि आदिपरिहीणा समा व विसमा वा समदो दुराधिगा हि बज्झन्ति।

अर्थ– स्निग्ध अथवा रूक्ष परमाणुओं (के अंशों) का परिणमन यदि प्रथम (निम्नतम) अंश-रहित हो (किन्तु) (संख्या में) सम (अंश) (2,4,6....) अथवा (संख्या में) विषम (अंश) (3,5,7....) (हो) (और) समान रूप से दो (अंश) अधिक (हो) (तो) ही (वे) बाँधे जाते हैं।

74. णिद्धत्तणेण दुगुणो चदुगुणणिद्धेण बंधमणुभवदि।
लुक्खेण वा तिगुणिदो अणु बज्झदि पंचगुणजुत्तो।।

णिद्धत्तणेण[1]	(णिद्धत्तण) 3/1	स्निग्धता में
दुगुणो	(दुगुण) 1/1 वि	दो अंशवाला
चदुगुणणिद्धेण	[(चदुगुण) वि-(णिद्ध) 3/1]	चार अंशवाली स्निग्धता से
बंधमणुभवदि	[(बंधं)+(अणुभवदि)]	
	(बंधं) 2/1	बंध को
	अणुभवदि (अणुभव) व 3/1 सक	प्राप्त होता है
लुक्खेण[1]	(लुक्ख) 3/1	रूक्षता में
वा	अव्यय	तथा
तिगुणिदो	[(ति)-(गुणिद) 1/1 वि]	तीन अंशवाली
*अणु (मूलशब्द)	(अणु) 1/1	परमाणु
बज्झदि	(बज्झदि) व कर्म 3/1अनि	बाँधा जाता है
पंचगुणजुत्तो	[(पंच)-(गुण)-(जुत्त) भूकृ 1/1 अनि]	पाँच अंश-सहित

अन्वय– णिद्धत्तणेण दुगुणो चदुगुणणिद्धेण बंधमणुभवदि वा लुक्खेण पंचगुणजुत्तो अणु तिगुणिदो बज्झदि ।

अर्थ– स्निग्धता में दो अंशवाला (परमाणु) (उसकी) चार अंशवाली स्निग्धता से बँध को प्राप्त होता है तथा रूक्षता में पाँच अंश-सहित परमाणु तीन अंशवाली (रूक्षता से) बाँधा जाता है।

---

1. कभी-कभी सप्तमी विभक्ति के स्थान पर तृतीया विभक्ति का प्रयोग पाया जाता है। (हेम-प्राकृत-व्याकरणः 3-137)

* प्राकृत में किसी भी कारक के लिए मूल संज्ञा शब्द काम में लाया जा सकता है। (पिशलः प्राकृत भाषाओंका व्याकरण, पृष्ठ 517)

75. दुपदेसादी खंधा सुहुमा वा बादरा ससंठाणा।
पुढविजलतेउवाऊ सगपरिणामेहिं जायंते।।

दुपदेसादी	[(दुपदेस)+(आदी)]	
	[(दुपदेस)-(आदी→आदि) 1/2 वि]	दो प्रदेश से आरंभ करनेवाले
खंधा	(खंध) 1/2	स्कन्ध
सुहुमा	(सुहुम) 1/2 वि	सूक्ष्म
वा	अव्यय	और
बादरा	(बादर) 1/2 वि	स्थूल
ससंठाणा	(स-संठाण) 1/2 वि	आकार-सहित
पुढविजलतेउवाऊ	[(पुढवि)-(जल)-(तेउ)-(वाउ) 1/2]	पृथ्वीकाय, जलकाय, अग्निकाय, वायुकाय
सगपरिणामेहिं	[(सग) वि-(परिणाम) 3/2]	स्वपरिणमन से
जायंते	(जा) व 3/2 अक 'य' विकरण	उत्पन्न होते हैं

अन्वय– दुपदेसादी खंधा सुहुमा वा बादरा पुढविजलतेउवाऊ सगपरिणामेहिं जायंते ससंठाणा।

अर्थ– दो प्रदेश से आरंभ करनेवाले (पुद्गल) स्कंध (जो) सूक्ष्म और स्थूल (होते हैं) (वे) पृथ्वीकाय, जलकाय, अग्निकाय, वायुकाय (पुद्गल) स्वपरिणमन से उत्पन्न होते हैं (और) (वे) (भिन्न-भिन्न) आकारसहित (होते हैं)।

76. ओगाढगाढणिचिदो पुग्गलकायेहिं सव्वदो लोगो।
सुहुमेहि बादरेहि य अप्पाओग्गेहिं जोग्गेहिं।।

ओगाढगाढणिचिदो	[(ओगाढ) वि-(गाढ)• अ-(णिचिद) भूकृ 1/1 अनि]	गहरा, अत्यन्त भरा हुआ
पुग्गलकायेहिं	[(पुग्गल)-(काय) 3/2]	पुद्गलराशि से
सव्वदो	(सव्वदो) अव्यय पंचमी अर्थक 'दो' प्रत्यय	सब ओर से
लोगो	(लोग) 1/1	लोक
सुहुमेहि	(सुहुम) 3/2 वि	सूक्ष्म
बादरेहि	(बादर) 3/2 वि	स्थूल
य	अव्यय	और
अप्पाओग्गेहिं	[(अप्प)+(अओग्ग)] [(अप्प)-(अओग्ग) 3/2 वि]	आत्मा के लिये अयोग्य
जोग्गेहिं	(जोग्ग) 3/2 वि	योग्य

अन्वय– अप्पाओग्गेहिं जोग्गेहिं सुहुमेहि य बादरेहि पुग्गलकायेहिं लोगो सव्वदो ओगाढगाढणिचिदो।

अर्थ– आत्मा के लिये (कर्मरूप होने के) अयोग्य (और) (कर्मरूप होने के) योग्य सूक्ष्म और स्थूल पुद्गलराशि से (यह) लोक सब ओर से अत्यन्त गहरा भरा हुआ (है)।

• पाइयसद्दमहण्णव कोश में इसे क्रिविअ भी बताया गया है।

77. **कम्मत्तणपाओग्गा खंधा जीवस्स परिणइं पप्पा।**
गच्छंति कम्मभावं ण हि ते जीवेण परिणमिदा।।

कम्मत्तणपाओग्गा	[(कम्मत्तण)-(पाओग्ग) 1/2 वि]	कर्मत्व के योग्य
खंधा	(खंध) 1/2	स्कंध
जीवस्स	(जीव) 6/1	जीव का
परिणइं[1]	(परिणइ) 2/1	परिणमन होने पर
पप्पा	(पप्प) भूकृ 1/2 अनि	उपलब्ध
गच्छंति	(गच्छ) व 3/2 सक	प्राप्त हो जाते हैं
कम्मभावं[1]	[(कम्म)-(भाव) 2/1]	कर्मरूप में
ण	अव्यय	नहीं
हि	अव्यय	परन्तु
ते	(त) 1/2 सवि	वे
जीवेण	(जीव) 3/1	जीव के द्वारा
परिणमिदा	(परिणमिद) भूकृ 1/2	परिणमन कराये गये

अन्वय– कम्मत्तणपाओग्गा पप्पा खंधा जीवस्स परिणइं कम्मभावं गच्छंति हि ते जीवेण ण परिणमिदा।

अर्थ– कर्मत्व के योग्य उपलब्ध स्कंध जीव का (रागद्वेषात्मक) परिणमन होने पर कर्मरूप में प्राप्त हो जाते हैं, परन्तु वे जीव के द्वारा परिणमन नहीं कराये गये (हैं) अर्थात् वे स्वयं ही कर्मरूप में बदल जाते हैं।

---

1. कभी-कभी सप्तमी विभक्ति के स्थान पर द्वितीया विभक्ति का प्रयोग पाया जाता है। (हेम-प्राकृत-व्याकरणः 3-137)

78. ते ते कम्मत्तगदा पोग्गलकाया पुणो वि जीवस्स।
संजायंते देहा देहंतरसंकमं पप्पा।।

ते	(त) 1/2 सवि	वे
ते	(त) 1/2 सवि	वे
कम्मत्तगदा	[(कम्मत्त)-(गद) भूकृ 1/2 अनि]	कर्मत्व भाव में परिवर्तित हुए
पोग्गलकाया	[(पोग्गल)-(काय) 1/2]	पुद्गलों के समूह/स्कन्ध
पुणो	अव्यय	फिर
वि	अव्यय	ही
जीवस्स	(जीव) 4/1	जीव के लिए
संजायंते	(संजाय) व 3/2 अक	उत्पन्न होती हैं
देहा	(देह) 1/2	देह
देहंतरसंकमं	[(देह)-(अंतर) वि-(संकम) 2/1]	अन्य देह के लिए गमन होने पर
पप्पा	(पप्प) भूकृ 1/2 अनि	अर्जित

अन्वय– ते ते पोग्गलकाया कम्मत्तगदा वि पुणो जीवस्स देहंतरसंकमं पप्पा देहा संजायंते।

अर्थ– (पूर्व में कहे हुए) वे वे पुद्गलों के समूह/स्कन्ध (जो) कर्मत्व भाव में ही परिवर्तित हुए (हैं) (उनसे) फिर जीव के लिए अन्य देह के लिए गमन होने पर अर्जित देह उत्पन्न होती हैं।

---

1. कभी-कभी सप्तमी विभक्ति के स्थान पर द्वितीया विभक्ति का प्रयोग पाया जाता है। (हेम-प्राकृत-व्याकरणः 3-137)

79. ओरालिओ य देहो देहो वेउव्विओ य तेजइओ।
आहारय कम्मइओ पुग्गलदव्वप्पगा सव्वे।।

ओरालिओ	(ओरालिअ) 1/1 वि	औदारिक
य	अव्यय	और
देहो	(देह) 1/1	शरीर
देहो	(देह) 1/1	शरीर
वेउव्विओ	(वेउव्विअ) 1/1 वि	वैक्रियिक
य	अव्यय	और
तेजइओ	[(तेज)-(इअ) भूकृ 1/1अनि]	तेज को प्राप्त
* आहारय	(आहारय) 1/1 वि	आहारक
कम्मइओ	[(कम्म)-(इअ) भूकृ 1/1 अनि]	कर्म को प्राप्त
पुग्गलदव्वप्पगा	[(पुग्गल)-(दव्वप्पग) 1/2 वि]	पुद्गलद्रव्य से निर्मित
सव्वे	(सव्व) 1/2 सवि	सब

अन्वय- ओरालिओ देहो य वेउव्विओ देहो य तेजइओ आहारय कम्मइओ सव्वे पुग्गलदव्वप्पगा।

अर्थ- औदारिक शरीर और वैक्रियिक शरीर और तेज को प्राप्त (तैजस) (शरीर), आहारक (शरीर), कर्म को प्राप्त (कार्मण) (शरीर) (ये) सब पुद्गलद्रव्य से निर्मित (है)।

---

* प्राकृत में किसी भी कारक के लिए मूल संज्ञा शब्द काम में लाया जा सकता है। (पिशलः प्राकृत भाषाओं का व्याकरण, पृष्ठ 517)

80. अरसमरूवमगंधं अव्वत्तं चेदणागुणमसद्दं।
जाण अलिंगग्गहणं जीवमणिद्दिट्ठसंठाणं।।

अरसमरूवमगंधं	[(अरसं)+(अरूवं)+(अगंधं)]	
	अरसं (अरस) 2/1 वि	रस-रहित
	अरूवं (अरूव) 2/1 वि	रूप-रहित
	अगंधं (अगंध) 2/1 वि	गंध-रहित
अव्वत्तं	(अव्वत्त) 2/1 वि	अप्रकट
चेदणागुणमसद्दं	[(चेदणागुणं)+(असद्दं)]	
	(चेदणागुण) 2/1 वि	चेतना गुणवाला,
	असद्दं (असद्द) 2/1 वि	शब्द-रहित
जाण	(जाण) विधि 2/1 सक	जानो
अलिंगग्गहणं	(अलिंगग्गहण) 2/1 वि	तर्क से ग्रहण न होनेवाला
जीवमणिद्दिट्ठसंठाणं	[(जीवं)+(अणिद्दिट्ठसंठाणं)]	
	जीवं (जीव) 2/1	जीव को
	[(अणिद्दिट्ठ) भूकृ अनि-	न कहे हुए
	(संठाण) 2/1 वि]	आकारवाला

अन्वय– जीवं अरसं अरूवं अगंधं अव्वत्तं चेदणागुणं असद्दं अलिंगग्गहणं अणिद्दिट्ठसंठाणं जाण।

अर्थ– (तुम) जीव को रस-रहित, रूप-रहित, गंध-रहित, (स्पर्श से भी) अप्रकट, चेतना गुणवाला, शब्द-रहित, तर्क से ग्रहण न होनेवाला (तथा) न कहे हुए आकारवाला जानो।

81. मुत्तो रूवादिगुणो बज्झदि फासेहिं अण्णमण्णेहिं।
तव्विवरीदो अप्पा बज्झदि किध पोग्गलं कम्मं।।

मुत्तो	(मुत्त) 1/1 वि	मूर्त
रूवादिगुणो	[(रूव)+(आदिगुणो)]	
	[(रूव)-(आदि)-	रूप और इसी प्रकार
	(गुण) 1/1 वि]	अन्य गुणवाला
बज्झदि	(बज्झदि) व कर्म 3/1 अनि	बाँधा जाता है
फासेहिं	(फास) 3/2	स्पर्श गुणों के कारण
अण्णमण्णेहिं[1]	[(अण्ण)+(म्)+(अण्ण)]	
	(अण्णमण्ण) 3/2 वि	परस्पर
तव्विवरीदो	(तव्विवरीद) 1/1 वि अनि	उसके विपरीत
अप्पा	(अप्प) 1/1	आत्मा
बज्झदि	(बज्झदि) व कर्म 3/1 अनि	बाँधा जाता है
किध	अव्यय	कैसे
पोग्गलं	(पोग्गलं)	पुद्गल
	'द्वितीयार्थक' अव्यय	
कम्मं	(कम्मं)	कर्म से
	'द्वितीयार्थक' अव्यय	

अन्वय– रूवादिगुणो मुत्तो अण्णमण्णेहिं फासेहिं बज्झदि तव्विवरीदो अप्पा पोग्गलं कम्मं किध बज्झदि।

अर्थ– रूप और इसी प्रकार अन्य गुणवाला मूर्त (पुद्गल परमाणु-स्कंध) परस्पर स्पर्श गुणों के कारण (स्निग्ध-रूक्ष गुण के कारण) बाँधा जाता है। उसके विपरीत (अमूर्त) आत्मा पुद्गल कर्म से कैसे बाँधा जाता है?

---

1. जहाँ पदों की द्विरुक्ति हुई हो, वहाँ दो पदों के बीच में 'म्' विकल्प से आ जाता है।
(प्राकृत-व्याकरणः पृष्ठ 3) (हेम -प्राकृत-व्याकरण 3/1)

82. रूवादिएहि रहिदो पेच्छदि जाणादि रूवमादीणि।
दव्वाणि गुणे य जधा तह बंधो तेण जाणीहि।।

रूवादिएहि	[(रूव)+(आदिएहि)]	
	[(रूव)-(आदिअ) 3/2]	रूपादि से
	'अ' स्वार्थिक	
रहिदो	(रहिद) भूकृ 1/1 अनि	रहित
पेच्छदि	(पेच्छ) व 3/1 सक	देखता है
जाणादि[1]	(जाण) व 3/1 सक	जानता है
रूवमादीणि	[(रूवं)+(आदीणि)]	
	रूवं (रूव) 2/1	रूप को
	आदीणि (आदि) 2/2 वि	और इसी प्रकार अन्य
दव्वाणि	(दव्व) 2/2	द्रव्यों को
गुणे	(गुण) 2/2	गुणों को
य	अव्यय	और
जधा	अव्यय	जैसे
तह	अव्यय	और
बंधो	(बंध) 1/1	बंध
तेण	(त) 3/1 सवि	उसके साथ
जाणीहि	(जाणीहि)विधि 2/1 सक अनि	जानो

अन्वय– जधा रूवादिएहि रहिदो रूवमादीणि दव्वाणि य गुणे जाणादि पेच्छदि तह तेण बंधो जाणीहि।

अर्थ– जैसे रूपादि से रहित (अमूर्त आत्मा) रूप को और इसी प्रकार अन्य द्रव्यों (और) (उनके) गुणों को जानता है, देखता है (तो भी अवलोकन मात्र से अमूर्त आत्मा का पुद्गल कर्म से बंध नहीं होता है) और (उसके विपरीत) (अनादि कर्म पुद्गल से बंध के कारण अशुद्ध हुई आत्मा का) (उससे उत्पन्न राग-द्वेषरूप भाव के कारण) उसके (कर्मपुद्गल के) साथ बंध (होता है)(तुम) जानो।

---

1. वर्तमानकाल के प्रत्ययों के होने पर कभी-कभी अन्त्यस्थ 'अ' के स्थान पर 'आ' हो जाता है। (हेम-प्राकृत-व्याकरणः 3-158 वृत्ति)।

नोटः सम्पादक द्वारा अनूदित

83. उवओगमओ जीवो मुज्झदि रज्जेदि वा पदुस्सेदि।
पप्पा विविधे विसये जो हि पुणो तेहिं संबंधो।।

उवओगमओ	(उवओगमअ) 1/1 वि	उपयोगमय
जीवो	(जीव) 1/1	जीव
मुज्झदि	(मुज्झ) व 3/1 अक	मोह करता है
रज्जेदि	(रज्ज) व 3/1 अक	राग करता है
वा	अव्यय	अथवा
पदुस्सेदि	(पदुस्स) व 3/1 सक	द्वेष करता है
पप्पा[1]	(पप्प) भूकृ 2/2 अनि	उपलब्ध
विविधे[2]	(विविध) 2/2 वि	अनेक प्रकार के
विसये[2]	(विसय) 2/2	इंद्रिय-विषयों में
जो	(ज) 1/1 सवि	जो
हि	अव्यय	निश्चय ही
पुणो	अव्यय	फिर
तेहिं	(त) 3/2 सवि	उनके साथ/कारण
संबंधो	(संबंध) 1/1	संयोग

अन्वय– जो उवओगमओ जीवो विविधे पप्पा विसये मुज्झदि रज्जेदि वा पदुस्सेदि पुणो हि तेहिं संबंधो।

अर्थ– जो उपयोगमय (अशुद्ध) जीव (है) (वह) अनेक प्रकार के उपलब्ध इंद्रिय-विषयों में मोह (आत्मविस्मृति) करता है, राग (आसक्ति) करता है अथवा द्वेष (शत्रुता) करता है, (तो) (उस जीव के) फिर निश्चय ही उन (मोह, राग, द्वेष) के साथ/कारण (कर्मबंध) (का) संयोग (होता है)।

---

1. पप्पा (संकृ अनि) = इन्द्रिय विषयों को प्राप्त करके (यह अर्थ भी लिया जा सकता है)
2. कभी-कभी सप्तमी विभक्ति के स्थान पर द्वितीया विभक्ति का प्रयोग पाया जाता है। (हेम-प्राकृत-व्याकरणः 3-137)

84. भावेण जेण जीवो पेच्छदि जाणादि आगदं विसये।
रज्जदि तेणेव पुणो बज्झदि कम्म त्ति उवदेसो।।

भावेण	(भाव) 3/1	भाव से
जेण	(ज) 3/1 सवि	जिस
जीवो	(जीव) 1/1	जीव
पेच्छदि	(पेच्छ) व 3/1 सक	देखता है
जाणादि[1]	(जाण) व 3/1 सक	जानता है
आगदं	(आगद) भूकृ 2/1 अनि	आई हुई (वस्तु) को
विसये	(विसय) 7/1	क्षेत्र में
रज्जदि	(रज्जदि) व 3/1 अक अनि	अनुरक्त हो जाता है
तेणेव	[(तेण)+(एव)]	
	तेण (त) 3/1 सवि	उसके साथ
	एव (अ) = ही	ही
पुणो	अव्यय	चूँकि
बज्झदि	(बज्झदि) व कर्म 3/1 अनि	बाँधा जाता है
कम्म त्ति	[(कम्मेण)+(इति)]	
(मूलशब्द)	कम्मेण (कम्म) 3/1	कर्म के द्वारा
	इति (अ) = इस प्रकार	इस प्रकार
उवदेसो	(उवदेस) 1/1	उपदेश

अन्वय– जीवो जेण भावेण विसये आगदं पेच्छदि जाणादि पुणो तेणेव रज्जदि कम्म त्ति बज्झदि उवदेसो।

अर्थ– जीव जिस (शुभ-अशुभ) भाव से (इंद्रियों के) क्षेत्र में आई हुई (वस्तु) को देखता है, जानता है (तो जीव उसी का फल प्राप्त करता है)। चूँकि (वह) उसके साथ ही अनुरक्त हो जाता है (इसलिए) कर्म के द्वारा बाँधा जाता है। इस प्रकार उपदेश (है)।

---

1. वर्तमानकाल के प्रत्ययों के होने पर कभी-कभी अन्त्यस्थ 'अ' के स्थान पर 'आ' हो जाता है। (हेम-प्राकृत-व्याकरणः 3-158 वृत्ति)।

85. फासेहिं पुग्गलाणं बंधो जीवस्स रागमादीहिं।
अण्णोण्णस्सवगाहो पुग्गलजीवप्पगो भणिदो।।

फासेहिं	(फास) 3/2	स्पर्श गुणों से
पुग्गलाणं	(पुग्गल) 6/2	पुद्गलों का
बंधो	(बंध) 1/1	बंध
जीवस्स	(जीव) 6/1	जीव का
रागमादीहिं	[(रागं)+(आदीहिं)]	
	रागं (रागं) 'द्वितीयार्थक' अव्यय	राग से और
	आदीहिं (आदि) 3/2	इसी प्रकार और भी
अण्णोण्णस्सवगाहो	[(अण्णोण्णस्स)+(अवगाहो)]	
	अण्णोण्णस्स[1](अण्णोण्ण) 6/1 वि	परस्पर में
	अवगाहो (अवगाह) 1/1	अन्तर्गमन
पुग्गलजीवप्पगो	[(पुग्गल)-(जीवप्पग) 1/1 वि]	पुद्गल कर्म और चेतन जीव से निर्मित
भणिदो	(भण→भणिद) भूकृ 1/1	कहा गया

अन्वय- फासेहिं पुग्गलाणं बंधो रागमादीहिं जीवस्स अण्णोण्णस्स अवगाहो पुग्गलजीवप्पगो भणिदो।

अर्थ- स्पर्श गुणों (रूक्षता और स्निग्धता) से पुद्गलों का (आपस में) बंध (होता है)। राग से और इसी प्रकार और (कषायों) से भी जीव का (भाव-बंध) (होता है)। (पुद्गल और जीव का) (कषायों के कारण) परस्पर में अन्तर्गमन (भी) पुद्गल कर्म और चेतनजीव से निर्मित (आपसी) (बंध) कहा गया (है)।

---

1. कभी-कभी सप्तमी विभक्ति के स्थान पर षष्ठी विभक्ति का प्रयोग पाया जाता है। (हेम -प्राकृत-व्याकरणः 3-134)

86. सपदेसो सो अप्पा तेसु पदेसेसु पुग्गला काया।
पविसंति जहाजोगं चिट्ठंति हि जंति बज्झंति।।

सपदेसो	(स-पदेस) 1/1 वि	प्रदेश-सहित
सो	(त) 1/1 सवि	वह
अप्पा	(अप्प) 1/1	आत्मा
तेसु	(त) 7/2 सवि	उन
पदेसेसु	(पदेस) 7/2	प्रदेशों में
पुग्गला	(पुग्गल) 1/2	पुद्गल
काया	(काय) 1/2	समूह
पविसंति	(पविस) व 3/2 सक	प्रवेश करते हैं
जहाजोगं	अव्यय	विधि-अनुसार
चिट्ठंति	(चिट्ठ) व 3/2 अक	ठहरते हैं
हि	अव्यय	निश्चय ही
जंति	(जा) व 3/2 सक	नष्ट होते हैं
बज्झंति	(बज्झंति) व कर्म 3/2 अनि	बाँधे जाते हैं

अन्वय– सो अप्पा सपदेसो तेसु पदेसेसु पुग्गला काया हि जहाजोगं पविसंति बज्झंति चिट्ठंति जंति।

अर्थ– वह आत्मा प्रदेश-सहित (असंख्यात प्रदेशी) (होता है)। उन (आत्म) प्रदेशों में पुद्गल समूह निश्चय ही विधि-अनुसार प्रवेश करते हैं, बाँधे जाते हैं, ठहरते हैं (और) नष्ट होते हैं।

87. **रत्तो बंधदि कम्मं मुच्चदि कम्मेहिं रागरहिदप्पा।**
एसो बंधसमासो जीवाणं जाण णिच्छयदो।।

रत्तो	(रत्त) भूक 1/1 अनि	राग-युक्त
बंधदि	(बंध) व 3/1 सक	बाँधता है
कम्मं	(कम्म) 2/1	कर्म को
मुच्चदि	(मुच्चदि) व कर्म 3/1 अनि	छुटकारा पाता है
कम्मेहिं	(कम्म) 3/2	कर्मों से
रागरहिदप्पा	[(रागरहिद)+(अप्पा)]	
	[(राग)-(रहिद) भूक अनि-	राग-रहित
	(अप्प) 1/1]	आत्मा
एसो	(एत) 1/1 सवि	यह
बंधसमासो	[(बंध)-(समास) 1/1]	बंध का संक्षेप
जीवाणं	(जीव) 4/2	जीवों के लिए
जाण	(जाण) आज्ञा 2/1 सक	जानो
णिच्छयदो	(णिच्छयदो) अव्यय	निश्चयपूर्वक
	पंचमीअर्थक 'दो' प्रत्यय	

अन्वय- रत्तो कम्मं बंधदि रागरहिदप्पा कम्मेहिं मुच्चदि जीवाणं णिच्छयदो एसो बंधसमासो जाण।

अर्थ- राग-युक्त (आसक्त) (जीव) कर्म को बाँधता है, राग-रहित (अनासक्ति से युक्त) आत्मा कर्मों से छुटकारा पाता है। जीवों के लिए निश्चयपूर्वक यह बंध का संक्षेप (कथन है)। (तुम) जानो।

88. परिणामादो बंधो परिणामो रागदोसमोहजुदो।
असुहो मोहपदोसो सुहो व असुहो हवदि रागो।।

परिणामादो	(परिणाम) 5/1	परिणाम से
बंधो	(बंध) 1/1	बंध
परिणामो	(परिणाम) 1/1	परिणाम
रागदोसमोहजुदो	[(राग)-(दोस)-(मोह)- (जुद) भूकृ 1/1 अनि]	राग, द्वेष, मोह युक्त
असुहो	(असुह) 1/1 वि	अशुभ
मोहपदोसो	[(मोह)-(पदोस) 1/1]	मोह, द्वेष
सुहो	(सुह) 1/1 वि	शुभ
व	अव्यय	और
असुहो	(असुह) 1/1 वि	अशुभ
हवदि	(हव) व 3/1 अक	होता है
रागो	(राग) 1/1	राग

अन्वय– परिणामादो बंधो परिणामो रागदोसमोहजुदो मोहपदोसो असुहो रागो सुहो व असुहो हवदि।

अर्थ– (अशुद्धोपयोग रूप) परिणाम से बंध (होता है)। परिणाम राग (आसक्ति), द्वेष (शत्रुता) और मोह (आत्मविस्मृति) युक्त (होता है)। मोह (आत्मविस्मृति) और द्वेष (शत्रुता) अशुभ (होता है) (तथा) राग शुभ और अशुभ होता है।

89. सुहपरिणामो पुण्णं असुहो पाव त्ति भणियमण्णेसु।
परिणामो णण्णगदो दुक्खक्खयकारणं समये।।

सुहपरिणामो	[(सुह) वि-(परिणाम) 1/1]	शुभपरिणाम
पुण्णं	(पुण्ण) 1/1	पुण्य
असुहो	(असुह) 1/1 वि	अशुभ
पाव त्ति	[(पावो)+(इति)]	
	पावो (पाव) 1/1 वि	पाप
	इति (अ) =	पादपूरक
भणियमण्णेसु	[(भणियं)+(अण्णेसु)]	
	भणियं (भण→भणिय) भूकृ 1/1	कहा गया
	अण्णेसु (अण्ण) 7/2 सवि	पर के प्रति
परिणामो	(परिणाम) 1/1	परिणाम
णण्णगदो	[(ण) अ-(अण्ण) सवि-(गद) भूकृ 1/1 अनि]	पर में नहीं गया हुआ
दुक्खक्खयकारणं	[(दुक्ख)-(क्खय)-(कारण) 1/1]	दुःख के नाश का कारण
समये	(समय) 7/1	आगम में

अन्वय- अण्णेसु सुहपरिणामो पुण्णं असुहो पाव त्ति परिणामो णण्णगदो समये दुक्खक्खयकारणं भणियं।

अर्थ- पर के प्रति (जो) शुभ परिणाम (है) (वह) पुण्य (है), (जो) अशुभ (परिणाम) (है) (वह) पाप (है)। (तथा) (जो) (परिणाम) पर में गया हुआ नहीं (है) (वह) आगम में दुःख के नाश का कारण कहा गया (है)।

90. भणिदा पुढविप्पमुहा जीवणिकायाध थावरा य तसा।
अण्णा ते जीवादो जीवो वि य तेहिंदो अण्णो।।

भणिदा	(भण→भणिद) भूकृ 1/2	कहे गये
पुढविप्पमुहा	[(पुढवि)-(प्पमुहा) 1/2 वि]	पृथ्वी वगैरह/आदि
जीवणिकायाध	[(जीवणिकाया)+(अध)]	
	[(जीव)-(णिकाय) 1/2]	जीव-समूह
	अध (अ) = अब	अब
थावरा	(थावर) 1/2	स्थावर
य	अव्यय	और
तसा	(तस) 1/2	त्रस
अण्णा	(अण्ण) 1/2 सवि	अन्य
ते	(त) 1/2 सवि	वे
जीवादो	(जीव) 5/1	जीव से
जीवो	(जीव) 1/1	जीव
वि	अव्यय	भी
य	अव्यय	और
तेहिंदो	(त) 5/1 सवि	उनसे
अण्णो	(अण्ण) 1/1 वि	अन्य

अन्वय– अध पुढविप्पमुहा थावरा य तसा जीवणिकाया भणिदा ते जीवादो अण्णा य जीवो वि तेहिंदो अण्णो।

अर्थ– अब पृथ्वी वगैरह (आदि) स्थावर और त्रस (जो) जीव- समूह कहे गये हैं, वे सब (शुद्ध) जीव से अन्य है और (शुद्ध) जीव भी उनसे अन्य (है)।

91. जो णवि जाणदि एवं परमप्पाणं सहावमासेज्ज।
कीरदि अज्झवसाणं अहं ममेदं ति मोहादो।।

जो	(ज) 1/1 सवि	जो
णवि	अव्यय	नहीं
जाणदि	(जाण) व 3/1 सक	जानता है
एवं	अव्यय	अतः
परमप्पाणं	[(परं)+(अप्पाणं)]	
	परं (पर) 2/1 वि	पर को
	अप्पाणं (अप्पाण) 2/1	स्व को
सहावमासेज्ज	[(सहावं)+(आसेज्ज)]	
	सहावं (सहाव) 2/1	स्वभाव को
	आसेज्ज (आसेज्ज) संकृ अनि	अवलम्बन करके
कीरदि	(कीर) व 3/1 सक	करता है
अज्झवसाणं	(अज्झवसाण) 2/1	चिंतन
अहं	(अम्ह) 1/1 स	मैं
ममेदं ति	[(मम)+(इदं)+(इति)]	
	मम (अम्ह) 6/1 स	मेरा
	इदं (इम) 1/1 स	यह
	इति (अ) = इस प्रकार	इस प्रकार
मोहादो[1]	(मोह) 5/1	मोह के कारण

अन्वय– एवं जो सहावमासेज्ज परमप्पाणं णवि जाणदि मोहादो अज्झवसाणं कीरदि अहं ममेदं ति।

अर्थ– अतः जो स्वभाव को अवलम्बन करके पर को (तथा) स्व को नहीं जानता (है) (वह) मोह के कारण (विपरीत) चिंतन करता है (कि) (पर) मैं (हूँ) (तथा) यह (पर) मेरा (है)।

---

1. गुणवाचक अस्त्रीलिंग संज्ञा शब्द (पु.नपुं. संज्ञा शब्द) जो किसी क्रिया या घटना का कारण बताता है, उसे पंचमी विभक्ति में रखा जाता है। (प्राकृत-व्याकरण, पृष्ठ 42)

92. कुव्वं सभावमादा हवदि हि कत्ता सगस्स भावस्स।
पोग्गलदव्वमयाणं ण दु कत्ता सव्वभावाणं।।

कुव्वं	(कुव्वं) वकृ 1/1 अनि	ग्रहण करते हुए
सभावमादा	[(सभावं)+(आदा)]	
	सभावं (सभाव) 2/1	स्वभाव को
	आदा (आद) 1/1	आत्मा
हवदि	(हव) व 3/1 अक	होता है
हि	अव्यय	निश्चय ही
कत्ता	(कत्तु) 1/1 वि	करनेवाला
सगस्स	(सग) 6/1 वि	स्व-संबंधी
भावस्स	(भाव) 6/1	क्रिया का
पोग्गलदव्वमयाणं	[(पोग्गल)-(दव्वमय) 6/2 वि]	पुद्गल द्रव्यसंबंधी
ण	अव्यय	नहीं
दु	अव्यय	किन्तु
कत्ता	(कत्तु) 1/1 वि	करनेवाला
सव्वभावाणं	[(सव्व) सवि-(भाव) 6/2]	सब क्रिया का

अन्वय–आदा सभावं कुव्वं सगस्स भावस्स कत्ता हि हवदि दु पोग्गलदव्वमयाणं सव्वभावाणं कत्ता ण।

अर्थ– आत्मा स्वभाव को ग्रहण करते हुए स्व-संबंधी क्रिया का करनेवाला निश्चय ही होता है किन्तु (वह) पुद्गल द्रव्यसंबंधी किसी भी क्रिया का करनेवाला नहीं (होता है)।

93. गेण्हदि णेव ण मुंचदि करेदि ण हि पोग्गलाणि कम्माणि।
जीवो पुग्गलमज्झे वट्टण्णवि सव्वकालेसु।।

गेण्हदि	(गेण्ह) व 3/1 सक	ग्रहण करता है
णेव	अव्यय	न ही
ण	अव्यय	न
मुंचदि	(मुंच) व 3/1 सक	छोड़ता है
करेदि	(कर) व 3/1 सक	रचता है
ण	अव्यय	न
हि	अव्यय	ही
पोग्गलाणि	(पोग्गल) 2/2	पुद्गल
कम्माणि	(कम्म) 2/2	कर्मों को
जीवो	(जीव) 1/1	जीव
पुग्गलमज्झे	[(पुग्गल)-(मज्झ) 7/1]	पुद्गल के मध्य में
* वट्टण्णवि	[(वट्टण)+(अवि)]	
(मूल शब्द)	वट्टण्णो (वट्टण्ण) 1/1 वि	रहनेवाला
	अवि (अ) = भी	भी
सव्वकालेसु	[(सव्व) सवि-(काल) 7/2]	सब कालों में

अन्वय– जीवो सव्वकालेसु पुग्गलमज्झे वट्टण्णवि पोग्गलाणि कम्माणि णेव गेण्हदि ण मुंचदि ण हि करेदि।

अर्थ– (शुद्ध) जीव सब कालों में पुद्गल के मध्य में (ही) रहनेवाला (है) (तो) भी (वह) पुद्गल कर्मों को न ही ग्रहण करता है, न छोड़ता है, न ही रचता है।

---

* प्राकृत में किसी भी कारक के लिए मूल संज्ञा शब्द काम में लाया जा सकता है। (पिशलः प्राकृत भाषाओंका व्याकरण, पृष्ठ 517)

94. स इदाणिं कत्ता सं सगपरिणामस्स दव्वजादस्स।
आदीयदे कदाई विमुच्चदे कम्मधूलीहिं।।

स	(त) 1/1 सवि	वह
इदाणिं	अव्यय	इस संसार में
कत्ता	(कत्तु) 1/1 वि	कर्त्ता
सं	अव्यय	निस्संदेह
सगपरिणामस्स	[(सग) वि-(परिणाम) 6/1]	स्व-संबंधी परिवर्तन/भाव का
दव्वजादस्स	[(दव्व)-(जाद) भूक 6/1]	पुद्गल कर्म से उत्पन्न हुए
आदीयदे	(आदा+ईय्) व कर्म 3/1	पकड़ा जाता है
कदाई	अव्यय	कभी
विमुच्चदे	(विमुच्चदे) व कर्म 3/1 अनि	छोड़ दिया जाता है
कम्मधूलीहिं	[(कम्म)-(धूलि) 3/2]	कर्मधूलि से

अन्वय– स इदाणिं दव्वजादस्स सगपरिणामस्स सं कत्ता कदाई कम्मधूलीहिं आदीयदे विमुच्चदे।

अर्थ– वह (कर्म से युक्त आत्मा) इस (आवागमनात्मक) संसार में पुद्गल कर्म से उत्पन्न हुए स्व-संबंधी परिवर्तन/भाव का निस्सन्देह कर्ता (है) (तथा वह) कभी कर्मधूलि से पकड़ा जाता है (और) (किसी समय में) छोड़ दिया जाता है।

95. परिणमदि जदा अप्पा सुहम्हि असुहम्हि रागदोसजुदो।
तं पविसदि कम्मरयं णाणावरणादिभावेहिं।।

परिणमदि	(परिणम) व 3/1 सक	परिणमन करता है
जदा	अव्यय	जब
अप्पा	(अप्प) 1/1	आत्मा
सुहम्हि	(सुह) 7/1 वि	शुभ में
असुहम्हि	(असुह) 7/1 वि	अशुभ में
रागदोसजुदो	[(राग)-(दोस)-(जुद) भूकृ 1/1 अनि]	राग, द्वेष (भाव) से युक्त
तं[1]	(त) 2/1 सवि	उसमें
पविसदि	(पविस) व 3/1 सक	प्रवेश करती है
कम्मरयं	[(कम्म)-(रय) 1/1]	कर्मरूपी धूल
णाणावरणादिभावेहिं	[(णाणावरण)-(आदि)-(भाव) 3/2]	ज्ञानावरण और अन्य विकृतियों के साथ

अन्वय- रागदोसजुदो अप्पा जदा सुहम्हि असुहम्हि परिणमदि णाणावरणादिभावेहिं कम्मरयं तं पविसदि।

अर्थ- राग-द्वेष (भाव) से युक्त आत्मा जब शुभ-अशुभ (भाव) में परिणमन करता है (तो) ज्ञानावरण और अन्य विकृतियों के साथ कर्मरूपी धूल उसमें प्रवेश करती है।

---

1. कभी-कभी सप्तमी विभक्ति के स्थान पर द्वितीया विभक्ति का प्रयोग पाया जाता है। (हेम-प्राकृत-व्याकरणः 3-137)

96. सपदेसो सो अप्पा कसायिदो मोहरागदोसेहिं।
कम्मरजेहिं सिलिट्ठो बंधो त्ति परूविदो समये।।

सपदेसो	(स-पदेस) 1/1 वि	प्रदेश-सहित
सो	(त) 1/1 सवि	वह
अप्पा	(अप्प) 1/1	आत्मा
कसायिदो	(कसायिद) 1/1 वि	ग्रस्त
मोहरागदोसेहिं	[(मोह)-(राग)-(दोस) 3/2]	मोह, राग और द्वेष से
कम्मरजेहिं	[(कम्म)-(रज) 3/2]	कर्मरूपी धूल से
सिलिट्ठो	(सिलिट्ठ) भूकृ 1/1 अनि	संयुक्त
बंधो त्ति	[(बंधो)-(इति)]	
	बंधो (बंध) 1/1	बंध
	इति (अ) = इस प्रकार	इस प्रकार
परूविदो	(परूविद) भूकृ 1/1 अनि	कहा गया
समये	(समय) 7/1	आगम में

अन्वय- सो सपदेसो अप्पा मोहरागदोसेहिं कसायिदो कम्मरजेहिं सिलिट्ठो समये बंधो त्ति परूविदो।

अर्थ- वह प्रदेश-सहित आत्मा (जब) मोह, राग और द्वेष से ग्रस्त (होता है) (तब) (वह) कर्मरूपी धूल से संयुक्त (हो जाता है)। आगम में इस प्रकार बंध (कर्मबंध) कहा गया (है)।

97. एसो बंधसमासो जीवाणं णिच्छयेण णिद्दिट्ठो।
अरहंतेहिं जदीणं ववहारो अण्णहा भणिदो।।

एसो	(एत) 1/1 सवि	यह
बंधसमासो	[(बंध)-(समास) 1/1]	बंध का संक्षेप
जीवाणं	(जीव) 4/2	जीवों के लिए
णिच्छयेण	(णिच्छय) 3/1	वास्तविकरूप से
णिद्दिट्ठो	(णिद्दिट्ठ) भूक 1/1 अनि	कहा गया
अरहंतेहिं	(अरहंत) 3/2	अरहंतों के द्वारा
जदीणं	(जदि) 4/2	मुनियों के लिए
ववहारो	(ववहार) 1/1	व्यवहार
अण्णहा	अव्यय	अन्य प्रकार से
भणिदो	(भण→भणिद) भूक 1/1	कहा गया

अन्वय- एसो जीवाणं बंधसमासो अरहंतेहिं जदीणं णिच्छयेण णिद्दिट्ठो अण्णहा ववहारो भणिदो।

अर्थ- (पूर्वोक्त प्रकार से वर्णित) यह जीवों के (कर्म) बंध का संक्षेप (है)। अरहंतों के द्वारा मुनियों के लिए (यह संक्षेप) निश्चयनय से कहा गया (है)। (जो) अन्य प्रकार से (विस्तार) (है) (वह) व्यवहार कहा गया (है)।

नोटः सम्पादक द्वारा अनूदित

98. ण चयदि जो दु ममत्तिं अहं ममेदं ति देहदविणेसु।
सो सामण्णं चत्ता पडिवण्णो होदि उम्मग्गं।।

ण	अव्यय	नहीं
चयदि	(चय) व 3/1 सक	छोड़ता है
जो	(ज) 1/1 सवि	जो
दु	अव्यय	और
ममत्तिं	(ममत्ति) 2/1	ममता को
अहं	(अम्ह) 1/1 स	मैं
ममेदं ति	[(मम)+(इदं)+(इति)]	
	मम (अम्ह) 6/1 स	मेरा
	इदं (इम) 1/1 स	यह
	इति (अ) = इस प्रकार	इस प्रकार
देहदविणेसु	[(देह)-(दविण) 7/2]	शरीर और संपत्ति में
सो	(त) 1/1 सवि	वह
सामण्णं	(सामण्ण) 2/1	श्रमणता को
चत्ता	संकृ अनि	छोड़कर
पडिवण्णो[1]	(पडिवण्ण) भूकृ 1/1 अनि	ग्रहण किया
होदि	(हो) व 3/1 अक	रहता है
उम्मग्गं	(उम्मग्ग) 2/1	विपरीत मार्ग

अन्वय– देहदविणेसु दु अहं ममेदं ति जो ममत्तिं ण चयदि सो सामण्णं चत्ता होदि उम्मग्गं पडिवण्णो ।

अर्थ– शरीर और संपत्ति में मैं (यह हूँ) और मेरा यह (है) इस प्रकार जो ममता को नहीं छोड़ता है, वह श्रमणता को छोड़कर रहता है। (इस प्रकार) (उसने) विपरीत मार्ग ग्रहण किया (है)।

---

1. यहाँ भूतकालिक कृदन्त का प्रयोग कर्तृवाच्य में किया गया है।

99. णाहं होमि परेसिं ण मे परे संति णाणमहमेक्को।
इदि जो झायदि झाणे सो अप्पाणं हवदि झादा।।

णाहं	[(ण)+(अहं)]	
	ण (अ) = नहीं	नहीं
	अहं (अम्ह) 1/1 स	मैं
होमि	(हो) व 1/1 अक	हूँ
परेसिं	(पर) 6/2 वि	पर का
ण	अव्यय	नहीं
मे	(अम्ह) 6/1 स	मेरे
परे	(पर) 1/2 वि	पर
संति	(संति) व 3/2 अक अनि	हैं
णाणमहमेक्को	[(णाणं)+(अहं)+(एक्को)]	
	णाणं (णाण) 1/1	ज्ञान
	अहं (अम्ह) 1/1 स	मैं
	एक्को (एक्क) 1/1 वि	अकेला
इदि	अव्यय	इस प्रकार
जो	(ज) 1/1 सवि	जो
झायदि	(झा) व 3/1 सक 'य' विकरण	चिंतन करता है
झाणे	(झाण) 7/1	ध्यान में
सो	(त) 1/1 सवि	वह
अप्पाणं[1]	(अप्पाण) 2/1	आत्मा में
हवदि	(हव) व 3/1 अक	होता है
झादा	(झादु) 1/1 वि	ध्यान करनेवाला

अन्वय– अहं परेसिं ण होमि परे मे ण संति अहं णाणं एक्को इदि जो झाणे झायदि सो अप्पाणं झादा हवदि।

अर्थ– मैं पर का नहीं हूँ, (और) पर मेरे नहीं हैं, मैं ज्ञान (रूप हूँ) अकेला (हूँ)। इस प्रकार जो ध्यान में चिंतन करता है, वह आत्मा में ध्यान करनेवाला होता है।

---

1. कभी-कभी सप्तमी विभक्ति के स्थान पर द्वितीया विभक्ति का प्रयोग पाया जाता है। (हेम-प्राकृत-व्याकरणः 3-137)

100. एवं णाणप्पाणं दंसणभूदं अदिंदियमहत्थं।
धुवमचलमणालंबं मण्णेऽहं अप्पगं सुद्धं।।

एवं	अव्यय	इस प्रकार
णाणप्पाणं	(णाणप्पाण) 2/1 वि	ज्ञानस्वरूप
दंसणभूदं	(दंसणभूद) 2/1 वि	दर्शनमय
अदिंदियमहत्थं	[(अदिंदिय)-(महत्थ) 2/1 वि]	अतीन्द्रिय, महापदार्थ
धुवमचलमणालंबं	[(धुवं)+(अचलं)+(अणालंबं)]	
	धुवं (धुव) 2/1 वि	शाश्वत
	अचलं (अचल) 2/1 वि	दृढ़
	अणालंबं (अणालंब) 2/1 वि	(पर के) आलम्बन से रहित
मण्णेऽहं	[(मण्णे)+(अहं)]	
	मण्णे (मण्णे) व 1/1 सक अनि	मानता हूँ
	अहं (अम्ह) 1/1 स	मैं
अप्पगं	(अप्पग) 2/1	आत्मा को
सुद्धं	(सुद्ध) 2/1 वि	शुद्ध

अन्वय– एवं अहं अप्पगं सुद्धं णाणप्पाणं दंसणभूदं अदिंदियमहत्थं धुवमचलमणालंबं मण्णे।

अर्थ– इस प्रकार मैं आत्मा को शुद्ध, ज्ञानस्वरूप, दर्शनमय, अतीन्द्रिय, महापदार्थ, शाश्वत, (स्वभाव में) दृढ़, (पर के) आलम्बन से रहित (स्वाधीन) मानता हूँ।

101. देहा वा दविणा वा सुहदुक्खा वाध सत्तुमित्तजणा।
जीवस्स ण संति धुवा धुवोवओगप्पगो अप्पा।।

देहा	(देह) 1/2	शरीर
वा	अव्यय	अथवा
दविणा	(दविण) 1/2	संपत्ति
वा	अव्यय	अथवा
सुहदुक्खा	[(सुह)-(दुक्ख) 1/2]	सुख-दुःख
वाध	[(वा)+(अध)]	
	वा (अ) = और	और
	अध (अ) = इसी भाँति	इसी भाँति
सत्तुमित्तजणा	[(सत्तु)-(मित्त)-(जण) 1/2]	शत्रु-मित्र लोग
जीवस्स	(जीव) 6/1	जीव के
ण	अव्यय	नहीं
संति	(संति) व 3/2 अक अनि	होते हैं
धुवा	(धुव) 1/2 वि	शाश्वत
धुवोवओगप्पगो	[(धुव)+(उवओग)+(अप्पगो)]	
	[(धुव)-(उवओगप्पग)	शाश्वत,
	1/1 वि]	उपयोगस्वरूपवाला
अप्पा	(अप्प) 1/1	आत्मा

अन्वय- देहा वा दविणा वा सुहदुक्खा वाध सत्तुमित्तजणा जीवस्स ण संति धुवोवओगप्पगो अप्पा धुवा।

अर्थ- शरीर अथवा सम्पत्ति अथवा सुख-दुःख और इसी भाँति शत्रु-मित्र लोग जीव के शाश्वत नहीं होते हैं। (केवल) उपयोगस्वरूपवाला आत्मा शाश्वत (है)।

102. जो एवं जाणित्ता झादि परं अप्पगं विसुद्धप्पा।
सागारोऽणागारो खवेदि सो मोहदुग्गंठिं।।

जो	(ज) 1/1 सवि	जो
एवं	अव्यय	इस प्रकार
जाणित्ता	संकृ	जानकर
झादि	(झा) व 3/1 सक	ध्यान करता है
परं	(पर) 2/1 वि	परम
अप्पगं	(अप्पग) 2/1	आत्मा
विसुद्धप्पा	[(विसुद्ध)+(अप्पा)]	
	[(विसुद्ध) वि-(अप्प) 1/1]	सद्गुणी आत्मा
सागारोऽणागारो	[(सागारो)+(अणागारो)]	
	सागारो (सागार) 1/1	श्रावक
	अणागारो (अणागार) 1/1	मुनि
खवेदि	(खव) व 3/1 सक	नाश करता है
सो	(त) 1/1 सवि	वह
मोहदुग्गंठिं	[(मोह)-(दुग्गंठि) 2/1]	मोहरूपी कठिन गाँठ

अन्वय– जो सागारोऽणागारो एवं जाणित्ता परं अप्पगं झादि सो विसुद्धप्पा मोहदुग्गंठि खवेदि।

अर्थ– जो श्रावक (या) मुनि (आत्मा के स्वरूप को) इस प्रकार जानकर परम आत्मा का ध्यान करता है, वह सद्गुणी आत्मा मोहरूपी (आत्मविस्मृतिरूपी) कठिन गाँठ का नाश करता है।

103. जो णिहदमोहगंठी रागपदोसे खवीय सामण्णे।
होज्जं समसुहदुक्खो सो सोक्खं अक्खयं लहदि।।

जो	(ज) 1/1 सवि	जो
णिहदमोहगंठी	[(णिहद) भूकृ अनि-(मोह)-(गंठि) 1/1]	नष्ट कर दी गयी मोहरूपी गाँठ
रागपदोसे	[(राग)-(पदोस) 2/2]	राग-द्वेष
खवीय	(खविय→खवीय) संकृ	नष्ट करके
	छन्द की पूर्ति हेतु 'खविय का खवीय' किया गया है	
सामण्णे	(सामण्ण) 7/1	श्रमण अवस्था में
होज्जं[1]	(होज्ज) व 3/1 अक	होता है
समसुहदुक्खो	(समसुहदुक्ख) 1/1 वि	समान सुखदुःखवाला
सो	(त) 1/1 सवि	वह
सोक्खं	(सोक्ख) 2/1	सुख को
अक्खयं	(अक्खय) 2/1 वि	अक्षय
लहदि	(लह) व 3/1 सक	प्राप्त करता है

अन्वय- णिहदमोहगंठी जो सामण्णे रागपदोसे खवीय समसुहदुक्खो होज्जं सो अक्खयं सोक्खं लहदि।

अर्थ- (जिस श्रावक या मुनि के द्वारा) मोहरूपी (आत्मविस्मृतिरूपी) गाँठ नष्ट कर दी गई है, जो श्रमण अवस्था में राग-द्वेष नष्ट करके समान सुख-दुःखवाला होता है, वह अक्षय सुख को प्राप्त करता है।

---

1. छन्द की मात्रा की पूर्ति हेतु अनुस्वार का आगम हुआ है।

104. जो खविदमोहकलुसो विसयविरत्तो मणो णिरुंभित्ता।
समवट्ठिदो सहावे सो अप्पाणं हवदि झादा।।

जो	(ज) 1/1 सवि	जो
खविदमोहकलुसो	[(खविद) भूकृ -(मोह)-(कलुस) 1/1]	नष्ट कर दी गई मोहरूपी मलिनता
विसयविरत्तो	[(विसय)-(विरत्त) भूकृ 1/1 अनि]	विषयों से विरक्त
मणो	(मणो) 2/1 अनि	मन को
णिरुंभित्ता	(णिरुंभ+इत्ता) संकृ	रोककर
समवट्ठिदो	(समवट्ठिद) भूकृ 1/1 अनि	अवस्थित
सहावे	(सहाव) 7/1	स्वभाव में
सो	(त) 1/1 सवि	वह
अप्पाणं[1]	(अप्पाण) 2/1	आत्मा में
हवदि	(हव) व 3/1 अक	होता है
झादा	(झादु) 1/1 वि	ध्यान लगानेवाला

अन्वय– खविदमोहकलुसो विसयविरत्तो जो मणो णिरुंभित्ता सहावे समवट्ठिदो सो अप्पाणं झादा हवदि।

अर्थ– (जिसके द्वारा) मोहरूपी (आत्मविस्मृतिरूपी) मलिनता नष्ट कर दी गई (है), (जो) विषयों से विरक्त (है), (तथा) जो मन को रोककर स्वभाव में अवस्थित (है) वह आत्मा में ध्यान लगानेवाला होता है।

---

1. कभी-कभी सप्तमी विभक्ति के स्थान पर द्वितीया विभक्ति का प्रयोग पाया जाता है। (हेम-प्राकृत-व्याकरणः 3-137)

105. णिहदघणघादिकम्मो पच्चक्खं सव्वभावतच्चण्हू।
णेयंतगदो समणो झादि कमट्ठं असंदेहो।।

णिहदघणघादिकम्मो	[(णिहद) भूकृ अनि-(घन)वि-(घादि) वि-(कम्म) 1/1]	प्रगाढ़ घातिया कर्म नष्ट कर दिये गये
पच्चक्खं	(पच्चक्खं) अव्यय द्वितीयार्थक अव्यय	प्रत्यक्ष रूप से
सव्वभावतच्चण्हू	[(सव्व) सवि-(भाव)-(तच्चण्हु) 1/1 वि]	समस्त पदार्थ के स्वरूप का जाननेवाला
णेयंतगदो	[(णेय) विधिकृ अनि-(अंतगद) भूकृ 1/1 अनि]	जानने योग्य (पदार्थों का) अंत पा लिया गया
समणो	(समण) 1/1	श्रमण
झादि	(झा) व 3/1 सक	ध्यान करता है
कमट्ठं	[(कं)-(अट्ठं)]	
	कं (क) 2/1 सवि	किस
	अट्ठं (अट्ठ) 2/1	पदार्थ
असंदेहो	(असंदेह) 1/1 वि	संदेह-रहित

अन्वय- णिहदघणघादिकम्मो पच्चक्खं सव्वभावतच्चण्हू णेयंतगदो असंदेहो समणो कमट्ठं झादि।

अर्थ- (जिसके द्वारा) प्रगाढ़ घातियाकर्म[1] नष्ट कर दिये गये (हैं), (जो) प्रत्यक्ष रूप से समस्त पदार्थों के स्वरूप को जाननेवाला (है), (तथा) (जिसके द्वारा) जानने योग्य (पदार्थों का) अंत पा लिया गया (है) (वह) संदेह-रहित श्रमण किस पदार्थ का ध्यान करता है?

---

1. आत्म-स्वरूप को आच्छादित करनेवाले कर्म।

106. सव्वाबाधविजुत्तो समंतसव्वक्खसोक्खणाणड्ढो।
भूदो अक्खातीदो झादि अणक्खो परं सोक्खं।।

सव्वाबाधविजुत्तो	[(सव्व)[1] सवि-(बाध)-(विजुत्त) भूकृ 1/1 अनि]	समस्त बाधाओं से रहित
समंतसव्वक्खसोक्ख-णाणड्ढो	[(समंत)[2] अ-(सव्व) सवि-(अक्ख)-(सोक्ख)-(णाण)-(अड्ढ) 1/1 वि]	पूरी तरह से समस्त इन्द्रियों के सुख और ज्ञान से समृद्ध
भूदो	(भूद) भूकृ 1/1 अनि	हुआ
अक्खातीदो	(अक्खातीद) 1/1 वि	इन्द्रियज्ञान से परे
झादि	(झा) व 3/1 सक	ध्यान करता है
अणक्खो	(अणक्ख) 1/1 वि	इन्द्रिय-विषयों से रहित
परं	(पर) 2/1 वि	परम
सोक्खं	(सोक्ख) 2/1	सुख का

अन्वय–सव्वाबाधविजुत्तो अक्खातीदो अणक्खो समंतसव्वक्ख-सोक्खणाणड्ढो भूदो परं सोक्खं झादि ।

अर्थ– समस्त बाधाओं से रहित, इन्द्रियज्ञान से परे, इन्द्रिय-विषयों से रहित, पूरी तरह से समस्त इन्द्रियों के सुख और ज्ञान से समृद्ध हुआ (श्रमण) परम सुख का ध्यान करता है।

---

1. समास में अधिकतर प्रथम शब्द का अंतिम स्वर ह्रस्व हो तो दीर्घ हो जाता है और दीर्घ हो तो ह्रस्व हो जाता है। (प्राकृत-व्याकरण, पृ. 21) (हेम-1/4)

2. यहाँ छन्द की पूर्ति हेतु समंता→समंत किया गया है।

107. एवं जिणा जिणिंदा सिद्धा मग्गं समुट्ठिदा समणा।
जादा णमोत्थु तेसिं तस्स य णिव्वाणमग्गस्स।।

एवं	अव्यय	इस प्रकार
जिणा	(जिण) 1/2	सामान्य केवली
जिणिंदा	(जिणिंद) 1/2	तीर्थंकर
सिद्धा	(सिद्ध) 1/2 वि	सिद्ध
मग्गं[1]	(मग्ग) 2/1	मार्ग की ओर
समुट्ठिदा	(समुट्ठिद) भूकृ 1/1 अनि	उचित प्रकार से प्रयत्नशील
समणा	(समण) 1/2	श्रमण
जादा	(जाद) भूकृ 1/2	हुए
णमोत्थु	[(णमो)+(अत्थु)]	
	णमो (अ) = नमस्कार	नमस्कार
	अत्थु (अत्थु) विधि 3/1 अक अनि	होवे
तेसिं[2]	(त) 4/2 सवि	उन सबको
तस्स[2]	(त) 4/1 सवि	उस
य	अव्यय	और
णिव्वाणमग्गस्स[2]	[(णिव्वाण)-(मग्ग) 4/1]	मोक्षमार्ग को

अन्वय– एवं जिणा जिणिंदा सिद्धा मग्गं समुट्ठिदा जादा समणा तेसिं य तस्स णिव्वाणमग्गस्स णमोत्थु।

अर्थ– इस प्रकार सामान्य केवली, तीर्थंकर, सिद्ध (तथा) मार्ग की ओर उचित प्रकार से प्रयत्नशील हुए श्रमण- उन सबको और उस मोक्षमार्ग को नमस्कार होवे।

---

1. 'की ओर' के योग में द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता है।
2. 'णमो' के योग में चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग होता है।

108. तम्हा तह जाणित्ता अप्पाणं जाणगं सभावेण।
परिवज्जामि ममत्तिं उवट्ठिदो णिम्ममत्तम्मि।।

तम्हा	अव्यय	इसलिए
तह	अव्यय	और
जाणित्ता	(जाण+इत्ता) संकृ	जानकर
अप्पाणं	(अप्पाण) 2/1	आत्मा को
जाणगं	(जाणग) 2/1 वि	ज्ञायक
सभावेण	(सभाव) 3/1	स्वभाव से
परिवज्जामि	(परिवज्ज) व 1/1 सक	छोड़ता हूँ
ममत्तिं	(ममत्ति) 2/1	ममता को
उवट्ठिदो	(उवट्ठिद) भूकृ 1/1 अनि	स्थित
णिम्ममत्तम्मि	(णिम्ममत्त) 7/1	ममता-रहितता में

अन्वय– तह तम्हा सभावेण जाणगं अप्पाणं जाणित्ता ममत्तिं परिवज्जामि णिम्ममत्तम्मि उवट्ठिदो।

अर्थ– और इसलिए स्वभाव से (ही) (जो ज्ञायक है) (उस) ज्ञायक आत्मा को जानकर (मैं) ममता को छोड़ता हूँ, (और) ममता-रहितता में स्थित (होता हूँ)।

मूल पाठ

1. अत्थो खलु दव्वमओ दव्वाणि गुणप्पगाणि भणिदाणि।
तेहिं पुणो पज्जाया पज्जयमूढा हि परसमया।।

2. जे पज्जयेसु णिरदा जीवा परसमयिग त्ति णिद्दिट्ठा।
आदसहावम्मि ठिदा ते सगसमया मुणेदव्वा।।

3. अपरिच्चत्तसहावेणुप्पादव्वयधुवत्तसंजुत्तं।
गुणवं च सपज्जायं जं तं दव्वं ति वुच्चंति।।

4. सब्भावो हि सहावो गुणेहिं सह पज्जएहिं चित्तेहिं।
दव्वस्स सव्वकालं उप्पादव्वयधुवत्तेहिं।।

5. इह विविहलक्खणाणं लक्खणमेगं सदिति सव्वगयं।
उवदिसदा खलु धम्मं जिणवरवसहेण पण्णत्तं।।

6. दव्वं सहावसिद्धं सदिति जिणा तच्चदो समक्खादा।
सिद्धं तध आगमदो णेच्छदि जो सो हि परसमओ।।

7. सदवट्ठिदं सहावे दव्वं दव्वस्स जो हि परिणामो।
अत्थेसु सो सहावो ठिदिसंभवणाससंबद्धो।।

8. ण भवो भंगविहीणो भंगो वा णत्थि संभवविहीणो।
उप्पादो वि य भंगो ण विणा धोव्वेण अत्थेण।।

9. उप्पादट्ठिदिभंगा विज्जंते पज्जएसु पज्जाया।
दव्वं हि संति णियदं तम्हा दव्वं हवदि सव्वं।।

10. समवेदं खलु दव्वं संभवठिदिणाससण्णिदट्ठेहिं।
एक्कम्मि चेव समये तम्हा दव्वं खु तत्तिदयं।।

11. पाडुब्भवदि य अण्णो पज्जाओ पज्जओ वयदि अण्णो।
दव्वस्स तं पि दव्वं णेव पणट्ठं ण उप्पण्णं।।

12. परिणमदि सयं दव्वं गुणदो य गुणंतरं सदविसिट्ठं।
तम्हा गुणपज्जाया भणिया पुण दव्वमेव त्ति।।

13. ण हवदि जदि सद्दव्वं असद्धुवं हवदि तं कहं दव्वं।
हवदि पुणो अण्णं वा तम्हा दव्वं सयं सत्ता।।

14. पविभत्तपदेसत्तं पुधत्तमिदि सासणं हि वीरस्स।
अण्णत्तमतब्भावो ण तब्भवं होदि कधमेगं।।

15. सद्दव्वं सच्च गुणो सच्चेव य पज्जओ त्ति वित्थारो।
जो खलु तस्स अभावो सो तदभावो अतब्भावो।।

16. जं दव्वं तं ण गुणो जो वि गुणो सो ण तच्चमत्थादो।
एसो हि अतब्भावो णेव अभावो त्ति णिद्दिट्ठो।।

17. जो खलु दव्वसहावो परिणामो सो गुणो सदविसिट्ठो।
सदवट्ठिदं सहावे दव्व त्ति जिणोवदेसोयं।।

18. णत्थि गुणो त्ति व कोई पज्जाओ त्तीह वा विणा दव्वं।
दव्वत्तं पुण भावो तम्हा दव्वं सयं सत्ता।।

19. एवंविहं सहावे दव्वं दव्वत्थपज्जयत्थेहिं।
सदसब्भावणिबद्धं पादुब्भावं सदा लभदि।।

20. जीवो भवं भविस्सदि णरोऽमरो वा परो भवीय पुणो।
किं दव्वत्तं पजहदि ण चयदि अण्णो कहं होदि।।

21. मणुवो ण हवदि देवो देवो वा माणुसो व सिद्धो वा।
एवं अहोज्जमाणो अणण्णभावं कधं लहदि।।

22. दव्वट्ठिएण सव्वं दव्वं तं पज्जयट्ठिएण पुणो।
हवदि य अण्णमणण्णं तक्काले तम्मयत्तादो।।

23. अत्थि त्ति य णत्थि त्ति य हवदि अवत्तव्वमिदि पुणो दव्वं।
पज्जायेण दु केण वि तदुभयमादिट्ठमण्णं वा।।

24. एसो त्ति णत्थि कोई ण णत्थि किरिया सहावणिव्वत्ता।
किरिया हि णत्थि अफला धम्मो जदि णिप्फलो परमो।।

25. कम्मं णामसमक्खं सभावमध अप्पणो सहावेण।
अभिभूय णरं तिरियं णेरइयं वा सुरं कुणदि।।

26. णरणारयतिरियसुरा जीवा खलु णामकम्मणिव्वत्ता।
ण हि ते लद्धसहावा परिणममाणा सकम्माणि।।

27. जायदि णेव ण णस्सदि खणभंगसमुब्भवे जणे कोई।
जो हि भवो सो विलओ संभवविलय त्ति ते णाणा।।

28. तम्हा दु णत्थि कोई सहावसमवट्ठिदो त्ति संसारे।
संसारो पुण किरिया संसरमाणस्स दव्वस्स।।

29. आदा कम्ममलिमसो परिणामं लहदि कम्मसंजुत्तं।
तत्तो सिलिसदि कम्मं तम्हा कम्मं तु परिणामो।।

30. परिणामो सयमादा सा पुण किरिय त्ति होदि जीवमया।
किरिया कम्म त्ति मदा तम्हा कम्मस्स ण दु कत्ता।।

31. परिणमदि चेदणाए आदा पुण चेदणा तिधाभिमदा।
सा पुण णाणे कम्मे फलम्मि वा कम्मणो भणिदा।।

32. णाणं अट्ठवियप्पो कम्मं जीवेण जं समारद्धं।
तमणेगविधं भणिदं फलं ति सोक्खं व दुक्खं वा।।

33. अप्पा परिणामप्पा परिणामो णाणकम्मफलभावी।
तम्हा णाणं कम्मं फलं च आदा मुणेदव्वो।।

34. कत्ता करणं कम्मं फलं च अप्प त्ति णिच्छिदो समणो।
परिणमदि णेव अण्णं जदि अप्पाणं लहदि सुद्धं।।

35. दव्वं जीवमजीवं जीवो पुण चेदणोवजोगमओ।
पोग्गलदव्वप्पमुहं अचेदणं हवदि अज्जीवं।।

36. पोग्गलजीवणिबद्धो धम्माधम्मत्थिकायकालड्ढो।
वट्टदि आगासे जो लोगो सो सव्वकाले दु।।

37. उप्पादट्ठिदिभंगा पोग्गलजीवप्पगस्स लोगस्स।
परिणामादो जायंते संघादादो व भेदादो।।

38. लिंगेहिं जेहिं दव्वं जीवमजीवं च हवदि विण्णादं।
तेऽतब्भावविसिट्ठा मुत्तामुत्ता गुणा णेया।।

39. मुत्ता इंदियगेज्झा पोग्गलदव्वप्पगा अणेगविधा।
दव्वाणममुत्ताणं गुणा अमुत्ता मुणेदव्वा।।

40. वण्णरसगंधफासा विज्जंते पोग्गलस्स सुहुमादो।
पुढवीपरियंतस्स य सद्दो सो पोग्गलो चित्तो।।

41. आगासस्सवगाहो धम्मद्दव्वस्स गमणहेदुत्तं।
धम्मेदरदव्वस्स दु गुणो पुणो ठाणकारणदा।।

42. कालस्स वट्टणा से गुणोवओगो त्ति अप्पणो भणिदो।
णेया संखेवादो गुणा हि मुत्तिप्पहीणाणं।।

43. जीवा पोग्गलकाया धम्माधम्मा पुणो य आगासं।
सपदेसेहिं असंखा णत्थि पदेस त्ति कालस्स।।

44. लोगालोगेसु णभो धम्माधम्मेहि आददो लोगो।
सेसे पडुच्च कालो जीवा पुण पोग्गला सेसा।।

45. जध ते णभप्पदेसा तधप्पदेसा हवंति सेसाणं।
अपदेसो परमाणू तेण पदेसुब्भवो भणिदो।।

46. समओ दु अप्पदेसो पदेसमेत्तस्स दव्वजादस्स।
वदिवददो सो वट्टदि पदेसमागासदव्वस्स।।

47. वदिवददो तं देसं तस्सम समओ तदो परो पुव्वो।
जो अत्थो सो कालो समओ उप्पण्णपद्धंसी।।

48. आगासमणुणिविट्ठं आगासपदेससण्णया भणिदं।
सव्वेसिं च अणूणं सक्कादि तं देदुमवगासं।।

49. एक्को व दुगे बहुगा संखातीदा तदो अणंता य।
दव्वाणं च पदेसा संति हि समय त्ति कालस्स।।

50. उप्पादो पद्धंसो विज्जदि जदि जस्स एकसमयम्हि।
समयस्स सो वि समओ सभावसमवट्ठिदो हवदि।।

51. एगम्हि संति समये संभवठिदिणाससण्णिदा अट्ठा।
समयस्स सव्वकालं एस हि कालाणुसब्भावो।।

52. जस्स ण संति पदेसा पदेसमेत्तं तु तच्चदो णादुं।
सुण्णं जाण तमत्थं अत्थंतरभूदमत्थीदो।।

53. सपदेसेहिं समग्गो लोगो अट्ठेहिं णिट्ठिदो णिच्चो।
जो तं जाणदि जीवो पाणचदुक्केण संबद्धो।।

54. इंदियपाणो य तधा बलपाणो तह य आउपाणो य।
आणप्पाणप्पाणो जीवाणं होंति पाणा ते।।

55. पाणेहिं चदुहिं जीवदि जीवस्सदि जो हि जीविदो पुव्वं।
सो जीवो ते पाणा पोग्गलदव्वेहिं णिव्वत्ता।।

56. जीवो पाणणिबद्धो बद्धो मोहादिएहिं कम्मेहिं।
उवभुंजदि कम्मफलं बज्झदि अण्णेहिं कम्मेहिं।।

57. पाणाबाधं जीवो मोहपदेसेहिं कुणदि जीवाणं।
जदि सो हवदि हि बंधो णाणावरणादिकम्मेहिं।।

58. आदा कम्ममलिमसो धरेदि पाणे पुणो पुणो अण्णे।
ण चयदि जाव ममत्तं देहपधाणेसु विसयेसु।।

59. जो इंदियादिविजई भवीय उवओगमप्पगं झादि।
कम्मेहिं सो ण रंजदि किह तं पाणा अणुचरंति।।

60. अत्थित्तणिच्छिदस्स हि अत्थस्सत्थंतरम्मि संभूदो।
अत्थो पज्जाओ सो संठाणादिप्पभेदेहिं।।

61. णरणारयतिरियसुरा संठाणादीहिं अण्णहा जादा।
पज्जाया जीवाणं उदयादीहिं णामकम्मस्स।।

62. तं सब्भावणिबद्धं दव्वसहावं तिहा समक्खादं।
जाणदि जो सवियप्पं ण मुहदि सो अण्णदवियम्हि।।

63. अप्पा उवओगप्पा उवओगो णाणदंसणं भणिदो।
सो वि सुहो असुहो वा उवओगो अप्पणो हवदि।।

64. उवओगो जदि हि सुहो पुण्णं जीवस्स संचयं जादि।
असुहो वा तध पावं तेसिमभावे ण चयमत्थि।।

65. जो जाणादि जिणिंदे पेच्छदि सिद्धे तहेव अणगारे।
जीवेसु साणुकंपो उवओगो सो सुहो तस्स।।

66. विसयकसाओगाढो दुस्सुदिदुच्चित्तदुट्ठगोट्ठिजुदो।
उग्गो उम्मग्गपरो उवओगो जस्स सो असुहो।।

67. असुहोवओगरहिदो सुहोवजुत्तो ण अण्णदवियम्हि।
होज्जं मज्झत्थोऽहं णाणप्पगमप्पगं झाए।।

68. णाहं देहो ण मणो ण चेव वाणी ण कारणं तेसिं।
कत्ता ण ण कारयिदा अणुमंता णेव कत्तीणं।।

69. देहो य मणो वाणी पोग्गलदव्वप्पग त्ति णिद्दिट्ठा।
पोग्गलदव्वं हि पुणो पिंडो परमाणुदव्वाणं।।

70. णाहं पोग्गलमइओ ण ते मया पोग्गला कया पिंडं।
तम्हा हि ण देहोऽहं कत्ता वा तस्स देहस्स।।

71. अपदेसो परमाणू पदेसमेत्तो य सयमसद्दो जो।
णिद्धो वा लुक्खो वा दुपदेसादित्तमणुहवदि।।

72. एगुत्तरमेगादी अणुस्स णिद्धत्तणं च लुक्खत्तं।
परिणामादो भणिदं जाव अणंतत्तमणुभवदि।।

73. णिद्धा वा लुक्खा वा अणुपरिणामा समा व विसमा वा।
समदो दुराधिगा जदि बज्झन्ति हि आदिपरिहीणा।।

74. णिद्धत्तणेण दुगुणो चदुगुणणिद्धेण बंधमणुभवदि।
लुक्खेण वा तिगुणिदो अणु बज्झदि पंचगुणजुत्तो।।

75. दुपदेसादि खंधा सुहुमा वा वादरा ससंठाणा।
पुढविजलतेउवाऊ सगपरिणामेहिं जायंते।।

76. ओगाढगाढणिचिदो पुग्गलकायेहिं सव्वदो लोगो।
सुहुमेहि बादरेहि य अप्पाओग्गेहिं जोग्गेहिं।।

77. कम्मत्तणपाओग्गा खंधा जीवस्स परिणइं पप्पा।
गच्छंति कम्मभावं ण हि ते जीवेण परिणमिदा।।

78. ते ते कम्मत्तगदा पोग्गलकाया पुणो वि जीवस्स।
संजायंते देहा देहंतरसंकमं पप्पा।।

79. ओरालिओ य देहो देहो वेउव्विओ य तेजइओ।
आहारय कम्मइओ पुग्गलदव्वप्पगा सव्वे।।

80. अरसमरूवमगंधं अव्वत्तं चेदणागुणमसद्दं।
जाण अलिंगग्गहणं जीवमणिद्दिट्ठसंठाणं।।

81. मुत्तो रूवादिगुणो बज्झदि फासेहिं अण्णमण्णेहिं।
तव्विवरीदो अप्पा बज्झदि किध पोग्गलं कम्मं।।

82. रूवादिएहि रहिदो पेच्छदि जाणादि रूवमादीणि।
दव्वाणि गुणे य जधा तह बंधो तेण जाणीहि।।

83. उवओगमओ जीवो मुज्झदि रज्जेदि वा पदुस्सेदि।
पप्पा विविधे विसये जो हि पुणो तेहिं संबंधो।।

84. भावेण जेण जीवो पेच्छदि जाणादि आगदं विसये।
रज्जदि तेणेव पुणो बज्झदि कम्म त्ति उवदेसो।।

85. फासेहिं पुग्गलाणं बंधो जीवस्स रागमादीहिं।
अण्णोण्णस्सवगाहो पुग्गलजीवप्पगो भणिदो।।

86. सपदेसो सो अप्पा तेसु पदेसेसु पुग्गला काया।
पविसंति जहाजोगं चिट्ठंति हि जंति बज्झंति।।

87. रत्तो बंधदि कम्मं मुच्चदि कम्मेहिं रागरहिदप्पा।
एसो बंधसमासो जीवाणं जाण णिच्छयदो।।

88. परिणामादो बंधो परिणामो रागदोसमोहजुदो।
असुहो मोहपदोसो सुहो व असुहो हवदि रागो।।

89. सुहपरिणामो पुण्णं असुहो पाव त्ति भणियमण्णेसु।
परिणामो णण्णगदो दुक्खक्खयकारणं समये।।

90. भणिदा पुढविप्पमुहा जीवणिकायाध थावरा य तसा।
अण्णा ते जीवादो जीवो वि य तेहिंदो अण्णो।।

91. जो णवि जाणदि एवं परमप्पाणं सहावमासेज्ज।
कीरदि अज्झवसाणं अहं ममेदं ति मोहादो।।

92. कुव्वं सभावमादा हवदि हि कत्ता सगस्स भावस्स।
पोग्गलदव्वमयाणं ण दु कत्ता सव्वभावाणं।।

93. गेण्हदि णेव ण मुंचदि करेदि ण हि पोग्गलाणि कम्माणि।
जीवो पुग्गलमज्झे वट्टण्णवि सव्वकालेसु।।

94. स इदाणिं कत्ता सं सगपरिणामस्स दव्वजादस्स।
आदीयदे कदाई विमुच्चदे कम्मधूलीहिं।।

95. परिणमदि जदा अप्पा सुहम्हि असुहम्हि रागदोसजुदो।
तं पविसदि कम्मरयं णाणावरणादिभावेहिं।।

96. सपदेसो सो अप्पा कसायिदो मोहरागदोसेहिं।
कम्मरजेहिं सिलिट्ठो बंधो त्ति परूविदो समये।।

97. एसो बंधसमासो जीवाणं णिच्छयेण णिद्दिट्ठो।
अरहंतेहिं जदीणं ववहारो अण्णहा भणिदो।।

98. ण चयदि जो दु ममत्तिं अहं ममेदं ति देहदविणेसु।
सो सामण्णं चत्ता पडिवण्णो होदि उम्मग्गं।।

99. णाहं होमि परेसिं ण मे परे संति णाणमहमेक्को।
इदि जो झायदि झाणे सो अप्पाणं हवदि झादा।।

100. एवं णाणप्पाणं दंसणभूदं अदिंदियमहत्थं।
धुवमचलमणालंबं मण्णेऽहं अप्पगं सुद्धं।।

101. देहा वा दविणा वा सुहदुक्खा वाध सत्तुमित्तजणा।
जीवस्स ण संति धुवा धुवोवओगप्पगो अप्पा।।

102. जो एवं जाणित्ता झादि परं अप्पगं विसुद्धप्पा।
सागारोऽणागारो खवेदि सो मोहदुग्गंठिं।।

103. जो णिहदमोहगंठी रागपदोसे खवीय सामण्णे।
होज्जं समसुहदुक्खो सो सोक्खं अक्खयं लहदि।।

104. जो खविदमोहकलुसो विसयविरत्तो मणो णिरुंभित्ता।
समवट्ठिदो सहावे सो अप्पाणं हवदि झादा।।

105. णिहदघणघादिकम्मो पच्चक्खं सव्वभावतच्चण्हू।
णेयंतगदो समणो झादि कमट्ठं असंदेहो।।

106. सव्वाबाधविजुत्तो समंतसव्वक्खसोक्खणाणड्ढो।
भूदो अक्खातीदो झादि अणक्खो परं सोक्खं।।

107. एवं जिणा जिणिंदा सिद्धा मग्गं समुट्ठिदा समणा।
जादा णमोत्थु तेसिं तस्स य णिव्वाणमग्गस्स।।

108. तम्हा तह जाणित्ता अप्पाणं जाणगं सभावेण।
परिवज्जामि ममत्तिं उवट्ठिदो णिम्ममत्तम्मि।।

परिशिष्ट–1

संज्ञा–कोश

संज्ञा शब्द	अर्थ	लिंग	गा.सं.
अक्ख	इन्द्रिय	अकारान्त नपुं.	106
अज्झवसाण	चिंतन	अकारान्त नपुं.	91
अट्ठ	आशय	अकारान्त पु., नपुं.	10, 51
	पदार्थ	अकारान्त पु., नपुं.	32, 53, 105
अणंतत्त	अनन्तता	अकारान्त नपुं.	72
अणगार	मुनि	अकारान्त पु.	65
अणागार	मुनि	अकारान्त पु.	102
अणु	परमाणु	अकारान्त घु.	48, 72, 73, 74
अण्णत्त	अन्यत्व	अकारान्त नपुं.	14
अतब्भाव	तादात्म्य का अभाव	अकारान्त पु.	14, 15, 16
	भिन्न लक्षण		38
अत्थ	पदार्थ	अकारान्त पु., नपुं.	1, 7, 8, 47
	द्रव्य	अकारान्त पु., नपुं.	52
	जीव	अकारान्त पु., नपुं.	60
अत्थंतर	परिवर्तन	अकारान्त पु.	60
	विपरीत अर्थ	अकारान्त पु.	52
अत्थि	अस्तित्व	अकारान्त नपुं.	52
अत्थिकाय	अस्तिकाय	अकारान्त पु.	36

अत्थित्त	अस्तित्वता	अकारान्त नपुं.	60
अधम्म	अधर्म	अकारान्त पु.	36, 43, 44
अप्प	आत्मा	अकारान्त पु.	25, 33, 34, 42, 63, 76, 81, 86, 87, 95, 96, 101, 102
	स्वभाव	अकारान्त पु.	33
अप्पग	आत्मा	अकारान्त पु.	59, 67, 100, 102
अप्पाण	आत्मा	अकारान्त पु.	34, 99, 104, 108
	स्व	अकारान्त पु.	91
अभाव	न होना	अकारान्त पु.	15
	अभाव	अकारान्त पु.	16, 64
अमर	देव	अकारान्त पु.	20
अरहंत	अरहंत	अकारान्त पु.	97
अलोग	अलोक	अकारान्त पु.	44
अवगास	अवकाश	अकारान्त पु.	48
अवगाह	अवगाहन	अकारान्त पु.	41
	अन्तर्गमन	अकारान्त पु.	85
आउ	आयु	*उकारान्त* नपुं.	54
आगास	आकाश	अकारान्त पु.,नपुं.	36,41,43,46,48
आणप्पाण	श्वासोच्छवास	अकारान्त पु.	54
आद	आत्मा	अकारान्त पु.	2, 29, 30, 31, 33, 58, 92

आदि	अन्य	**इकारान्त** पु.	56, 57, 60, 95
	इसी प्रकार और भी	**इकारान्त** पु.	59, 85
	आदि	**इकारान्त** पु.,नपुं.	61, 82
	आरंभ	**इकारान्त** पु.	72, 75
	प्रथम	**इकारान्त** पु.	73
	इसी प्रकार अन्य	**इकारान्त** पु.	81, 82
आबाध	क्षति	अकारान्त पु.	57
इंदिय	इन्द्रिय	अकारान्त पु., नपुं.	39, 54, 59
उदय	उदय	अकारान्त पु.	61
उप्पाद	उत्पाद	अकारान्त पु.	3, 4, 8, 9, 37, 50
उब्भव	उद्भव	अकारान्त पु.	45
उम्मग्ग	कुमार्ग	अकारान्त पु.	66
	विपरीत मार्ग	अकारान्त पु.	98
उवओग	उपयोग	अकारान्त पु.	35, 42, 59, 63, 64, 65, 66, 67
उवदेस	उपदेश	अकारान्त पु.	17, 84
कम्म	कर्म	अकारान्त पु., नपुं.	25, 29, 30, 31, 33, 34, 56, 57, 58, 59, 77, 79, 84, 87, 93, 94, 95, 96, 105
	कार्य	अकारान्त पु., नपुं.	32
कम्मत्त	कर्मत्व	अकारान्त नपुं.	78

कम्मत्तण	कर्मत्व	अकारान्त नपुं.	77
करण	साधन	अकारान्त नपुं.	34
कलुस	मलिनता (मैल)	अकारान्त नपुं.	104
कसाअ	कषाय	अकारान्त पु.	66
काय	राशि	अकारान्त पु.	43, 76
	समूह	अकारान्त पु.	78, 86
कारण	कारण	अकारान्त नपुं.	68, 89
कारणदा	कारणता	आकारान्त स्त्री.	41
काल	काल	अकारान्त पु.	4, 36, 42, 43, 44, 47, 49, 51, 93
कालाणु	कालाणु	*उकारान्त* पु.	51
किरिया	क्रिया	आकारान्त स्त्री.	24, 28, 30
क्खय	नाश	अकारान्त पु.	89
खंध	स्कन्ध	अकारान्त पु.	75, 77
खण	क्षण	अकारान्त पु.	27
गंठि	गाँठ	इकारान्त पु., स्त्री.	103
गंध	गंध	अकारान्त पु.	40
गमण	गमन	अकारान्त नपुं.	41
ग्गहण	ग्रहण	अकारान्त नपुं.	80
गुण	गुण	अकारान्त पु., नपुं.	4, 12, 15, 16, 17, 18, 38, 39, 41, 42, 80, 81, 82
	अंश	अकारान्त पु., नपुं.	74

गुणंतर	अन्य गुण	अकारान्त पु., नपुं.	12
गोट्ठि	चर्चा	**इकारान्त** स्त्री.	66
चय	संग्रह	अकारान्त पु.	64
चेदणा	चेतना	आकारान्त स्त्री.	31, 35, 80
जण	लोक	अकारान्त पु.	27
	लोग	अकारान्त पु.	101
जदि	मुनि	इकारान्त पु.	97
जल	जलकाय	अकारान्त पु.	75
जिण	जिनेन्द्रदेव	अकारान्त पु.	6
	जिन	अकारान्त पु.	17
	सामान्य केवली	अकारान्त पु.	107
जिणवर	जिनश्रेष्ठ	अकारान्त पु.	5
जिणिंद	अर्हन्त देव	अकारान्त पु.	65
	तीर्थंकर	अकारान्त पु.	107
जीव	जीव	अकारान्त पु., नपुं.	2, 20, 26, 32, 35, 36, 38, 43, 44, 53, 54, 55, 56, 57, 61, 64, 65, 77, 78, 80, 83, 84, 85, 87, 90, 93, 97, 101
झाण	ध्यान	अकारान्त पु.	99
ठाण	स्थिति	अकारान्त पु., नपुं.	41
ठिदि	स्थिति (ध्रौव्य)	**इकारान्त** स्त्री.	7, 10, 51

ट्ठिदि	स्थिति (ध्रौव्य)	**इकारान्त** स्त्री.	9, 37
णभ	आकाश	अकारान्त नपुं.	44, 45
णर	मनुष्य	अकारान्त पु.	20, 25, 26, 61
णाण	ज्ञान	अकारान्त नपुं.	31, 32, 33, 63, 99, 106
णाम	नाम (कर्म)	अकारान्त नपुं.	25
णामकम्म	नामकर्म	अकारान्त नपुं.	26, 61
णाणावरण	ज्ञानावरण	अकारान्त नपुं.	57, 95
णारय	नारकी	अकारान्त नपुं.	26, 61
णास	विनाश	अकारान्त पुं.	7, 10
	नाश	अकारान्त पुं.	51
णिकाय	समूह	अकारान्त नपुं.	90
णिच्छय	निश्चय	अकारान्त पु.	97
णिद्ध	स्निग्धता	अकारान्त नपुं.	74
णिद्धत्तण	स्निग्धता	अकारान्त नपुं.	72, 74
णिम्ममत्त	ममता-रहितता	अकारान्त नपुं.	108
णिव्वाण	मोक्ष	अकारान्त नपुं.	107
णेरइय	नारकी	अकारान्त पु.	25
तक्काल	वह अवसर	अकारान्त पु.	22
तच्च	द्रव्य (मूल प्रकृति)	अकारान्त नपुं.	16
	यथार्थ	अकारान्त नपुं.	52
तदभाव	तादात्म्य	अकारान्त पु.	15
तब्भव	तादात्म्य	अकारान्त पु.	14

तम्मयत्त	एकरूपता	अकारान्त नपुं.	22
तस	त्रस	अकारान्त पु.	90
तिरिय	तिर्यंच	अकारान्त पु., नपुं.	25, 26, 61
तेउ	अग्निकाय	उकारान्त पुं.	75
तेज	तेज	अकारान्त पुं.	79
थावर	स्थावर	अकारान्त पुं.	90
दंसण	दर्शन	अकारान्त पु., नपुं.	63, 100
दव्व	द्रव्य	अकारान्त पु., नपुं.	1,3, 4, 6, 7, 9,10, 11, 12, 13, 16, 17, 18, 19, 22, 23, 28, 35, 38, 39, 41, 46, 49, 55, 62, 69, 82
	पुद्गल कर्म	अकारान्त पुः, नपुं.	94
दव्वत्त	द्रव्यता	अकारान्त नपुं.	18, 20
दव्वत्थ	द्रव्यदृष्टि	अकारान्त पु., नपुं.	19
दविण	सम्पत्ति	अकारान्त नपुं.	98, 101
दविय	द्रव्य	अकारान्त नपुं.	62
	विषय	अकारान्त नपुं.	67
दुक्ख	दुःख	अकारान्त पु., नपुं.	32, 89, 101, 103
दुग्गंठि	कठिन गाँठ	**इकारान्त** स्त्री.	102
दुच्चित्त	खोटा मन	अकारान्त नपुं.	66
दुस्सुदि	कषायोत्तेजक साहित्य	**इकारान्त** स्त्री.	66
देव	देव	अकारान्त पु., नपुं.	21

देस	प्रदेश	अकारान्त पु.	47
देह	देह	अकारान्त पु., नपुं.	58, 78
	शरीर		68, 69, 70, 79, 98, 101
दोस	द्वेष	अकारान्त पु.	88, 95, 96
धम्म	स्वभाव	अकारान्त पु., नपुं.	5
	धर्म	अकारान्त पु., नपुं.	24,36, 41, 43, 44
धुवत्त	ध्रुवत्व	अकारान्त नपुं.	3, 4
धूलि	धूलि	**इकारान्त** स्त्री.	94
पज्जयत्थ	पर्यायदृष्टि	अकारान्त पु.	19
पज्जाअ	पर्याय	अकारान्त पु.	4, 11, 15, 18, 60
पज्जाय	पर्याय	अकारान्त पु.	1, 2, 9, 12, 61
	प्रकार	अकारान्त पु.	23
पदेस	प्रदेश	अकारान्त पु.	43, 45, 46, 48, 49, 52, 71, 75, 86
	द्वेष	अकारान्त पु.	57
पदेसत्त	प्रदेशता	अकारान्त नपुं.	14
पदोस	द्वेष	अकारान्त पु.	88, 103
पद्धंस	नाश	अकारान्त पु.	50
परमाणु	परमाणु	***उकारान्त*** पु.	45, 69, 71
परिणइ	परिणमन	**इकारान्त** स्त्री.	77

परिणाम	परिणमन	अकारान्त पु.	7, 17, 37, 73,75
(परिणम)	परिणाम	अकारान्त पु.	29,30, 33, 88, 89
	परिणमन स्वभाव	अकारान्त पु.	72
	परिवर्तन	अकारान्त पु.	94
परियंत	तक (सीमा)	अकारान्त पु.	40
पाण	प्राण	अकारान्त पु., नपुं.	53, 54, 55, 56, 57, 58, 59
पादुब्भाव	उत्पत्ति	अकारान्त पु.	19
पिंड	समूह	अकारान्त पु.	69, 70
पुग्गल	पुद्गल	अकारान्त पु., नपुं.	76, 79, 85, 86, 93
पुढवि	पृथ्वीकाय	**इकारान्त** स्त्री.	75
	पृथ्वी	**इकारान्त** स्त्री.	90
पुढवी	महास्थूल	**ईकारान्त** स्त्री.	40
पुण्ण	पुण्य	अकारान्त पु., नपुं.	89
पुधत्त	पृथकता	अकारान्त नपुं.	14
पोग्गल	पुद्गल	अकारान्त पु., नपुं.	35, 36, 37, 39, 40, 43, 44, 55, 69, 70,78, 92, 93
प्पदेस	प्रदेश	अकारान्त पु.	45
प्पभेद	भेद	अकारान्त पु., नपुं.	60
प्पाण	प्राण	अकारान्त पु., नपुं.	54

फल	फल	अकारान्त पु., नपुं	31, 32, 33, 34,56
फास	स्पर्श	अकारान्त पु., नपुं.	40, 81, 85
बंध	बंध	अकारान्त पु.	57, 74, 82, 85, 87, 88, 96, 97
बल	बल	अकारान्त पु.	54
बाध	बाधा	अकारान्त पु.	106
भंग	नाश	अकारान्त पुं.	8, 9, 37
	विनाश	अकारान्त पुं.	27
भव	उत्पत्ति	अकारान्त पुं.	8, 27
भाव	वास्तविक सत्य/ परमार्थ	अकारान्त पु.	18
	भाव	अकारान्त पु.	21, 84
	रूप	अकारान्त पु.	77
	क्रिया	अकारान्त पु.	92
	विकृति	अकारान्त पु.	95
	पदार्थ का स्वरूप	अकासन्त पु.	105
भेद	वियोजन	अकारान्त पु., नपुं.	37
मग्ग	मार्ग	अकारान्त पु.	107
मज्झ	मध्य	अकारान्त नपुं	93
मण	मन	अकारान्त पु., नपुं.	68, 69
मणुव	मनुष्य	अकारान्त पु.	21
ममत्त	ममत्व	अकारान्त नपुं.	58

ममत्ति	ममता	अकारान्त नपुं.	98, 108
माणुस	मनुष्य	अकारान्त पु., नपुं.	21
मित्त	मित्र	अकारान्त पु., नपुं.	101
मुत्ति	मूर्ति	**इकारान्त** स्त्री.	42
मोह	मोह	अकारान्त पु.	56, 57, 88, 91, 96,102,103,104
रज	धूल	अकारान्त पुं., नपुं.	96
रय	धूल	अकारान्त पुं., नपुं.	95
रस	रस	अकारान्त पु., नपुं.	40
राग	राग	अकारान्त पु.	87, 88, 95, 96, 103
रूव	रूप	अकारान्त पु., नपुं.	82
लक्खण	लक्षण	अकारान्त पु.; नपुं.	5
लिंग	लक्षण	अकारान्त नपुं.	38
लुक्ख	रूक्षता	अकारान्त पुं.	74
लुक्खत्त	रूक्षता	अकारान्त नपुं.	72
लोग	लोक	अकारान्त पुं.	36, 37, 44, 53, 76
वट्टणा	परिणमन	आकारान्त स्त्री.	41
वण्ण	वर्ण	अकारान्त पु.	40
ववहार	व्यवहार	अकारान्त पु.	97
वसह	अरिहंत(तीर्थंकर)	अकारान्त पु.	5
वाउ	वायुकाय	***उकारान्त*** पु.	75

वाणी	वचन	**ईकारान्त** स्त्री.	68, 69
वित्थार	विस्तार	अकारान्त पु.	15
विध	प्रकार	अकारान्त पु.	39
वियप्प	विचार	अकारान्त पु.	32
विलअ	विनाश	अकारान्त पुं.	27
विलय	नाश	अकारान्त पुं.	27
विसय	इन्द्रिय-विषय	अकारान्त पुं.	58, 66, 83
	क्षेत्र	अकारान्त पुं.	84
	विषय	अकारान्त पुं.	104
वीर	भगवान महावीर	अकारान्त पु.	14
व्वय	व्यय	अकारान्त पु.	3, 4
संकम	गमन	अकारान्त पु.	78
संखा	संख्या	आकारान्त स्त्री.	49
संखेव	संक्षेप	अकारान्त पु.	42
संघाद	संयोजन	अकारान्त पु.	37
संचय	राशि	अकारान्त पु.	64
संठाण	शरीर आकार	अकारान्त नपुं.	60, 61, 80
संबध	संयोग	अकारान्त पुं.	83
संभव	उत्पत्ति	अकारान्त पुं.	7, 8, 10, 27, 51
संसार	संसार	अकारान्त पु.	28
सत्ता	सत्ता	आकारान्त स्त्री.	13, 18
सत्तु	शत्रु	***उकारान्त*** पु.	101
सद्द	शब्द	अकारान्त पु.	40

सब्भाव	अस्तित्व	अकारान्त पु.	4, 51
	स्वभाव	अकारान्त पु.	62
सभाव	स्वभाव	अकारान्त पु.	25, 92, 108
	अस्तित्ववान पदार्थ	अकारान्त पु.	50
समअ	दृष्टि	अकारान्त पु.	6
	समय	अकारान्त पु.	46, 47, 50
	समय-पर्याय	अकारान्त पु.	47
समण	श्रमण	अकारान्त पु.	34, 105, 107
समय	समय	अकारान्त पुं.	10, 50, 51
	समय-पर्याय	अकारान्त पु.	49
	काल	अकारान्त पु.	51
	आगम	अकारान्त पुं.	89, 96
समास	संक्षेप	अकारान्त पु.	87, 97
सहाव	स्वभाव	अकारान्त पुं.	2, 3, 4, 6, 7,17, 19, 25, 26, 28, 62, 91, 104
	स्वरूप	अकारान्त पुं.	7, 24
सागार	श्रावक	अकारान्त पुं.	102
सामण्ण	श्रमणता	अकारान्त नपुं.	98
	श्रमण	अकारान्त नपुं.	103
सासण	उपदेश	अकारान्त नपुं.	14
सिद्ध	सिद्ध	अकारान्त नपुं.	21, 65
सुर	देव	अकारान्त पु.	25, 26, 61

सुह	सुख	अकारान्त नपुं.	101, 103
सोक्ख	सुख	अकारान्त नपुं.	32, 103, 106
हेदुत्त	कारणता	अकारान्त नपुं.	41

अनियमित संज्ञा

तत्तिदयं 1/1	वह तीन का समूह	10
मणो 2/1	मन	104
सण्णया 3/1	नाम से	48
सदिति 1/1	अस्तित्व ही	5, 6
सद्दव्वं 1/1	अस्तित्वयुक्त द्रव्य	13
	विद्यमान द्रव्य	15

कर्मवाच्य

आदीयदे	पकड़ा जाता है	व कर्म 3/1	94

अनियमित कर्मवाच्य

बज्झदि	बाँधा जाता है	व कर्म 3/1 अनि	56, 74, 81, 84
बज्झन्ति	बाँधे जाते हैं	व कर्म 3/2 अनि	73, 86
मुच्चदि	छुटकारा पाता है	व कर्म 3/1 अनि	87
रंजदि	रंगा जाता है	व कर्म 3/1 अनि	59
विमुच्चदे	छोड़ दिया जाता है	व कर्म 3/1 अनि	94

क्रिया-कोश

अकर्मक

क्रिया	अर्थ	गा.सं.
अस	होना	64
चिट्ठ	ठहरना	86
जा	उत्पन्न होना	27, 37, 75
णस्स	नष्ट होना	27
परिणम	परिणमन करना	31
पादुब्भव	उत्पन्न होना	11
भव	होना	20
मुह	मूर्च्छित होना	62
मुज्झ	मोह करना	83
रज्ज	राग करना	83
	अनुरक्त होना	84
वट्ट	होना	36, 46
वय	नष्ट होना	11
विज्ज	होना	9
	विद्यमान होना	40
	रहना	50
संजाय	उत्पन्न होना	78
सक्क	समर्थ होना	48
सिलिस	बँधना/चिपकना	29

हव	होना	9, 13, 20, 21, 22,23, 35, 38, 45, 50, 63, 88, 92, 99, 104
	घटित होना	57
हो	होना	30, 54, 98, 99, 103
	रहना	98
होज्ज	होना	67, 103

अनियमित क्रिया

अत्थु	होना	107
संति	होना	9, 49, 51, 52, 99, 101

क्रिया-कोश

सकर्मक

क्रिया	अर्थ	गा.सं.
अणुचर	पीछा करना	59
अणुभव	प्राप्त करना	72
	प्राप्त होना	74
अणुहव	प्राप्त करना	71
इच्छ	मानना	6
उवभुंज	भोगना	56
कर	रचना	93
कीर	करना	91
कुण	बनाना	25
	करना	57
खव	नाश करना	102
गच्छ	प्राप्त होना	77
गेण्ह	ग्रहण करना	93
चय	छोड़ना	20, 58, 98
जा	प्राप्त/उत्पन्न करना	64
	नष्ट होना	86
जाण	जानना	52, 53, 62, 65, 80, 82, 84, 87, 91
जीव	जीना	55
झा	ध्यान करना	59, 102, 105, 106
	चिंतन करना	99
धर	धारण करना	58

पजह	छोड़ना	20
पदुस्स	द्वेष करना	83
परिणम	प्राप्त करना	12
	अपनाना	34
	परिणमन करना	95
परिवज्ज	छोड़ना	108
पविस	प्रवेश करना	86, 95
पेच्छ	देखना	65, 82, 84
बंध	बाँधना	87
मुंच	छोड़ना	93
लभ	करना	19
लह	प्राप्त करना	21, 29, 34, 103
वुच्च	कहना	3
हो	प्राप्त करना	14

अनियमित क्रिया

जाणीहि	**2/1**	जानो	82
झाए	**1/1**	ध्यान करना	67
मण्णे	**1/1**	मानना	100

कृदन्त–कोश

संबंधक कृदन्त

कृदन्त शब्द	अर्थ	कृदन्त	गा.सं.
अभिभूय	आच्छादित करके	संकृ अनि	25
आसेज्ज	अवलम्बन करके	संकृ अनि	91
खविय→खवीय	नष्ट करके	संकृ	103
चत्ता	छोड़कर	संकृ अनि	98
जाणित्ता	जानकर	संकृ	102, 108
णिरुंभित्ता	रोककर	संकृ	104
भविय→भवीय	होकर	संकृ	20, 59

हेत्वर्थक कृदन्त

णादुं	जानने के लिए	हेकृ	52
देदुं	देने के लिए	हेकृ	48

भूतकालिक कृदन्त

अंतगद	अंत पा लिया गया	भूकृ अनि	105
अणिद्दिट्ठ	न कहा हुआ	भूकृ अनि	80
अतीद	परे	भूकृ अनि	49
अपरिच्चत्त	न छोड़ा हुआ	भूकृ अनि	3
अभिमद	माना गया	भूकृ अनि	31

आगद	आया हुआ	भूकृ अनि	84
आदद	व्याप्त	भूकृ अनि	44
आदिट्ठ	कहा गया	भूकृ अनि	23
इअ	प्राप्त	भूकृ अनि	79
उप्पण्ण	उत्पन्न हुआ	भूकृ अनि	11
	उत्पन्न	भूकृ अनि	47
उवजुत्त	संलग्न	भूकृ अनि	67
उवट्ठिद	स्थित	भूकृ अनि	108
कय	किया गया	भूकृ अनि	70
खविद	नष्ट कर दिया गया	भूकृ	104
गद	गया हुआ	भूकृ अनि	89
	परिवर्तित हुआ	भूकृ अनि	78
जाद	उत्पन्न	भूकृ	46
	उत्पन्न हुआ	भूकृ	61, 94
	हुआ	भूकृ	107
जीविद	जीया	भूकृ	55
जुत्त	सहित	भूकृ अनि	74
जुद	संलग्न	भूकृ अनि	66
	युक्त	भूकृ अनि	88, 95
ठिद	स्थित	भूकृ अनि	2
णिचिद	भरा हुआ	भूकृ अनि	76
णिच्छिद	निश्चय किया हुआ	भूकृ	34
णिट्ठिद	पूर्ण किया हुआ	भूकृ अनि	53

णिद्दिट्ठ	कहा गया	भूकृ अनि	2, 16, 97
	वर्णित		69
णिबद्ध	युक्त	भूकृ अनि	19, 36, 56
	निष्पन्न		62
णिविट्ठ	नियंत्रित/ रोका हुआ	भूकृ अनि	48
णिव्वत्त	उत्पन्न	भूकृ अनि	24
	रचा गया		26
	निष्पन्न		55
णिहद	नष्ट किया गया	भूकृ अनि	103, 105
पडिवण्ण	ग्रहण किया	भूकृ अनि	98
पणट्ठ	नष्ट हुआ	भूकृ अनि	11
पण्णत्त	कहा गया	भूकृ अनि	5
पप्प	उपलब्ध	भूकृ अनि	77, 83
	अर्जित		78
परिणमिद	परिणमन कराया गया	भूकृ अनि	77
परूविद	कहा गया	भूकृ अनि	96
बद्ध	बँधा हुआ	भूकृ अनि	56
भणिद	कहा गया	भूकृ	1, 31, 32, 42, 45, 48, 63, 72, 85, 90, 97
भणिय	कहा गया	भूकृ	12, 89

भूद	लिया हुआ	भूकृ	52
	हुआ		106
मद	माना गया	भूकृ अनि	30
मूढ	मोहित	भूकृ अनि	1
रत्त	राग-युक्त	भूकृ अनि	87
रहिद	रहित	भूकृ अनि	67, 82, 87
लद्ध	प्राप्त किया गया	भूकृ अनि	26
विजुत्त	रहित	भूकृ अनि	106
विण्णाद	ज्ञात	भूकृ अनि	38
विरत्त	विरक्त	भूकृ अनि	104
विसिट्ठ	युक्त	भूकृ अनि	38
संजुत्त	सहित	भूकृ अनि	3
	युक्त		29
संबद्ध	सहित	भूकृ अनि	7
	युक्त		53
संभूद	उत्पन्न हुआ	भूकृ अनि	60
सदवट्ठिद	अस्तित्व में ठहरा हुआ	भूकृ अनि	7
	(सत्ता) अस्तित्व में अवस्थित	भूकृ अनि	17
सदविसिट्ठ	अस्तित्व लक्षणयुक्त	भूकृ अनि	12, 17
समक्खाद	कहा हुआ	भूकृ अनि	6, 62
समवट्ठिद	अवस्थित	भूकृ अनि	28, 50, 104

समारद्ध	प्रारम्भ किया गया	भूकृ अनि	32
समुट्ठिद	उचित प्रकार से प्रयत्नशील हुआ	भूकृ अनि	107
सिलिट्ठ	संयुक्त	भूकृ अनि	96

विधि कृदन्त

गेज्झ	ग्रहण करने योग्य	विधिकृ अनि	39
णेय	समझा जाना चाहिये	विधिकृ अनि	38, 42
	जानने योग्य		105
मुणेदव्व	समझा जाना चाहिये	विधिकृ	2, 33, 39

वर्तमान कृदन्त

अहोज्जमाण	न होता हुआ	वकृ	21
कुव्वं	ग्रहण करता हुआ	वकृ अनि	92
परिणममाण	परिणमण करता हुआ	वकृ	26
भवं	होता हुआ	वकृ अनि	20
संसरमाण	परिभ्रमण करता हुआ	वकृ	28

विशेषण–कोश

शब्द	अर्थ	गा.सं.
अओग्ग	अयोग्य	76
अंतर	अन्य	78
अक्खय	अक्षय	103
अक्खातीद	इन्द्रिय ज्ञान से परे	106
अगंध	गंध-रहित	80
अचल	दृढ़	100
अचेदण	चेतना-रहित	35
अजीव	जीव से वियुक्त	35, 38
अज्जीव	अजीव	35
अड्ढ	सहित	36
	समृद्ध	106
अणंत	अनन्त	49
अणक्ख	इन्द्रिय विषय से रहित	106
अणण्ण	अभिन्न	21
अणालंब	आलंबन से रहित	100
अणुमंतु	अनुमोदक	68
अणेग	अनेक	39
अण्णमण्ण	परस्पर	81
अण्णोण्ण	परस्पर	85
अदिंदिय	अतीन्द्रिय	100

अ–पदेस	प्रदेश-रहित	45, 71
अ–प्पदेस	प्रदेश-रहित	46
अफल	फलरहित	24
अमुत्त	अमूर्त	38, 39
अरस	रस-रहित	80
अरूव	रूप-रहित	80
अलिंगग्गहण	तर्क रहित	80
अवत्तव्व	अवक्तव्य	23
अव्वत्त	अप्रकट	80
असंख	असंख्य	43
असंदेह	संदेह-रहित	105
असद्द	शब्द-रहित	71, 80
असद्धुव	ध्रुव (द्रव्य) अस्तित्व रहित	13
असुह	अशुभ	63, 64, 66, 67, 88, 89, 95
आदित्त	वगैरहपन	71
आहारय	आहारक	79
इदर	भिन्न	41
उग्ग	आक्रामक रूखवाला	66
उवओगप्प	उपयोगास्वरूपवाला/ चैतन्यस्वरूपवाला	63
उवओगप्पग	उपयोगस्वरूप	101
उवओगमअ	उपयोगमय	83

उवजोगमअ	उपयोगमय	35
एक्क	अकेला	99
एवंविह	ऐसा	19
ओगाढ	गाढ़ा	66
	गहरा	76
ओरालिअ	औदारिक	79
कत्तु	कर्ता	30, 70, 94
	करनेवाला	34, 68, 92
कत्ति	करनेवाला	68
कसायिद	ग्रस्त	96
कारयिदु	करानेवाला	68
गुणप्पग	गुणात्मक	1
गुणव	गुणयुक्त	3
गुणिद	अंशवाला	74
घण	प्रगाढ़	105
घादि	घातिया	105
चित्त	अनेक प्रकार का	4, 40
जाणग	ज्ञायक	108
जीवप्पग	जीव से संबंधित	37
	चेतनजीव से निर्मित	85
जीवमय	आत्मा से युक्त	30
जोग्ग	योग्य	76
झादु	ध्यानकरनेवाला	99
	ध्यानलगानेवाला	104

णाणप्पग	ज्ञानात्मक	67
णाणप्पाण	ज्ञानस्वरूप	100
णिच्च	शाश्वत	53
णिच्छिद	निश्चित	60
णिद्ध	स्निग्ध	71, 73
णिप्फल	फलरहित	24
णिरद	तल्लीन	2
तच्चण्हु	जाननेवाला	105
दंसणभूद	दर्शनमय	100
दव्वमअ	द्रव्यस्वरूप	1
दव्वमय	द्रव्यसंबधी	92
दव्वट्ठिअ	द्रव्यार्थिक	22
दव्वप्पग	द्रव्य से संबंधित	39
	द्रव्यात्मक	69
	द्रव्य से निर्मित	79
दुट्ठ	व्यर्थ	66
धुव	शाश्वत	100, 101
धोव्व	ध्रौव्य	8
पज्जयट्ठिअ	पर्यायार्थिक	22
पदेसमेत्त	प्रदेश-मात्र	46, 52, 71
पद्धंसी	नाशवान	47
पधाण	मुख्यरूप से अन्तर्हित	58

पर	इतर	1, 2, 6
	अन्य	20
	आगे	47
	लगा हुआ	66
	पर	91, 99
	परम	102, 106
परम	परम	24
परिहीण	अंश-रहित	73
पविभत्त	भिन्न	14
पाओग्ग	योग्य	77
पाव	पापकर्म	64
	पाप	89
पुण्ण	पुण्य	64, 89
पुव्व	पहले	47
प्पमुह	सहित	35
	वगैरह	90
प्पहीण	रहित	42
बहुग	बहुत	49
बादर	स्थूल	75, 76
भावि	घटित	33
मइअ	मय	70
मज्झत्थ	मध्यस्थ	67
मलिमस	मलिन	29, 58

महत्थ	महापदार्थ	100
मुत्त	मूर्त	38, 39, 81
लुक्ख	रूक्ष	71, 73
वट्टण्ण	रहनेवाला	93
वदिवदद	मंदगति से गमन करनेवाला	46
	मंदगति से चलनेवाला	47
विजइ	जीतनेवाला	59
विध	प्रकार	39
विविध	अनेक प्रकार का	83
विविह	अनेक	5
विसम	विषम	73
विसुद्ध	सद्गुणी	102
विहीण	रहित	8
वेउव्विअ	वैक्रियिक	79
स-अणुकंप	करुणा-सहित	65
स-कम्म	कर्म-सहित	26
सग	स्व	2, 75
	स्व-संबंधी	92, 94
सण्णिद	नामक	10, 51
स-पज्जाय	पर्याययुक्त	3
स-पदेस	प्रदेश-सहित	43, 86, 96
	अपने प्रदेशों-सहित	53
सम	सम	73
	समान	103

समक्ख	संज्ञावाला/नामक	25
समग्ग	समस्त	53
समयिग	दृष्टिवाला	2
समवेद	अभेद्यरूप से संयुक्त	10
समुब्भव	उत्पन्न होनेवाला	27
सवियप्प	भेद-सहित	62
सव्वगय	सब में स्थित	5
स-संठाण	आकार-सहित	75
सिद्ध	सिद्ध, निर्मित	6
	सिद्ध	107
सुण्ण	शून्य	52
सुद्ध	शुद्ध	34, 100
सुह	शुभ	63, 64, 65, 67, 88, 89, 95
सुहुम	सूक्ष्म	40, 75, 76
सेस	शेष	44, 45

अनियमित विशेषण

उवदिसदा 3/1	उपदेशक	वि अनि	5
तव्विवरीदो 1/1	उसके विपरीत	वि अनि	81
तस्सम 1/1	उसके समान	वि अनि	47
सच्च 1/1	और विद्यमान	वि अनि	15
सदसब्भाव	सत् असत् भाव	वि अनि	19

संख्यावाची विशेषण

एक	एक	50
एक्क	एक	10, 49
एग	एक	5, 14, 51, 72
दु	दो	71, 74, 75
दुग	दो	49
ति	तीन	74
चदु	चार	55, 74
चदुक्क	चार	53
पंच	पाँच	74

अनियमित संख्यावाची विशेषण

दुराधिग	दो से अधिक	73

सर्वनाम-कोश

सर्वनाम शब्द	अर्थ	लिंग	गा.सं.
अम्ह	मैं	पु., नपुं., स्त्री.	67, 68, 70, 91, 98, 99, 100
अण्ण	कोई	पु., नपुं.	11
	अन्य		13, 20, 23, 34, 56, 62, 67, 90
	भिन्न		22
	दूसरे		58
	पर		89
इम	यह	पु., नपुं.	17, 91, 98
एत	यह	पु., नपुं.	16, 24, 51, 87, 97
क	कौन	पु., नपुं.	23, 105
ज	जो	पु., नपुं.	2, 3, 6, 7, 15, 16, 17, 27, 32, 36, 38, 47, 50, 52, 53, 55, 59, 62, 65, 66, 71, 83, 84, 91, 98, 99, 102, 103, 104
त	वह	पु., नपुं.	1, 2, 3, 6, 7, 13, 15, 16, 17, 22, 26, 27, 29, 32, 36, 38, 40, 45,46,

			47, 48, 50, 52, 53, 54, 55, 57, 59, 60, 62, 63, 64, 65, 66, 68, 70, 77, 78, 82, 83, 84, 86,90, 94, 95, 96, 98,99,102, 103, 104, 107
ता	वह	स्त्री.	30, 31
सव्व	सर्व	पु., नपुं.	4, 36
	सब		9, 22, 48, 51, 79, 92, 93
	समस्त		105, 106

अनियमित सर्वनाम

मया 3/1	मेरे द्वारा	70
तदुभय 1/1	वह दोनों	23

अव्यय-कोश

अव्यय	अर्थ	गा.सं.
अण	नहीं	22
अणेगविधं	अनेक प्रकार से	32
	'द्वितीयार्थक' अव्यय	
अण्णहा	विभाव रूप में	61
	अन्य प्रकार	97
अत्थादो	वस्तुतः	16
अत्थि	अस्ति	23
अध	अब	25, 90
	इसी भाँति	101
अवि	भी	93
आगमदो	आगमपूर्वक	6
इति	ही	2, 3, 17, 23, 49
	इस प्रकार	12, 15, 27, 32, 34, 84, 91, 96, 98
	निश्चय ही	16, 18, 42
	क्योंकि	24
	पादपूरक	28, 43, 69,89
	इसलिए	30
	अतः	30
इदाणिं	इस संसार में	94

इदि	ऐसा	14
	ही	23
	इस प्रकार	99
इह	इस लोक में	5, 18
उत्तरं	ऊपर	72
एव	ही	12, 68, 84
	भी	15
एवं	इस प्रकार	21, 100, 102, 107
	अतः	91
कदाई	कभी	94
कधं	कैसे	14, 21
कम्मं	कर्म से	81
	'द्वितीयार्थक' अव्यय	
कहं	कैसे	13, 20
किं	क्या	20
किध	कैसे	81
किह	कैसे	59
कोइ	कोई	18, 24, 27, 28
खलु	निश्चय ही	1, 5, 15, 17, 26
	निस्सन्देह	10
खु	निश्चय ही	10
गाढ	अत्यन्त	76
गुणदो	गुण से	12

च	और	3, 33, 34, 38, 48, 68, 72
	तथा	49
चेव	ही	10
जदा	जब	95
जदि	यदि	13, 24, 34, 50, 57, 64, 73
जध	जैसे	45
जधा	जैसे	82
जाव	जबतक	58, 72
जहाजोगं	विधि अनुसार	86
ण	नहीं	6, 8, 13, 14, 16, 20, 21, 26, 30, 52, 58, 59, 62, 64, 67, 70, 77, 89, 92, 98, 99, 101
	न	27, 68, 70, 93, 99
ण णत्थि	सदा	24
णत्थि	नहीं है	8, 18, 24, 28, 43
	नास्ति	23
णमो	नमस्कार	107
णवि	नहीं	91
णाणा	अनेक	27
णिच्छयदो	निश्चयपूर्वक	87

णियदं	आवश्यकरूप से	9
णेव	न ही	11, 27, 68, 93
	नहीं	16, 34
तं	इसलिए	47, 62
तं पि	तो भी	11
तच्चदो	यथार्थरूप से	6, 52
तदो	उससे	47
	उसके बाद	49
तध	इस तरह	6
	वैसे	45
	पादपूरक	64
तधा	इसी प्रकार	54
तम्हा	इसलिये	9, 10, 12, 13, 18, 29, 33, 70, 108
	इस कारण	30
तम्हा दु	इस कारण ही	28
तह	इसी प्रकार	54
	और	82, 108
तहेव	उसी प्रकार	65
तिधा	तीन प्रकार का	31
तिहा	तीन प्रकार से	62
तु	ही	29
	और	52

दु	ही	23, 36
	निश्चय ही	30
	और	41, 98
	तो	46
	किन्तु	92
पच्चक्खं	प्रत्यक्ष रूप से	105
	'द्वितीयार्थक' अव्यय	
पडुच्च	अवलम्बन करके	44
पुण	तो भी	12
	चूँकि	18, 30
	और	28, 31, 44
	फिर	31, 35
पुणो	फिर	1, 13, 78, 83
	किन्तु	20
	और	23, 41, 43, 69
	क्योंकि	22
	चूँकि	84
पुणो पुणो	बार-बार	58
पुव्वं	विगत काल में	55
पोग्गलं	पुद्गल	81
	'द्वितीयार्थक' अव्यय	
य	और	8, 11, 12, 15, 22, 23, 40, 43, 49, 54, 69, 71,76, 79, 82, 90, 107

रागं	राग से	85
	'द्वितीयार्थक' अव्यय	
व	तथा	18
	पादपूर्ति	21
	और	32, 37, 88
	अथवा	49, 73
वा	और	8, 31, 75, 101
	अथवा	13, 20, 25, 32, 63, 64, 70, 71, 73, 83, 101
	पादपूरक	18
	या	21
	तथा	21, 23, 74
	पुनरावृत्ति भाषा की पद्धति	71, 73
वि	भी	8, 23, 63, 90
	और	16
	ही	50, 78
विणा	बिना	8, 18
सं	निस्संदेह	94
सदा	सदैव	19
समंत (समंता)	पूरी तरह से	106
समदो	समान रूप से	73
सयं	स्वयं	12, 13, 18, 30, 71
सव्वदो	सब ओर से	76

सह	से युक्त	4
से	वाक्यालंकार	42
हि	किन्तु/परन्तु	1, 77
	निश्चय ही	4, 6, 14, 24, 27, 49, 55, 57, 64, 69, 70, 83, 86, 92
	ही	7, 16, 42, 51, 60, 73, 93
	चूँकि	9, 26

परिशिष्ट–2

छंद[1]

छंद के दो भेद माने गए है-

1. मात्रिक छंद 2. वर्णिक छंद

1. मात्रिक छंद– मात्राओं की संख्या पर आधारित छंदो को 'मात्रिक छंद' कहते हैं। इनमें छंद के प्रत्येक चरण की मात्राएँ निर्धारित रहती हैं। किसी वर्ण के उच्चारण में लगनेवाले समय के आधार पर दो प्रकार की मात्राएँ मानी गई हैं- ह्रस्व और दीर्घ। ह्रस्व (लघु) वर्ण की एक मात्रा और दीर्घ (गुरु) वर्ण की दो मात्राएँ गिनी जाती हैं-

लघु (ल) (।) (ह्रस्व)

गुरु (ग) (ऽ) (दीर्घ)

(1) संयुक्त वर्णों से पूर्व का वर्ण यदि लघु है तो वह दीर्घ/गुरु माना जाता है। जैसे- 'मुच्छिय' में 'च्छि' से पूर्व का 'मु' वर्ण गुरु माना जायेगा।

(2)जो वर्ण दीर्घस्वर से संयुक्त होगा वह दीर्घ/गुरु माना जायेगा। जैसे- रामे। यहाँ शब्द में 'रा'और 'मे' दीर्घ वर्ण है।

(3) अनुस्वार-युक्त ह्रस्व वर्ण भी दीर्घ/गुरु माने जाते हैं। जैसे- 'वंदिऊण' में 'व' ह्रस्व वर्ण है किन्तु इस पर अनुस्वार होने से यह गुरु (ऽ) माना जायेगा।

(4) चरण के अन्तवाला ह्रस्व वर्ण भी यदि आवश्यक हो तो दीर्घ/गुरु मान लिया जाता है और यदि गुरु मानने की आवश्यकता न हो तो वह ह्रस्व या गुरु जैसा भी हो बना रहेगा।

---

1. देखें, अपभ्रंश अभ्यास सौरभ (छंद एवं अलंकार)

2. वर्णिक छंद– जिस प्रकार मात्रिक छंदों में मात्राओं की गिनती होती है उसी प्रकार वर्णिक छंदों में वर्णों की गणना की जाती है। वर्णों की गणना के लिए गणों का विधान महत्त्वपूर्ण है। प्रत्येक गण तीन मात्राओं का समूह होता है। गण आठ हैं जिन्हें नीचे मात्राओं सहित दर्शाया गया है-

यगण - ।ऽऽ

मगण - ऽऽऽ

तगण - ऽऽ।

रगण - ऽ।ऽ

जगण - ।ऽ।

भगण - ऽ।ऽ

नगण - ।।।

सगण - ।।ऽ

प्रवचनसार में मुख्यतया **गाहा छंद** का ही प्रयोग किया गया है। इसलिए यहाँ **गाहा छंद** के लक्षण और उदाहरण दिये जा रहे हैं।

लक्षण–

गाहा छंद के प्रथम और तृतीय पाद में 12 मात्राएँ, द्वितीय पाद में 18 तथा चतुर्थ पाद में 15 मात्राएँ होती हैं।

उदाहरण–

ऽ ऽ । ऽ । ऽ ऽ   । । । । ऽ ऽ । ऽ । ऽ ऽ ऽ

दव्वं सहावसिद्धं   सदिति जिणा तच्चदो समक्खादा।

ऽ ऽ । । ऽ । । ऽ   ऽ । । ऽ ऽ । ॥ । । ऽ

सिद्धं तध आगमदो   णेच्छदि जो सो हि परसमओ।।

। । ऽ ।ऽ । ऽ ऽ   ऽ ऽ ऽ ऽ । ऽ । ॥ ऽ ऽ

सदवट्ठिदं सहावे   दव्वं दव्वस्स जो हि परिणामो।

ऽ ऽ । ऽ । ऽ ऽ   । । ऽ ॥ ऽ । ऽ ऽ ऽ

अत्थेसु सो सहावो   ठिदिसंभवणाससंबद्धो।।

ऽ ऽ । । । ऽ ऽ   ऽ ऽ ऽ ऽ । ऽ । ऽ ऽ ऽ

उप्पादठिदिभंगा   विज्जंते पज्जएसु पज्जाया।

ऽ ऽ । ऽ । । । ऽ   ऽ ऽ ऽ ऽ । । । ऽ ऽ

दव्वं हि संति णियदं   तम्हा दव्वं हवदि सव्वं।।

ऽ ऽ । ॥ । ऽ ऽ   ऽ ऽ ऽ ऽ । ऽ । । । ऽ ऽ

पाडुब्भवदि य अण्णो   पज्जाओ पज्जओ वयदि अण्णो।

ऽ ऽ । ऽ । ऽ ऽ ऽ । । ऽ ऽ । ऽ ऽ ऽ

दव्वस्स तं पि दव्वं णेव पणट्ठं ण उप्पण्णं।।

सहायक पुस्तकें एवं कोश

1.	प्रवचनसार	: प्रस्तावना व अंग्रेजी अनुवाद- डॉ. आदिनाथ नेमिनाथ उपाध्ये हिन्दी अनुवादक-हेमराज पाण्डेय (श्रीपरमश्रुत प्रभावक मण्डल, श्रीमद् राजचन्द्र आश्रम, अगास, चतुर्थ आवृत्ति, 1984)
2.	प्रवचनसार	: हिन्दी अनुवादक-पण्डित राजकिशोर जैन (श्री दिगम्बर जैन कुन्दकुन्द परमागम ट्रस्ट, इन्दौर एवं पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर)
3.	प्रवचनसार	: हिन्दी अनुवादक- श्री पण्डित परमेष्ठीदासजी न्यायतीर्थ (श्री दिगम्बर जैन स्वाध्याय मन्दिर ट्रस्ट, सोनगढ़ (सौराष्ट्र), 1964)
4.	पाइय-सद्द-महण्णवो	: पं. हरगोविन्ददास त्रिविक्रमचन्द्र सेठ (प्राकृत ग्रन्थ परिषद्, वाराणसी,1986)
5.	अपभ्रंश-हिन्दी कोश	: डॉ. नरेश कुमार (डी. के प्रिंटवर्ल्ड (प्रा.) लि., नई दिल्ली, 1999)
6.	संस्कृत-हिन्दी कोश	: वामन शिवराम आप्टे (कमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1996)

7.	हेमचन्द्र प्राकृत व्याकरण, भाग 1-2	: व्याख्याता श्री प्यारचन्द जी महाराज (श्री जैन दिवाकर-दिव्य ज्योति कार्यालय, मेवाड़ी बाजार, ब्यावर, 2006)
8.	प्राकृत भाषाओं का व्याकरण	: लेखक -डॉ. आर. पिशल हिन्दी अनुवादक - डॉ. हेमचन्द्र जोशी (बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, 1958)
9.	प्राकृत रचना सौरभ	: डॉ. कमलचन्द सोगाणी (अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जयपुर, 2003)
10.	प्राकृत अभ्यास सौरभ	: डॉ. कमलचन्द सोगाणी (अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जयपुर, 2004)
11.	प्रौढ प्राकृत रचना सौरभ, भाग-1	: डॉ. कमलचन्द सोगाणी (अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जयपुर, 1999)
12.	अपभ्रंश अभ्यास सौरभ (छंद एवं अलंकार)	: डॉ. कमलचन्द सोगाणी (अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जयपुर)
13.	प्राकृत- हिन्दी-व्याकरण (भाग-1, 2)	: लेखिका- श्रीमती शकुन्तला जैन संपादक- डॉ. कमलचन्द सोगाणी (अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जयपुर, 2012, 2013)
14.	प्राकृत-व्याकरण (संधि- समास- कारक-तद्धित- स्त्रीप्रत्यय-अव्यय)	: डॉ. कमलचन्द सोगाणी (अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जयपुर, 2008)